

mT; kÄ



lape vad&2021



राष्ट्रीय भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र, देहरादून

राष्ट्रीय भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र के विभिन्न अनुभाग



अंतिम संविधा अनुभाग



राष्ट्रीय जलविज्ञान परियोजना अनुभाग



डाटा अनुसंधान एवं वितरण अनुभाग



लेखा अनुभाग



तकनीकी अनुभाग



भौगोलिक मानचित्रण एवं मानचित्र प्रकाशक अनुभाग

खगोल विज्ञान मंत्रालय, नई दिल्ली

वर्ष 2021

संरक्षक

श्री श्याम वीर सिंह

निदेशक, राष्ट्रीय भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

सम्पादक मण्डल

श्री महिपाल सिंह

अधीक्षक सर्वेक्षक

श्री अरुण कुमार

अधिकारी सर्वेक्षक

श्री एस0 एस0 रावत

मानचित्रकार श्रेणी-1

श्रीमती सीमा सिंह

वरिष्ठ रिप्रोग्राफर

श्री प्रतीक्ष्य तिवारी

सर्वेक्षक

संपादक मंडल का लेखकों के विचार से सहमत होना अनिवार्य नहीं है क्योंकि रचनाओं में व्यक्त किये गये विचार लेखकों के निजी विचार हैं।

नवीन तोमर
Naveen Tomar

भारत के महासर्वेक्षक
Surveyor General of India



भारतीय सर्वेक्षण विभाग
महासर्वेक्षक का कार्यालय
हाथीबड़कला एस्टेट, पोस्ट बॉक्स नं० 37
देहरादून-248001, (उत्तराखण्ड), भारत
SURVEY OF INDIA
Surveyor General's Office
Hathibarkala Estate, Post Box No. 37
Dehradun -248001, (Uttarakhand), India



संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता एवं हर्ष की अनुभूति हो रही है कि राष्ट्रीय भू-स्थानिक आँकड़ा केन्द्र देहरादून अपने कार्यालय की हिन्दी पत्रिका "उज्याऊ" के पंचम अंक का प्रकाशन करने जा रहा है।

हिन्दी भाषा भावनात्मक अभिव्यक्ति का सुदृढ़ मंच है। राजभाषा अपनी सरलता एवं उच्चारण की स्पष्टता को समेटे कला, विद्या, विभिन्न संस्कृतियों एवं सम्प्रदायों को जोड़ने हेतु सेतु भाषा है। राजभाषा के प्रचार-प्रसार में गृहपत्रिकाओं की महति भूमिका होती है। पत्रिका के माध्यम से ही कार्यालयों में कार्यरत अधिकारियों व कर्मचारियों को अपनी रचनात्मक क्षमता को प्रदर्शित करने का मंच प्राप्त होता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि पूर्व की भाँति ही "उज्याऊ" के इस अंक में भी सम्मिलित लेख कविताएँ, एवं रचनाएं अत्यंत रोचक एवं ज्ञानवर्धक होंगी व राजभाषा के प्रचार-प्रसार में अग्रणी भूमिका निभायेंगी।

मैं "उज्याऊ" के प्रकाशन में सहयोगी समस्त अधिकारी, कर्मचारी एवं संपादक मंडल को हार्दिक बधाई देता हूँ। पत्रिका के अनवरत प्रकाशन हेतु मेरी शुभकामनाएं।

(नवीन तोमर)

भारत के महासर्वेक्षक



राष्ट्रीय भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र
NATIONAL GEO-SPATIAL DATA CENTRE
ब्लॉक 6, हाथीबड़कला इस्टेट, पत्र पेटी सं. 200
Block 6, Hathibarkala Estate, Post Box No. 200 Dehra Dun- 248001 (Uttarakhand)

L&S k



मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि रा0भू0स्था0 आंकड़ा केन्द्र देहरादून हिंदी पत्रिका उज्याऊ के पंचम अंक का प्रकाशन कर रहा है।

सांस्कृतिक विविधता में धनी हमारा देश विभिन्न जाति, धर्म, सभ्यताओं, और परम्पराओं को समाहित किये है। अनेकता में एकता की डोर पिरने का कार्य राजभाषा हिन्दी अनवरत करती आई है। हिन्दी पत्रिका उज्याऊ राजभाषा के प्रचार-प्रसार हेतु एक मंच तो प्रदान करती ही है साथ ही साथ रा0भू0 स्थानिक आंकड़ा केन्द्र, देहरादून के अधिकारियों व कर्मचारियों को अपनी रचनात्मक व भावात्मक अभिव्यक्ति की क्षमता को दर्शाने का भी उचित माध्यम है। पिछले वर्ष से कोविड महामारी के इस भीषण दौर में प्रत्येक व्यक्ति भयावह जीवन जीने को मजबूर हुआ परंतु ऐसी विकट परिस्थिति में भी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अपनी क्रियाशीलता व रचनाशीलता को दर्शाया है।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में हमारे अधिकारी व कर्मचारी बढ़-चढ़ कर सहयोग करते हैं जिसके लिए साधुवाद। राजभाषा हिन्दी को आत्मसात कर हमें अपने दैनिक कार्यकलापों को दृढ़ निश्चय, लगन और उत्साह से करने की अभी और आवश्यकता है, जिससे हिन्दी भाषा का प्रचार व प्रसार और बढ़े।

राजभाषा के प्रति मेरा व्यक्तिगत प्रेम रहा है। पत्रिका के अनवरत प्रकाशन में मेरा सदा ही सहयोग रहेगा।

मैं पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों कर्मचारियों रचनाकारों और सम्पादक मंडल को हार्दिक बधाई देता हूँ। पत्रिका ज्ञानवर्धक रोचक और मनोरंजन हो, इसके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।


; keohj fl g
(निदेशक)

I Eikndh;



रा० भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र देहरादून की पत्रिका 'उज्याऊ' के पंचम अंक अपने सुधी पाठकों के हाथों में सौंपते हुये मुझे पुनः अत्यंत हर्ष और गौरव की अनुभूति हो रही है। मनवीणा के तार झंकृत हो हर्षित ध्वनि का उद्घोष कर रहे हैं।

राजभाषा हिन्दी अपनी सरलता के लिए सांस्कृतिक विरासत की वाहिका है। अपनी सरलता के कारण ही यह जन-जन के जीवन मूल्यों को सेतुबद्ध करती अभिव्यक्ति की आजादी प्रदान करती है। सृजकों ने अपने सशक्त विचारों और मनोभावों को कलमबद्ध करते हुए हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं यथा कविता, कहानी, यात्रा वृत्त, मनोरंजक व ज्ञानवर्धक लेखों से पूर्व की भाँति ही पंचम- अंक को भी सजाया गया है। जिसके लिए सभी बधाई के पात्र हैं मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि 'उज्याऊ' के पंचम अंक भी राजभाषा के प्रचार-प्रसार, हिन्दी के अधिक प्रयोग के लिए जन-जन को प्रोत्सहित करने के मूल उद्देश्य में पुनः सफलता प्राप्त करेगा, राजभाषा हिन्दी को अपने जीवन में आत्म सात करना, उसके गौरव में उत्तरोत्तर वृद्धि करना और उसके प्रति अपना सम्मान प्रकट करना ही पत्रिका को मूर्तरूप देने का मुख्य उद्देश्य भी है।

रा० भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र के निदेशक व पत्रिका के संरक्षक श्री श्याम वीर सिंह जी की मैं विशेष आभारी हूँ। आपका राजभाषा के प्रति अगाढ प्रेम एवं इच्छा शक्ति एवं प्रेरणा पत्रिका के प्रकाशन को निष्कन्टक बनाती है। सम्पादक मंडल के वरिष्ठ अधिकारी श्री महिपाल सिंह, अधीक्षक सर्वेक्षक, श्री अरुण कुमार, अधिकारी सर्वेक्षक और अपने सहकर्मी श्री एस० एस० रावत, मानचित्रकार, श्रेणी-1 व प्रतीक्ष्य तिवारी, सर्वेक्षक का भी धन्यवाद जिन्होंने, पत्रिका के प्रकाशन हेतु निरंतर अपनी विवेकपूर्ण सलाह से मार्गदर्शन किया।

उत्साह और लगन के साथ, जीवन के आपाधापी भरे पलों में भी अपनी रचनाशीलता को प्रदर्शित करते हुए यथासंभव रचनाओं से इस अंक को सजाने वाले समस्त रचनाकारों का पुनः विशेष आभार व धन्यवाद।

हम अपने सभी सुधी पाठकों से आशा करते हैं कि सदा की भाँति अपने-अपने विचारों व सुझावों से हमें प्रोत्साहित करेंगे जो भविष्य में पत्रिका को अत्याधिक रोचक व ज्ञानवर्धक बनाने में सहायक सिद्ध होंगे।

सीमा सिंह,
वरिष्ठ रिप्रोग्राफर
सम्पादक

Øe 0	Yks[k@dforK	Yks[kd	पृष्ठ 0
1.	बोनसाई	विवेक कुमार गुप्ता, अधिकारी सर्वेक्षक	6
2.	इंसानियत (कविता)	विजयदत्त कोठियाल डिजीटाईजर	9
3.	कोरोना	आई.एस.पुण्डीर, मानचित्रकार श्रेणी-1	10
4.	सुरेखा यादव : लोको पायलट	उपदेश कुमारी, सर्वेक्षक	11
5.	अंतिम निर्णय	सीमा सिंह, वरिष्ठ रिप्रोग्राफर	12
6.	एक सवाल	कु0 रूहिका, पुत्री वेद प्रकाश	16
7.	जाग जाओ (कविता)	पुष्पा, डिजीटाईजर	16
8.	एक पागल भिखारी	हर्ष प्रिय उनियाल, सहायक भंडार अधिकारी	17
9.	लॉकडाउन	कु0 मनीषा राणा, पुत्री भूपेन्द्र सिंह	19
10.	कामकाजी नारी की व्यथा	ममता तोमर, वरिष्ठ रिप्रोग्राफर	21
11.	कोरोना काल में मानसिक एवं व्यक्तित्व बदलाव की आवश्यकता	आत्रेय ज्ञान, सर्वेक्षक	23
12.	पांच तत्वों से सीखें खुश रहना	अरविंद सिंह बिष्ट, सर्वेक्षक	25
13.	प्रकृति का पैगाम	अनुप्रिया, डिजीटाईजर	26
14.	चिन्तन	भूपेन्द्र सिंह, सर्वेक्षण सहायक	27
15.	नारी ईश्वर का चमत्कार	पूजा तोमर डिजीटाईजर	28
16.	नई शिक्षा नीति	सतेन्द्र सिंह रावत, मा.का. श्रेणी-1	29
17.	उत्तराखण्ड के पण्डित बन्धु	रमेश चंद्रा, डिजीटाईजर	31
18.	राजा भोज की कहानी	कु0 मनीषा राणा, पुत्री भूपेन्द्र सिंह	33
19.	पुस्तक ज्ञान ही नहीं मनुष्य की सच्ची मित्र है	विजय कुमार सिंह (एम0टी0एस0)	34
20.	कोरोना काल में महाकुंभ	अरुण कुमार सैनी, अधिकारी सर्वेक्षक	35
21.	यात्रा संस्मरण तुंगनाथ तथा देवरिया ताल	विजय सिंह भंडारी, कम्प्यूटर टाईपिस्ट	36
22.	कलयुग का आरम्भ	भूपेन्द्र सिंह, सर्वेक्षण सहायक	40
23.	हिन्दी भाषा महान	अन्नू सिंह, डिजीटाईजर	43
24.	देहरादून-मेरी नजर से	आत्रेय ज्ञान, सर्वेक्षक	44
25.	कौन हो तुम	अशोक सिंह, पति सीमा सिंह	49
26.	महिला सशक्तीकरण	आरती रोहिला, एम0टी0एस0	50
27.	दो पतवारवाली नाव	अन्नू सिंह, डिजीटाईजर	51
28.	मुझे सब्र है	रोनिका सिंह फोगाट, एम0टी0एस0	52
29.	भारत का संविधान कुछ जानकरियाँ	अरुण कुमार तेश्वर, वरिष्ठ रिप्रोग्राफर	53
30.	अस्तित्वहीन नहीं मैं	सीमा सिंह, वरिष्ठ रिप्रोग्राफर	54
31.	मेरा गाँव	जसवीर सिंह, एम0टी0एस0	56
32.	वो भी क्या दिन थे	जसवीर सिंह, एम0टी0एस0	56
33.	स्वतंत्रता दिवस	सीमा सिंह, वरिष्ठ रिप्रोग्राफर	57
34.	अनुभव कहता है	अरुण कुमार सैनी, अधिकारी सर्वेक्षक	58
35.	धैर्य	रोनिका सिंह फोगाट, एम0टी0एस0	58
36.	एक प्रेरक पत्र	अरुण कुमार सैनी, अधिकारी सर्वेक्षक	59
37.	मोबाइल (Mobile)	आशीष राणा, पुत्र भूपेन्द्र सिंह	60
38.	जीवन के अनमोल विचार	गोविंद, एम0टी0एस0	62

बोनसाई

बोनसाई एक जापानी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है बौने पौधे। यह बड़े तथा विशालकाय वृक्षों को लघु आकार के पौधों में बदलकर आकर्षक रूप प्रदान करने की एक जापानी कला या तकनीक है। बोनसाई शब्द मूलतः चीनी शब्द पेन्जाई का जापानी उच्चारण है। बोन उस पात्र को कहते हैं जिसमें ये पौधे प्रायः उगाये जाते हैं यह ट्रे के आकार का होता है। बोनसाई बनाने की शुरुआत चीन से हुई। आजकल बोनसाई का पारम्परिक उपयोग के अलावा सजाने के उद्देश्य के लिए किया जाता है। बोनसाई को गमले में इस प्रकार उगाया जाता है कि उसका प्राकृतिक रूप ज्यों का त्यों बना रहता है लेकिन वे आकार में बौने रहते हैं। इन्हें घर के अन्दर व बाहर कहीं पर भी रखा जा सकता है। बोनसाई बनाने का शौक हमारे परिवार का पीढ़ी दर पीढ़ी मन बहला सकता है। नियमित रूप से ठीक-ठाक देखभाल किये जाने पर एक बोनसाई वृक्ष 100 से 125 वर्ष तक जीवित रह सकता है। बोनसाई बनाने की प्रक्रिया पूरी होने में बहुत ही समय लगता है। पीपल, पाकर, बरगद, अंजीर, गूलर, नीम, बांस, चीड़, देवदार, फाइकस, जेड प्लान्ट आदि के अच्छे बोनसाई बनाये जा सकते हैं।



विवेक कुमार गुप्ता
अधिकारी सर्वेक्षक

बोनसाई पेड़ों की प्रमुख शैलियां :-

सीधे वृक्ष :- इसमें तने सीधे उपर की ओर बढ़ते हैं। यह बोनसाई का सबसे सामान्य रूप है। इस प्रकार के बोनसाई में मुख्य तना नीचे से मोटा एवं पेड़ की ऊचाई के साथ-साथ पतला होता जाता है।

दो तने वाले वृक्ष :- इस विधि में मिट्टी की सतह से ही प्रतिवृक्ष दो तने बढ़ने दिये जाते हैं। दोनों तनों की ऊचाई अलग-अलग रखी जाती है।

अनेक तने वाले वृक्ष :- एक जड़ से 6 या अधिक तने उपर सीधे बढ़ने दिये जाते हैं।

ब्रूम :- इस विधि में पेड़ सीधा और मुख्य तने के उपरी हिस्से में बहुत सारी शाखाओं में बंट जाता है। शाखाएं सभी दिशाओं में फैल जाती हैं। सभी शाखाएं और पत्तियां मुख्य तने के उपर एक पंखे या Crown जैसा रूप बनाती है।

कैस्केड (Cascade) :- इस विधि में एक लम्बा गमला लेते हैं और पेड़ को थोड़ा सीधा बढ़ने के बाद तार की सहायता से नीचे की तरफ झुका दिया जाता है। मुख्य तने को लगभग S आकार में रखते हैं। पेड़ के संतुलन के लिए शाखाओं को एकान्तर क्रम में विकसित करते हैं।

विंड स्वेप्ट (Wind Swept) :- यह शैली पेड़ के बढ़ने के उसके हवा के साथ संघर्ष को दर्शाती है जहां हवा एक ही दिशा में बहुत तेज बहती है और आंधी आया करती है। वहां पेड़ों की शाखाएं एक ही दिशा में बढ़ती हैं एवं विकसित होती हैं। इस शैली में धातु के तार की सहायता से हर तरफ बढ़ने वाली शाखाओं को एक ही दिशा में बढ़ाते हैं।

चट्टानी बोनसाई :- इस शैली में पेड़ों की जड़ों को पत्थर के उपर विकसित करते हैं। जैसे कि सामान्य रूप से चट्टानी पहाड़ों में पेड़ दिखते हैं। इसके लिए गमले की मिट्टी की सतह

पर पुराने पत्थर अथवा चट्टान के टुकड़े रख दिये जाते हैं ताकि उनपर वृक्ष की जड़ें फैल जाये।



सीधे वृक्ष

ब्रूम

कैस्कैड

विंड स्वेप्ट

चट्टानी बोनसाई

वृक्षों का चयन:- बोनसाई बनाने से पूर्व सर्वप्रथम जलवायु के अनुकूल उचित प्रजाति का पेड़ चुनना है।

गमला तैयार करना :- बोनसाई का गमला मजबूत व सुन्दर होना चाहिए और ध्यान रखना है कि बहुत गहरा न हो। गमले की तली में छोटे-छोटे छेद होने चाहिए जिससे कि अतिरिक्त पानी बाहर निकल सके और जड़ों को पर्याप्त हवा मिले। गमले में एक या दो तह गमले के टूटे टुकड़ों को बिछा दें। अब गमले को तैयार खाद/मिट्टी से 75% भर दें। अतिरिक्त पानी मिट्टी/गमले में ठहरने से बोनसाई की जड़े सड़ सकती है।

कटाई छंटाई (Pruning) :-

वही बोनसाई सफल माना जाता है जिसकी आकृति मूल वृक्ष के जैसी हो। अतः बोनसाई बनाने से पहले एक पूर्ण विकसित वृक्ष को ध्यानपूर्वक देखना आवश्यक होता है तदुपरान्त काट छांट कर बोनसाई को मूल वृक्ष की तरह आकार देना होता है।

प्रत्येक बोनसाई का एक सामने का भाग होता है जहां से उसे देखने पर यह मूल वृक्ष की तरह दिखता है। कटाई छंटाई के वक्त इसका अवश्य ध्यान रखना है कि सामने की ओर कौन सा भाग रखना है। सामने की ओर कोई भी टहनी दर्शक की ओर नहीं आनी चाहिए ताकि पूरा बोनसाई दिखे। पीछे की तरह की शाखाएं सही अनुपात में निकली होनी चाहिए ताकि बोनसाई असली वृक्ष की तरह दिखे।

बोनसाई का पुनरोपण (Replanting) :-

पौधे को पुराने गमले से तने को बिना नुकसान पहुंचाये सावधानी पूर्वक मिट्टी से अलग करना है एवं पानी से भरी बाल्टी में रखकर जड़ों से लगी मिट्टी को हटाना है। तने के ठीक नीचे जड़ों का गुच्छा मिलता है। गमले के व्यास को ध्यान में रखते हुए गुच्छे के बाहर की जड़ों को कैंची द्वारा काट देना है। बड़ी मोटी जड़ों और गमले की सतह की ओर जाती हुई जड़ों को काटना है एवं पतली नाजुक जड़ों के गुच्छे को उपरी सतह में रखना है। पेड़ जड़ों के उपरी छोर से पानी खींचता है अतः छोटे गमले में एक मोटी गहरी जड़ की बजाय जड़ों का गुच्छा बेहतर रहता है।

पौधे को उपरोक्त तैयार गमले में रखते समय ध्यान रखना है कि गमले के किनारे से लगभग 1-2 इंच मिट्टी जड़ों से मुक्त रहें। पौधे को गमले में रखने के बाद जड़ों को चारों ओर से मिट्टी फैलाकर अच्छे से दबा देना है। एवं मिट्टी के उपर बजरी-कंकरी फैला देना

है जिसमें कि बोनसाई सुन्दर दिखता है और एक जगह पर दृढ़ता से खड़ा रहता है। पौधे को खादयुक्त पानी नियमित अन्तराल पर देते रहना है एवं ऐसी जगह पर रखना चाहिए जहां पर्याप्त धूप मिल सके।

बोनसाई को आकार देना :-

कुछ दिनों बाद जब पौधा गमले की मिट्टी से पकड़ बनालें तब उसकी टहनियों पर धातु का तार लपेटकर किसी भी शैली के अनुसार असली वृक्ष के जैसी आकृति दे सकते हैं। 2-3 माह बाद इन तारों को वापस निकाल लेते है और देखते है कि बोनसाई ने अपना आकार ले लिया है।

बोनसाई छोटे एवं आकर्षक दिखते हैं इससे घर की सुन्दरता बढ़ती है। कम जगह वाले घर में भी बोनसाई रखकर बड़े वृक्ष की अनुभूति की जा सकती है। बोनसाई पेड़ों की नर्सरी लगाकर इसका व्यापार भी शुरू किया जा सकता है।



किसी दूसरी भाषा को जानना सम्मान की बात है लेकिन दूसरी भाषा को अपनी राष्ट्रभाषा के बराबर दर्जा देना शर्म की बात – महादेवी वर्मा

किसी भी देश की स्वाधीनता स्थिर रखने के लिए उस देश की अपनी भाषा का होना परम आवश्यक है—
महादेवी वर्मा

“इंसानियत” (कविता)

इंसानी दुनिया का दस्तूर भी अजीबो-गरीब है दोस्तों,
यहां तो अमीरी से रिश्ते बनाये जाते हैं।
और गरीबी से रिश्ते छिपाये जाते हैं,
इस दुनिया में अब ऐसे ही इंसानियत निभाई जाती है।

दुसरो को हसाने के लिए नहीं, रूलाने के लिए मेहनत की जाती है,
अपनी जीत के लिए नहीं, दूसरों की हार के लिए मेहनत की जाती है।

यहां तो लोग जुदा हैं अपने ही वजूद से,
क्योंकि यहाँ लोग अपने आप से ज्यादा दूसरो में व्यस्त रहा करते हैं।

इस दुनिया में अब इंसानियत शर्मिंदा हैं,
यहाँ तो अपनों को छोड़, गैरों से रिश्ते निभाए जाते हैं।
अपनापन और अपनों का प्यार मायने नहीं रखता यहाँ,
यहाँ तो बस पैसों से रूप और रोप दिखाए जाते हैं।

भावनाओं का कोई मोल नहीं है आजकल यहाँ
यहाँ तो बस रूप रंग से रिश्ते बनाए जाते हैं।
यहाँ तो बस शर्तों पर रिश्ते बनाये जाते हैं,
रिश्तों का एहसास कहीं गुम सा हो गया है यहाँ।

प्यार शब्द का वजूद कहीं दफन सा हो गया है यहाँ,
यहाँ तो बस रिश्ते मतलब से निभाए जाते हैं।
अपनो से नहीं पैसों से रिश्तेदारी निभाई जाती है,
पैसों के दम पर ही रिश्तेदारी बनाई जाती है।

एक बीमारी ने जग को बता दिया इंसानियत क्या है यहाँ,
यहाँ तो अपनों ने अपनों में इंसानियत को गुम होते पाया।
कुछ लोग पैसों से इंसानियत को खरीदने की कोशिश में लगे रहे,
और कुछ लोग इन्सानों को इंसानियत की याद दिलाने में लगे रहे।

इस दुनिया में अब इंसानियत ऐसे ही निभाई जाती है
इस दुनिया में अब इंसानियत ऐसे ही निभाई जाती है।



विजयदत्त कोटियाल
डिजीटलईजर

कोरोना

चहुँ ओर कालिमा है छाई
हे विधाता सबने ही गुहार लगाई
थाली पीटी, दिये जलाये
कुछ भी काम न आये

हाय कोरोना, तुमने कैसी हाहाकार मचाई,
स्कूल कालेज सब बन्द पड़े है।

मुश्किल बड़ी घड़ी है।

आनलाईन ने आफलाईन की हवा निकाली
अर्थव्यवस्था पंचर है घातक लहरे कोरोना की

जीवन निगल न जाये, मास्क लगाओ,
काढ़ा इम्युनिटी बूस्टर इस्तेमाल करो
सामाजिक दूरी से जीवन सुखी बनाए
संकल्प करे सब मिलकर कोरोना हावी ना होने पाये
साबुन से निरन्तर हाथ धोयें संक्रमण दूर भगायें।



आई.एस.पुण्डीर
मानचित्रकार श्रेणी-1

भीड़ हमेशा उस रास्ते पर चलती है जो रास्ता आसान लगता है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि भीड़ हमेशा सही रास्ते पर चलती है। अपने रास्ते खुद चुनिए क्योंकि आपको आपसे बेहतर और कोई नहीं जानता – रवींद्रनाथ टैगोर

जो कुछ हमारा है वो हम तक आता है, यदि हम उसे ग्रहण करने की क्षमता रखते हैं—
रवींद्रनाथ टैगोर

सुरेखा यादव : लोको पायलट

कहानी है महाराष्ट्र के सतारा जिले में 1965 में जन्मी सुरेखा यादव की। उनके पिता रामचन्द्र भोसले किसान थे। परिवार गरीब था तथा सुरेखा सभी भाई बहनों में सबसे बड़ी थी। उनकी आरंभिक शिक्षा सतारा में ही हुई थी। इसके बाद पिता ने उनका दाखिला इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा में करवा दिया। गांव के लोगों ने उसका मजाक भी उड़ाया कि खाने को पैसे नहीं और बेटी इंजीनियरिंग करेगी। गांव के ऐसे लोग बहुत कम जिन्होंने सुरेखा का प्रोत्साहन किया हो।



उपदेश कुमारी
सर्वेक्षक

सुरेखा का कहना था कि उसने तय किया कि वो इन सब बातों पर ध्यान नहीं देंगी और अपनी पढ़ाई अच्छे से पूरी करेंगी। वह शिक्षक बनने के लिए बी.एस.सी एव बी. एड. करना चाहती थी किन्तु रेलवे में नौकरी मिलने के मौके से वह अपना सपना पूरा नहीं कर पाई।

1988 में जब वह भारतीय रेलवे में आई तब उन्होंने पाया कि वह भारतीय रेलवे में काम करने वाली अकेली महिला है। वर्ष 1996 में कल्याण से बोरीबन्दर मालगाड़ी चलाकर पूरे एशिया में पहली महिला लोकोपायलट (रेल ड्राइवर) बन गई। और साथ ही इस मिथक को तोड़ दिया कि महिलाएं रेल नहीं चला सकती।

अप्रैल 2000 में, तत्कालीन रेलमंत्री ममता बैनर्जी द्वारा पहली बार चार महानगरीय शहरों में 'लेडीज स्पेशल लोकल ट्रेन' शुरू की गई। जिनके चालक दल में सुरेखा यादव भी शामिल थी।

2011 में, 8 मार्च अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर डेक्कन क्वीन रेलगाड़ी को पूणे से CST मुंबई तक ले जाने के लिए एशिया की पहली महिला ट्रेन ड्राइवर बन गई।

सुरेखा का कहना है कि दुनिया में ऐसा कोई काम नहीं है जो महिला या सिर्फ पुरुष ही कर सकते हैं। उनके मुताबिक पुरुषों और महिलाओं में लगभग एक ही क्षमता होती है, बस सोचना यह है कि वह क्या काम करना चाहता या चाहती है।

सुरेखा ने 1991 में, टेलीविजन धारावाहिक "हम किसी से कम नहीं" में भी काम किया है। उन्होंने काफी बार राष्ट्रीय टी.वी. चैनलों में साक्षात्कार भी दिये हैं।

सुरेखा जीवन में इस बात को काफी महत्व देती है कि महिलाओं के लिए कोई भी कार्य वर्जित नहीं है। उन्हें 2013 में भारतीय रेलवे पर पहली महिला लोको पायलट के लिए जीएम पुरस्कार व महिला प्राप्ति पुरस्कार (2001) समेत कई अन्य पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। उन्हें आर.डब्ल्यू.सी.सी द्वारा सर्वश्रेष्ठ महिला (2013) का पुरस्कार भी प्राप्त है। वर्तमान में सुरेखा यादव ड्राइवर्स ट्रेनिंग सेन्टर कल्याण महाराष्ट्र में ड्राइवर्स को ट्रेनिंग दे रही हैं। और उनके दो बेटे हैं जो कि मुंबई में ही इंजीनियरिंग के छात्र हैं।

“अंतिम निर्णय”



सीमा सिंह
वरिष्ठ रिप्रोग्राफर

अरे सलोनी सुन रही हो कि नहीं, सोफे का कवर और कुशन कवर बदला अब तक कि नहीं, पता नहीं ये कामवाली भी कहाँ रह गई आज, मैं तो पहले ही मना कर रही थी किसी को भी काम पर लगाने के लिए इसे कल ही बता दिया था कि आज सुबह—सुबह ही आ जाना, पर काम के दिन ही ये सब देर करती हैं। अभी सुबह के मात्र सात बज रहे थे, परंतु सुरेखा की दिन के लिए तैयारी युद्ध स्तर पर आरंभ थी। अरे कोई सुन भी रहा है मेरी बात कि नहीं कहते—कहते सुरेखा की बड़बड़ाहट चालू हो गई थी। आखिर उसके पति सोहन को बोलना ही पड़ा अरे क्यों हलकान हो रही है। सुबह से खुद तो परेशान हो ही, हमें भी परेशान कर रखा है। मैंने परेशान कर रखा है सुरेखा बड़बड़ाते हुए बोली अरे पता नहीं है या याद नहीं है आज सलोनी के ससुराल वाले आ रहे हैं रिश्ते की बात पक्की करने। हां, हां वो तो ठीक है सोहन ने जवाब दिया पर वो लोग तो दिन में 12 बजे तक आयेंगे। तुम सुबह से ही घर सिर पर मत उठाओ। अच्छा जरा मैं बाजार जा रहा हूँ मिठाई लाने के लिए कहकर सोहन घर से थैला लेकर बाहर निकल गया।

सलोनी अपने कमरे से ही माता—पिता का सारा वार्तालाप सुन रही थी पर अभी वो कुछ अलसाई हुई थी और अपने बिस्तर से उठने का भी उसका अभी मन नहीं था। लेटे—लेटे वो पुरानी यादों में खो गयी। सलोनी, सुरेखा व सोहन की इकलौती पुत्री थी जो एक बेहद मध्यवर्गीय परिवार से थी। सलोनी के पिता एक प्राइवेट कंपनी में क्लर्क की नौकरी करते थे और बेहद साधारण जिंदगी व्यतीत करने वाले इंसान थे उसकी माँ सुरेखा एक गृहिणी थी। बचपन से ही सलोनी को इस बात का आभास था कि पिता की अल्प आय सुरेखा व सलोनी की बहुत सी इच्छाओं को पूरी करने में सक्षम न थी परंतु सुरेखा ने इन कमियों का रोना कभी भी सोहन को नहीं रोया था और न ही कभी सलोनी ने उन अभावों को अपनी ताकत बनाने से कभी गुरेज किया अपितु उसने पूरी शिद्धत के साथ उन्हीं अल्प साधनों में स्वयं को पूरी मेहनत के साथ अपनी शिक्षा में झोंक दिया। अपनी अल्प आय में ही सलोनी ने प्रण कर लिया था कि वह अपनी पूरी लगन से शिक्षा व उच्च पद प्राप्त कर अपने माता—पिता की सम्पूर्ण इच्छाओं को पूर्ण करेगी, आखिर उसके माता—पिता भी अपना पूरा जीवन व पूरी कमाई सलोनी के उज्ज्वल भविष्य के लिए लगा रहे थे। दोनों ने एक बेटे की तरह उसकी परवरिश की थी। आय कम थी तो क्या सलोनी को शिक्षा व संस्कार प्रदान करने में उसके माता—पिता ने कभी कोई कमी नहीं आने दी थी और सलोनी के कठोर परिश्रम व प्रण का परिणाम भी रंगीन आया था। सलोनी और उसके माता—पिता की कठिन मेहनत का ही परिणाम था कि सलोनी ने पहली बार में ही नीट की परीक्षा उत्तीर्ण कर अब्बल रैंकिंग हासिल की थी। उस दिन माता—पिता का अश्रुपूर्ण गर्वित चेहरा देखने लायक था।

सात वर्ष की कठिन मेहनत के परिणाम स्वरूप सलोनी एक डॉक्टर का प्रतिष्ठित पद प्राप्त कर चुकी थी वो भी गोल्ड मैडलिस्ट। सोहन और सुरेखा तो जैसे गंगा नहा गये थे बेटे के सफल कैरियर में

प्रवेश करते ही वो गर्व से फूले नहीं समाते थे। प्रतिष्ठित पद प्राप्त करते ही सलोनी के लिए विवाह के लिए रिशतों के अंबार लगने लगे थे। सुरेखा और सोहन के कठिन समय में उनसे नजर चुराने वाले नाते रिश्तेदार भी अब उनके, यहाँ आकर समय-समय पर हाजिरी लगाने लगे थे और दर्जनों रिशतों के विषय में अपनापन दर्शाते हुए उन्हें बताने लगे थे। समय बदलते ही रिश्ते भी बदल जाते हैं, सलोनी कई बार उन रिश्तेदारों को कहना चाहती थी परंतु उसके संस्कार उसे मुँह खोलने की इजाजत नहीं देते थे। आखिर माता-पिता के सुसंस्कृत संस्कारों की प्रतिमा जो थी वो। सलोनी को सरकारी डॉक्टर के पद पर कार्यरत भी दो वर्ष हो चुके थे। बड़ी जिद कर माँ के लिए बर्तन व झाड़ू पोछे के लिए नौकरानी लगा पाई थी वो क्योंकि सुरेखा के पुराने विचार सलोनी की कमाई अपने ऊपर खर्च कराने के आड़े आते थे। वो बेटी की कमाई अपने ऊपर खर्च करवाना पाप समझती थी इसी कारण बेटी के कमाई के पैसों से नौकरानी नहीं लगाना चाहती थी परंतु इस मामले में सलोनी के आगे उनकी एक नहीं चली थी।

सलोनी के लिए निरंतर कई अच्छे-अच्छे रिश्ते आ रहे थे परंतु सलोनी अपने ही अस्पताल में कार्यरत अपने सहकर्मी डॉक्टर अंकित के प्रेम के पाश में कैद थी। दोनों ने साथ-साथ ही मेडिकल की शिक्षा प्राप्त की थी। अंकित के विचारों से सलोनी बहुत प्रभावित थी जबसे एक सेमिनार में उसने अंकित को वाद-विवाद करते सुना था। वह बोलने में वाकपटु था साथ ही अपने विषय को इतनी संवेदनशीलता से प्रकट कर रहा था कि प्रत्येक व्यक्ति मानो, उसकी बोलने की कला से सम्मोहित था। सलोनी भी सबसे इतर नहीं थी। वह सामाजिक मुद्दे चाहे ऊँच-नीच दहेज, जाति-पाति कुछ भी हो हर विषय पर रूढ़िवादिता को हटाने हेतु अपने प्रखर ज्ञान से सामने वाले को निरुत्तर कर देता था यद्यपि अंकित एक बहुत ही उच्चवर्गीय परिवार का इकलौता लड़का था तथापि उसका मन था जो सलोनी के लिए धड़कता था। वह उसकी सुंदरता व बुद्धिमता दोनों से बहुत प्रभावित था दोनों एक-दूसरे से विवाह करना चाहते थे। अतंतः सलोनी ने अपनी पसंद के विषय में माता-पिता को अवगत कराया। सलोनी के माता-पिता को इस रिश्ते से कोई आपत्ति न थी परंतु सोहन व सुरेखा अंकित कि हाई प्रोफाइल फैमिली को लेकर आंशकित थे। परंतु सलोनी ने उन्हें आश्वस्त किया कि अंकित एक आधुनिक व खुली सोच का लड़का है तथा ऊँच-नीच के भेद को नहीं मानना इसलिए आप उसे लेकर आंशकित न हों और इसी रिश्ते पर स्वीकृति की मोहर लगाने आज अंकित के माता-पिता आने वाले थे। अंकित ने दबे शब्दों में सलोनी के माता-पिता को रिश्ते के लिए घर पर न बुलाकर किसी होटल में बुलाने की राय दी पर सलोनी ने अंकित को आश्वस्त किया तुम घबराओ मत अंकित हम घर में ठीक प्रकार से उनकी आवभगत कर लेंगे। सुरेखा तो सुबह पांच बजे से ही उठकर विभिन्न प्रकार के पकवान बनाने की तैयारियों में लग गई थी। आँख का कोना कभी-कभी भीगे भी जा रहा था सुरेखा का बेटी की विदाई के क्षणों के विषय में सोचकर वह चुपचाप साड़ी के पल्ले से अपनी आँख पोछ रही थी क्योंकि कोई भी माता-पिता बेटी के विवाह हेतु कितना भी तैयार हो परंतु वह समय आते ही माता-पिता का हृदय बेटी के बिछोह की कल्पना से ही हिल जाता है और वही

हाल आज सुरेखा का था। बेटी के विवाह की कल्पना से ही उसका कलेजा मुँह को आ रहा था। पर वह प्रसन्न भी थी कि बेटी को एक अच्छा परिवार व जीवन साथी भी मिल रहा है।

दोपहर के 1:30 बज चुके थे। सलोनी माँ की मदद करने के पश्चात् अपने होने वाले सास-ससुर की आवभगत के लिए तैयार थी। गुलाबी रंग की साड़ी में वह बिल्कुल परी जैसी दिख रही थी। सुरेखा तो बार-बार उसकी बलाएं लेती नहीं थक रही थी। आखिर 2:30 बजे अंकित की चमचमाती बड़ी सी कार उनके दरवाजे पर आकर रूकी। सोहन व सुरेखा हाथ जोड़कर उनकी आगवानी को तत्पर थे। अंकित के माता-पिता की सम्पन्नता उनके हाव-भाव व परिधानों सब से टपक रही थी। सुरेखा व सोहन का घर करीने से सुसज्जित था परंतु अंकित के माता-पिता की निराशा उनकी आँखों से स्पष्ट झलक रही थी परंतु सलोनी उन्हें पंसद थी। आखिर हो भी क्यों न लाखों में एक थी सलोनी व गुणों की खान भी। बड़े चाव से सुरेखा द्वारा बनाये गये पकवानों में से दो कौर ही खा पाये थी अंकित के माता-पिता। सोहन व सुरेखा इस स्थिति से कुछ चिंतित थे और फिर वही हुआ जिसका दोनों को डर था।

खाने के पश्चात् अंकित के पिता ने बोलना शुरू किया देखिए बुरा न मानिए पर हम लोग यहाँ आना नहीं चाहते थे परंतु अंकित की पंसद के आगे हमें झुकना ही पड़ा। कितना छोटा घर है आपका बताइये अपने रिश्तेदारों को कैसे लाएं आपके घर और कैसे बताएं कि हमारे बेटे ने इतने छोटे घर से रिश्ता जोड़ा है। आज तो हम आपके घर आ गए पर हम नहीं चाहते कि शादी से संबधित कोई भी रस्म इस घर से हो। हमारे रिश्तेदारों की व हमारी बहुत बेइज्जती होगी यहाँ आने में। सुरेखा व सोहन यह सब सुनकर जैसे शर्म से गड़े जा रहे थे जबकि अंकित के पिता का कहना जारी था हम यह भी नहीं चाहते कि अंकित भी शादी के बाद यहाँ आना-जाना रखे आखिर उसका भी कुछ स्टैंडर्ड है। सलोनी को जैसे काठ सा मार गया था यह सब सुनकर। उसने सवालिया नजरों से अंकित की तरफ देखा परंतु वह नजर नीची किये चुपचाप बैठा था। अंकित, सलोनी ने उसे पुकारा मैं एक मिनट के लिए तुमसे बात करना चाहती हूँ। अंकित के माता-पिता दोनों आग्नेय दृष्टि से सलोनी को देख रहे थे पर सलोनी की नजरें अंकित पर जमी थी। हां-हां बोलो सलोनी बड़ी मुश्किल से अंकित के मुँह से निकला। सलोनी ने नजरे जमाये हुए बोला, अंकित जो तुम्हारे माता-पिता बोल रहे हैं तुम्हारा भी यही फैसला है ? अंकित भयभीत नजरों से माता-पिता को व कातर नजरों से सलोनी को देख रहा था व आँखों ही आँखों में बात को टालने का इशारा कर रहा था। परंतु सलोनी को जवाब की दरकार आज ही थी आखिर यह उसके भविष्य का फैसला था। अंकित की नजरे चुराने ने सलोनी को उसका जवाब दे दिया था। सलोनी खड़े होकर हाथ जोड़कर अंकित के माता-पिता को बोली आप जा सकते हैं अंकल आंटी मुझे यह रिश्ता मंजूर नहीं है। सोहन व सुरेखा ने उसे रोकना चाहा पर सलोनी बोली, नहीं पापा, माँ। आपके व अपने आत्मसम्मान की कीमत पर यह रिश्ता मुझे कतई मंजूर नहीं। अंकित के माता-पिता की कुपित नजरें अभी भी सलोनी पर थी। उसके पिता बोले जानती भी हो लड़की तुम किसके रिश्ते को टुकरा रही हो पर सलोनी उनकी बात काटकर बोली अंकल माना कि आप बहुत ऊँचे व सम्पन्न खानदान के हैं परंतु इसका मतलब यह बिल्कुल नहीं कि मेरे

माता-पिता की कोई इज्जत और वजूद नहीं है। उन्होंने तिल-तिल कर मेहनत करके मेरे जीवन को सफल दिशा प्रदान की है परंतु यदि आपको उनसे संबंध जोड़ने में शर्म आती है तो मैं भी इस रिश्ते में हरगिज नहीं बंध पाऊंगी, क्योंकि जितनी इज्जत मैं आपकी करूंगी उतनी ही इज्जत मैं भी चाहूंगी कि अंकित मेरे माता-पिता को दे और जब उसे विवाह के पश्चात् यहाँ आने तक की अनुमति नहीं और यदि वह इस बात के खिलाफ आपके सामने आवाज तक नहीं उठा सकता तो वो क्या ही इज्जत मेरे माता-पिता को दे पाएंगे। कृपया करके आप यहाँ से चले जाये मैं इस रिश्ते को नामंजूर करती हूँ।

अंकित के माता-पिता पैर पटकते हुए वहाँ से निकल गये। अंकित ने सलोनी को समझाने की कोशिश की कि फिलहाल तुम उनकी सब बातें मान लो बाद में उन्हें कुछ समझाने की कोशिश करूंगा। और यदि वो ना समझे ? सलोनी ने प्रश्न दागा परंतु अंकित के मुँह में जवाब न था। सलोनी बोली अंकित आज मैं किसी दूसरे ही अंकित को अपने सामने देख रही हूँ। क्या तुम वही हो जो मंच में माइक पर सामाजिक रूढ़िवादिताओं के खिलाफ खुलकर अपने स्वस्थ विचार रखते थे और आज जब जीवन में स्वयं पर परिस्थिति पड़ी तो तुम उस परेशानी से भागना चाहते हो। तुम में आज इतना भी बल नहीं कि अपने माता-पिता के गलत निर्णय के प्रति आवाज उठा पाओ। बहुत अच्छा हुआ जो अभी तुम्हारा यह रूप व विचार देखने को मिल गये। सुनो अंकित मैं अपने, व अपने माता-पिता के आत्मसम्मान की कीमत पर यह विवाह कभी नहीं करूंगी। यदि मेरा होने वाला पति जब मेरा व मेरे माता-पिता का साथ नहीं दे सकता उसे मेरा पति होने का भी कोई अधिकार नहीं। तुम भले ही अपने माता-पिता के अनुचित निर्णय के विपक्ष में आवाज न उठाओं, पर मैं इस विवाह के विषय में अपना अंतिम निर्णय जरूर सुनाना चाहूंगी और वह यह है मैं तुम्हें और इस रिश्ते को अस्वीकार करती हूँ। तुम जा सकते हो। अंकित हारे हुए जुआरी की तरह नजर नीची किए घर से जा रहा था।

रहिमन कुटिल कुठार ज्यों करि डारत द्वै टूक।

चतुरन को कसकत रहे समय चूक की हूक।।

अर्थ: कटु वचन कुल्हाड़ी की भांति होते हैं। जिस तरह कुल्हाड़ी लकड़ी को दो भाग में बांट देता है, ठीक उसी प्रकार कड़वे वचन व्यक्ति को आपसे दूर कर देते हैं। समझदार व्यक्ति संकट में भी कड़वे वचन नहीं बोलता, वह चुप रह जाता है और सभी जवाब समय पर छोड़ देता है।

एक सवाल

आओ, पूछें एक सवाल।
मेरे सिर में कितने बाल ?
कितने आसमान में तारे ?
बतलाओ या कह दो हारे।

नदियाँ क्यों बहती दिन-रात ?
चिड़ियाँ क्या करती हैं बात?
क्यों कुत्ता बिल्ली पर धाए?
बिल्ली क्यों चूहे को खाए?

फूल कहाँ से पाते रंग?
रहते क्यों न जीव सब संग?
बादल क्यों बरसाते पानी?
लड़के क्यों करते शैतानी?

नानी की क्यों सिकुड़ी खाल?
अजी, न ऐसा करो सवाल।
यह सब ईश्वर की माया है।
इसको कौन जान पाया है?



कु० रुहिका
(पुत्री वेद प्रकाश)

जाग जाओ (कविता)

मोह निद्रा में सोने वालों,
अब भी वक्त है जाग जाओ,
इससे पहले कि तुम्हारी
यह नींद राष्ट्र को ले डूबे
जाति-पाति में बँटकर देश का बन्ताधार करने वालों,
अपना हित चाहते हो तो अब भी एक हो जाओ,
भाषा के नाम पर लड़ने वालों,
हिन्दी को जग का सिरमौर बनाओ,
राष्ट्रहित में कुछ तो बलिदान करो तुम,
इससे पहले कि राष्ट्र फिर गुलाम बन जाए
आधुनिकता केवल पहनावे से नहीं होती है।
यह बात अब भी समझ जाओ तुम,
फिर कभी कहीं कोई भूखा ना सोए,
कोई ऐसी क्रांति ले आओ तुम,
भारत में हर कोई साक्षर हो,
देश को ऐसे पढ़ाओ तुम ।।
मोह निद्रा में सोने वालों
अब भी वक्त है जाग जाओ तुम।



पुष्पा
डिजीटलईजर

एक पागल भिखारी



हर्ष प्रिय उनियाल
सहायक भंडार अधिकारी

जब बुढ़ापे में अकेला ही रहना है तो औलाद क्यों पैदा करें उन्हें क्यों काबिल बनाएं जो हमें बुढ़ापे में दर-दर के ठोकरें खाने के लिए छोड़ दे। क्यों दुनिया मरती है औलाद के लिए, जरा सोचिए इस विषय पर। मराठी भाषा से हिन्दी ट्रांसलेशन की गई ये सच्ची कथा है। जीवन के प्रति एक नया दृष्टिकोण आपको प्राप्त होगा। समय निकालकर अवश्य पढ़ें। हमेशा की तरह मैं आज भी, परिसर के बाहर बैठे भिखारियों की मुफ्त स्वास्थ्य जाँच में व्यस्त था। स्वास्थ्य जाँच और फिर मुफ्त मिलने वाली दवाओं के लिए सभी भीड़ लगाए कतार में खड़े थे। अनायास सहज ही मेरा ध्यान गया एक बुजुर्ग की तरफ गया, जो करीब ही एक पत्थर पर बैठे हुए थे। सीधी नाक, घुँघराले बाल, निस्तेज आँखें, जिस्म पर सादे, लेकिन साफ सुथरे कपड़े। कुछ देर तक उन्हें देखने के बाद मुझे यकीन हो गया कि, वो भिखारी नहीं हैं। उनका दाँया पैर टखने के पास से कटा हुआ था, और करीब ही उनकी बैसाखी रखी थी।

फिर मैंने देखा कि, आते जाते लोग उन्हें भी कुछ दे रहे थे और वे लेकर रख लेते थे। मैंने सोचा ही अंदाज गलत था, वो बुजुर्ग भिखारी ही हैं। उत्सुकतावश मैं उनकी तरफ बढ़ा तो कुछ लोगों ने मुझे आवाज लगाई "उसके करीब ना जाएँ डॉक्टर साहब, वो बूढ़ा तो पागल है।" लेकिन मैं उन आवाजों को नजरअंदाज करता, मैं उनके पास गया। सोचा कि, जैसे दूसरों के सामने वे अपना हाथ फैला रहे थे, वैसे ही मेरे सामने भी हाथ करेंगे, लेकिन मेरा अंदाज फिर चूक गया। उन्होंने मेरे सामने हाथ नहीं फैलाया। मैं उनसे बोला "बाबा, आपको भी कोई शारीरिक परेशानी है क्या ?" मेरे पूछने पर वे अपनी बैसाखी के सहारे धीरे से उठते हुए बोले "Good afternoon doctor..... I think I may have some eye problem in my right eye" इतनी बढ़िया अंग्रेजी सुन मैं अवाक रह गया। फिर मैंने उनकी आँखें देखीं।

पका हुआ मोतियाबिंद था उनकी आँखों में। मैंने कहा "मोतियाबिंद है बाबा, ऑपरेशन करना होगा।"

बुजुर्ग बोले "Oh, cataract ? I had cataract operation in 2014 for my left eye in Ruby Hospital."

मैंने पूछा "बाबा, आप यहाँ क्या कर रहे हैं ?" बुजुर्ग "मैं तो यहाँ, रोज ही 2 घंटे भीख माँगता हूँ सर"। मैं "ठीक है, लेकिन क्यों बाबा ? मुझे तो लगता है, आप बहुत पढ़े लिखे हैं।" बुजुर्ग हँसे और हँसते हुए ही बोले "पढ़े लिखे ??"

मैंने कहा "आप मेरा मजाक उड़ा रहे हैं, बाबा।" बाबा "Oh no doc... Why would I ?... Sorry if I hurt you !"

मैं "हर्ट की बात नहीं है बाबा, लेकिन मेरी कुछ समझ में नहीं आ रहा है।" बुजुर्ग "समझकर भी, क्या करोगे डॉक्टर ?"

अच्छा "ओके, चलो हम, उधर बैठते हैं, वरना लोग तुम्हें भी पागल हो कहेंगे।" (और फिर बुजुर्ग हँसने लगे) करीब ही एक वीरान टपरी थी। हम दोनों वहीं जाकर बैठ गए। "Well Doctor, I am Mechanical Engineer...."--- बुजुर्ग ने अंग्रेजी में ही शुरुआत की "मैं, कंपनी में सीनियर मशीन ऑपरेटर था। एक नए ऑपरेटर को सिखाते हुए, मेरा पैर मशीन में फंस गया था, और ये बैसाखी हाथ में आ गई। कंपनी ने इलाज का सारा खर्चा किया, और बाद में कुछ रकम और सौंपी, और घर पर बैठा दिया। क्योंकि लंगड़े बैल को कौन काम पर रखता है सर ?" फिर मैंने उस पैसे से अपना ही एक छोटा सा वर्कशॉप डाला। अच्छा घर लिया। बेटा भी मैकेनिकल इंजीनियर है। वर्कशॉप को आगे बढ़ाकर उसने एक छोटी कम्पनी और डाली।"

मैं चकराया, बोला "बाबा, तो फिर आप यहाँ, इस हालत में कैसे ?"

बुजुर्ग "मैं? किस्मत का शिकार हूँ" बेटे ने अपना बिजनेस बढ़ाने के लिए, कम्पनी और घर दोनों बेच दिए। बेटे की तरक्की के लिए मैंने भी कुछ नहीं कहा। सब कुछ बेच बाचकर वो अपनी पत्नी और बच्चों के साथ जापान चला गया, और हम जापानी गुड्डे गुड्डिया यहाँ रह गए। "ऐसा कहकर बाबा हँसने लगे। हँसना भी इतना करुण हो सकता है, ये मैंने पहली बार अनुभव किया। फिर बोला "लेकिन बाबा, आपके पास तो इतना हुनर है कि जहाँ लात मारें वहाँ पानी निकाल दें।"

अपने कटे हुए पैर की ओर ताकते बुजुर्ग बोले "लात ? कहाँ और कैसे मारूँ, बताओ मुझे ?" बाबा की बात सुन मैं खुद भी शर्मिंदा हो गया। मुझे खुद बहुत बुरा लगा। प्रत्यक्षतः मैं बोला "आई मीन बाबा, आज भी आपको कोई भी नौकरी दे देगा, क्योंकि अपने क्षेत्र में आपको इतने सालों का अनुभव जो है। बुजुर्ग "Yes doctor, और इसी वजह से मैं एक वर्कशॉप में काम करता हूँ। 8000 रुपए तनख्वाह मिलती है मुझे।" मेरी तो कुछ समझ ही नहीं आ रहा था। मैं बोला "तो फिर आप यहाँ कैसे ?" बुजुर्ग "डॉक्टर, बेटे के जाने के बाद मैंने एक चॉल में एक टीन की छत वाला घर किराए पर लिया। वहाँ मैं और मेरी पत्नी रहते हैं। उसे Paralysis है, उठ बैठ भी नहीं सकती।" मैं 10 से 5 नौकरी करता हूँ। शाम 5 से 7 इधर भीख माँगता हूँ और फिर घर जाकर तीनों के लिए खाना बनाता हूँ।

आश्चर्य से मैंने पूछा बाबा, अभी तो आपने बताया कि, घर में आप और आपकी पत्नी हैं। फिर ऐसा क्यों कहा कि, तीनों के लिए खाना बनाते हो ? बुजुर्ग " डॉक्टर, मेरे बचपन में ही मेरी माँ का स्वर्गवास हो गया था। मेरा एक जिगरी दोस्त था, उसकी माँ ने अपने बेटे जैसे ही मुझे भी पाला पोसा। दो साल पहले मेरे उस जिगरी दोस्त का निधन हार्ट अटैक से हो गया तो उसकी 92 साल की माँ को मैं अपने साथ अपने घर ले आया तब से वो भी हमारे साथ ही रहती है। मैं अवाक रह गया। इन बाबा का तो खुद का भी हाल बुरा है। पत्नी अपंग है। खुद का एक पाँव नहीं, घरबार भी नहीं, जो था वो बेटा बेचकर चला गया, और ये आज भी अपने मित्र की माँ की देखभाल करते हैं। कैसे जीवट इंसान हैं ये ? कुछ देर बाद मैंने समान्य स्वर में पूछा " बाबा, बेटा आपको रास्ते पर ले आया, ठोकरें खाने को छोड़ गया। आपको गुस्सा नहीं आता उस पर ? "

बुजुर्ग " No no डॉक्टर, अरे वो सब तो उसी के लिए कमाया था, जो उसी का था, उसने ले लिया। इसमें उसकी गलती कहाँ है ? " लेकिन बाबा "--- मैं बोला "लेने का ये कौन सा तरीका हुआ भला ? सब कुछ ले लिया। ये तो लूट हुई। "

" अब आपके यहाँ भीख माँगने का कारण भी मेरी समझ में आ गया है बाबा। आपकी तनख्वाह के 8000 रुपयों में आप तीनों का गुजारा नहीं हो पाता अतः इसीलिए आप यहाँ आते हो। बुजुर्ग " No, you are wrong doctor. 8000 रुपए में मैं सब कुछ मैनेज कर लेता हूँ। लेकिन मेरे मित्र की जो माँ है, उन्हें, डाइबिटीज और ब्लडप्रेसर दोनों हैं। दोनों बीमारियों की दवाई चल रही है उनकी। बस 8000 रुपए में उनकी दवाईयाँ मैनेज नहीं हो पाती। मैं 2 घंटे यहाँ बैठता हूँ लेकिन भीख में पैसों के अलावा कुछ भी स्वीकार नहीं करता। मेडिकल स्टोर वाला उनकी महीने भर की दवाई मुझे उधार दे देता है और यहाँ 2 घंटों में जो भी पैसे मुझे मिलते हैं वो मैं रोज मेडिकल स्टोर वाले को दे देता हूँ। मैंने अपलक उन्हें देखा और सोचा, इन बाबा का खुद का बेटा इन्हें छोड़कर चला गया है और ये खुद किसी और की माँ की देखभाल कर रहे हैं। मैंने बहुत कोशिश की लेकिन खुद की आँखें भर आने से नहीं रोक पाया। भरे गले से मैंने फिर कहा "बाबा, किसी दूसरे की माँ के लिए, आप, यहाँ रोज भीख माँगने आते हो ?

बुजुर्ग " दूसरे की ? अरे, मेरे बचपन में उन्होंने बहुत कुछ किया मेरे लिए। अब मेरी बारी है। मैंने उन दोनों से कह रखा है कि, 5 से 7 मुझे एक काम और मिला है। मैं मुस्कुराया और बोला " और अगर उन्हें पता लग गया कि, 5 से 7 आप यहाँ भीख माँगते हो, तो ? बुजुर्ग " अरे कैसे पता लगेगा ? दोनों तो बिस्तर पर हैं। मेरी हेल्प के बिना वे करवट तक नहीं बदल पातीं। यहाँ कहाँ पता करने आएँगी....हा ...हा....हा" बाबा की बात पर मुझे भी हँसी आई। लेकिन मैं उसे छिपा गया और बोला " बाबा, अगर मैं आपकी माँ जी को अपनी तरफ से नियमित दवाई दूँ तो ठीक रहेगा ना। फिर आपको भीख भी नहीं मांगनी पड़ेगी। बुजुर्ग " No doctor, आप भिखारियों के लिए काम करते हैं। माजी के लिए आप दवाई देंगे तो माजी भी तो भिखारी कहलाएंगी। मैं अभी समर्थ हूँ डॉक्टर, उनका बेटा हूँ मैं। मुझे कोई भिखारी कहे तो चलेगा, लेकिन उन्हें भिखारी कहलवाना मुझे मंजूर नहीं। "" OK Doctor, अब मैं चलता हूँ। घर पहुँचकर अभी खाना भी बनाना है मुझे। " मैंने निवेदन स्वरूप बाबा का हाथ अपने हाथ में लिया और बोला " बाबा, भिखारियों का डॉक्टर समझकर नहीं बल्कि अपना बेटा समझकर मेरी दादी के लिए दवाई स्वीकार कर लीजिए। अपना हाथ छुड़ाकर बाबा बोले " डॉक्टर, अब इस रिश्ते में मुझे मत बांधो, please, एक गया है, हमें छोड़कर...." आज मुझे स्वपन दिखाकर, कल तुम भी मुझे छोड़ गए तो? अब सहन करने की मेरी ताकत नहीं रही...." ऐसा कहकर बाबा ने अपनी बैसाखी सम्हाली। और जाने लगे, और जाते हुए अपना एक हाथ मेरे सिर पर रखा और भर भराई, ममता मयी आवाज में बोले "अपना ध्यान रखना मेरे बच्चे बड़ों से तो उन्होंने मेरे द्वारा पेश किए गए रिश्ते को ठुकरा दिया था लेकिन मेरे सिर पर रखे उनके हाथ के गर्म स्पर्श ने मुझे बताया कि, मन से उन्होंने इस रिश्ते को स्वीकारा था।

उस पागल कहे जाने वाले मनुष्य के पीठ फेरते ही मेरे हाथ अपने आप प्रणाम की मुद्रा में उनके लिए जुड़ गए। हमसे भी अधिक दुःखी, अधिक विपरीत परिस्थितियों में जीने वाले ऐसे भी लोग है हो सकता है इन्हें देख हमें अपने दुख कम प्रतीत हो, और दुनिया को देखने का हमारा नजरिया बदले हमेशा अच्छा सोचें, हालात का सामना करे ...

कहानी से कुछ प्रेरणा मिले तो जीव मात्र पर दया करना और परोपकार की भावना बच्चों में जरूर दें। बुजुर्ग हमारी मजबूरी नहीं हमारी जिम्मेदारी हैं। कुछ लोगों से अक्सर सुनते हैं कम से कम एक बेटा तो होना ही चाहिये, इसे पढ़ें और सोचें कही ऐसा हुआ तो ईश्वर से प्रार्थना है ऐसा किसी के साथ न हो।

लॉकडाउन

लॉकडाउन एक ऐसी आपातकालीन स्थिति को कहते हैं कि जब आप घर से बाहर नहीं जा सकते। यह भी जरूरी नहीं की आप घर पर ही हों अर्थात् जहां भी हो, इसके लागू होने के बाद आप कहीं बाहर नहीं जा सकते, और लोगों द्वारा इसका पालन न करने पर यह अपना वृहद रूप धारण कर लेता है तब यह कर्फ्यू कहलाता है। विश्व में आई कोरोना महामारी से बचाव के लिए हमारे देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 24 मार्च 2020 को 21 दिन के लिए लॉकडाउन की घोषणा की उसके पश्चात् यही क्रम थोड़े-थोड़े समय के लिए बढ़ाया गया प्रधानमंत्री द्वारा उठाया गया यह एक ऐतिहासिक कदम था ताकि लोगों को इस महामारी से बचाया जा सकें।

वर्ष 2021 में कोरोना महामारी से देश को बचाने के लिए यह अधिकार राज्यों को अपने हिसाब से लागू करने के लिए कहा गया।

लॉकडाउन का प्रभाव— लॉकडाउन के प्रभाव बहुत गहरे हुए क्योंकि इससे पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था डगमगा गई देश की सभी फैक्ट्री कलकारखाने छोटा-मोटा व्यापार सब बंद कर दिये गये जिसके कारण देश की प्रगति रूक गई इससे अर्थव्यवस्था को भारी क्षति पहुंची है, लॉकडाउन से भारत के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में भारी गिरावट आई यह किसी भी देश के लिए ठीक नहीं हमारी अर्थव्यवस्था विश्व के दूसरे देशों की अपेक्षा अधिक तेजी से नीचे गिरती जा रही है। अभी भारत की मौजूदा सकल घरेलू उत्पाद (GDP) 9.6 % है जो कि आने वाले समय में और भी कम हो सकती है। इसका सीधा प्रभाव पेट्रोल की कीमतों में आई वृद्धि से आंका जा सकता है। लॉकडाउन का सबसे अधिका प्रभाव छोटे मजदूरों, दिहाड़ी पर काम करने वाले लोगों पर पड़ा, बड़ी-बड़ी कम्पनियों में नौकरी करने वाले लोगों की नौकरियां चली गई कम्पनियां बंद होने के कारण। भारतीय रेल इससे पहले कभी नहीं रूकी थी स्थिति भयानक न हो जाये इसलिए ऐसे कदम उठाये गये। माइक्रोसॉफ्ट कम्पनी के मालिक बिल गेट्स का काम पर न जाना। दोनों के शादी के 27 साल बाद तलाक की घोषणा की है मेलिंडा और बिलगेट्स ने साझा बयान जारी किया दोनों की शादी 1994 में हुई थी। इस दौरान विश्व में घरेलू हिंसा में 56 प्रतिशत की वृद्धि हुये जो कि एक चिन्ता का कारण है।

लॉकडाउन के सकारात्मक प्रभाव— 1. लॉकडाउन की वजह से कोरोना महामारी पर काफी हद तक सफलता मिली।

2. लॉकडाउन लगने से सड़कों पर वाहन न चलने से प्रकृति को स्वयं को साफ करने का समय मिल गया और हमारी वायु स्वच्छ हो गई, सैकड़ों किलोमीटर की दूरी पर स्थित पहाड़ भी मैदान से साफ दिखाई देने लगे उदाहरण के तौर पर सहारनपुर से हिमालय का दिखाई देना। (लोकल न्यूज में प्रसारित)

3. चोरी, डकैती, जैसी आपराधिक गतिविधियों में कमी आई।

4. सरकार के द्वारा जनता का मनोरंजन करने के लिए रामायण एवं महाभारत कथा का प्रसारण नेशनल चैनल पर किया गया जिसे जनता द्वारा काफी सराहा गया और दूरदर्शन को भी इससे काफी इनकम हुई।



कु0 मनीषा राणा
(पुत्री भूपेन्द्र सिंह)

5. लोग जो अपने घरों से दूर थे उनको साथ रहने का समय मिला और उन्होंने अपने जीवन के सुखद पल व्यतीत किये वर्तमान में भी यही स्थिति अभी कायम है।

6. बच्चों के लिए ऑनलाईन पढ़ाई की व्यवस्था की गई जिसका बच्चों ने आनन्द लिया और एक नया फोन पढ़ाई के बहाने मिला।

निष्कर्ष— कोरोना महामारी जितनी बड़ी है उसकी रोकथाम भी बड़े स्तर पर लॉकडाउन लगाकर कि गई विभिन्न प्रकार के टीकों का अविष्कार हो चुका है, परंतु इसे देश के दूरदराज क्षेत्र में पहुंचने में समय लग सकता है, ऐसे में जरूरी है कि बचाव के उपाय अपनाये जाये ताकि दुबारा यह बीमारी अपने पैर न पसार सके।

चुटकुले

कुछ लोग धर्म के नाम पर लड़ते हैं,
कुछ धन के नाम पर, तो कुछ जाति के नाम पर
सिर्फ पति—पत्नी ही है जो निस्वार्थ से बेवजह लड़ते हैं।

पप्पू— नौकरी के लिए साक्षात्कार देने गया,
साक्षात्कार लेने वाला—आप कितना बड़ा खतरा उठा सकते हैं,
पप्पू—सर, भगवान से अगले जन्म में भी यही पत्नी मांगी है, जो अभी है
फिर क्या, जवाब के बाद पप्पू को तुरंत नौकरी मिल गई।

जज चोर से—घर में मालिक होते हुए तुमने चोरी कैसे की?
चोर ने बड़ी मासूमियत से जवाब दिया—
साहिब आपकी नौकरी भी अच्छी है,
सैलरी भी अच्छी है फिर आप ये सब सीख कर क्या करोगें।

कामकाजी नारी की व्यथा

कामकाजी औरतें हड़बड़ी में निकलती हैं रोज सुबह घर से
आधे रास्ते में याद आता है सिलेंडर नीचे से बंद किया ही नहीं
उलझन में पड़ जाता है दिमाग
कहीं गीजर खुला तो नहीं रह गया
जल्दी में आधा सैंडविच छूटा रह जाता है टेबल पर



ममता तोमर
वरिष्ठ रिप्रोग्राफर

कितनी ही जल्दी उठें और तेजी से निपटायें काम
ऑफिस पहुँचने में देर हो ही जाती है
खिसियाई हंसी के साथ बैठती हैं अपनी सीट पर
बाँस के बुलावे पर सिहर जाती हैं
सिहरन को मुस्कराहट में छुपाकर
नाखूनों में फंसे आटे को निकालते हुए
अटेंड करती हैं मीटिंग
काम करती हैं पूरी लगन से

पूछना नहीं भूलतीं बच्चों का हाल
सास की दवाई के बारे में
उनके पास नहीं होता वक्त पान, सिगरेट या चाय के लिए
बाहर जाने का
उस वक्त में वे जल्दी-जल्दी निपटाती हैं काम
ताकि समय से काम खत्म करके घर के लिए निकल सकें.
दिमाग में चल रही होती सामान की लिस्ट
जो लेते हुए जाना है घर
दवाइयां, दूध, फल, राशन

ऑफिस से निकलने को होती ही हैं कि
तय हो जाती है कोई मीटिंग
जैसे देह से निचुड़ जाती है ऊर्जा
बच्चे की मनुहार जल्दी आने की
रुलाई बन फूटती है वाशरूम में
मुंह धोकर, लेकर गहरी सांस
शामिल होती है मीटिंग में
नजर लगातार होती है घड़ी पर
और ज़ेहन में होती है बच्चे की गुस्से वाली सूरत
साइलेंट मोड में पड़े फोन पर आती रहती हैं ढेर सारी कॉल्स
दिल कड़ा करके वो ध्यान लगाती हैं मीटिंग में

घर पहुंचती हैं सामान से लदी-फंदी
देर होने के संकोच और अपराधबोध के साथ
शिकायतों का अम्बार खड़ा मिलता है घर पर
जल्दी-जल्दी फैले हुए घर को समेटते हुए
सबकी जरूरत का सामान देते हुए

करती हैं डैमेज कंट्रोल

मन घबराया हुआ होता है कि कैसे बतायेंगी घर पर
दूर पर जाने की बात
कैसे मनायेंगी सबको
कैसे मैनेज होगा उनके बिना घर

ऑफिस में सोचती हैं कैसे मना करेंगी कि नहीं जा सकेंगी इस बार
कितनी बार कहेंगी घर की समस्या की बात
कामकाजी औरतें सुबह ढेर सा काम करके जाती हैं घर से
कि शाम को आराम मिलेगा
रात को ढेर सारा काम करती हैं सोने से पहले
कि सुबह हड़बड़ी न हो

ऑफिस में तेजी से काम करती हैं कि घर समय पर पहुंचे
घर पर तेजी से काम करती हैं कि ऑफिस समय से पहुंचे
हर जगह सिर्फ काम को जल्दी से निपटाने की हड़बड़ी में
एक रोज मुस्करा देती हैं आईने में झांकते सफ़ेद बालों को देख
किसी मशीन में तब्दील हो चुकी कामकाजी औरतों से
कहीं कोई खुश नहीं न घर में, न दफ्तर में न मोहल्ले में
वो खुद भी खुश नहीं होतीं खुद से

'मुझसे कुछ ठीक से नहीं होता' के अपराध बोध से भरी कामकाजी औरतें
भरभराकर गिर पड़ती हैं किसी रोज
और तब उनके साथी कहते हैं
'ऐसा भी क्या खास करती हो जो इतना ड्रामा कर रही हो.'
मशीन में बदल चुकी कामकाजी औरतें
एक रोज तमाम तोहमतों से बेजार होकर
जीना शुरू कर देती हैं
थोड़ा सा अपने लिए भी
और तब लड़खड़ाने लगते हैं तमाम
सामाजिक समीकरण.

धीरे-धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय
माली सींचे सौ घड़ा, ऋतु आये फल होय

अर्थ:- कबीरदास जी कहते हैं कि हमेशा धैर्य से काम लेना चाहिए। अगर माली एक दिन में सौ घड़े सींच लेगा तो भी फल तो ऋतु आने पर ही लगेंगे।

कोरोना काल में मानसिक एवं व्यक्तित्व बदलाव की आवश्यकता

कोरोना काल के इस मुश्किल समय से गुजरते हुए मैंने उन कई बातों पर गौर किया जो जीवन काल के लिए उतनी ही जरूरी है, जितना जरूरी है एक इन्सान के लिए अपना जीवन जीना! एक इन्सान अपना जीवन कैसे जीना चाहता है इसका जवाब कोई भी बहुत आसानी से दे सकता है, एक सुनहरी सुबह, पूरा दिन का शांतिपूर्वक हर काम, चहरे पे मुस्कान लिए शाम को घर लौटना, अच्छा खाना, पहनना और सुख! है ना। लेकिन कभी यह होता है और कभी नहीं। अब सोचो की हर एक दिन ऐसा कुछ भी न मिला, सोच कर भी डर लगता है न। पर ऐसा ही हुआ जब इस कोरोना महामारी ने दस्तक दी। लोगों को विश्वास ही नहीं हुआ कि अचानक उनके साथ ये सब क्या हो रहा है। क्यों उनकी अच्छी सी जिन्दगी बदल गई, थम गई। इन्सान की सोचने की क्षमता, इच्छा ही मानो चली गई। लोगों की जान इस महामारी ने तो ली ही, लेकिन कहीं ज्यादा उनकी जान गई उनकी चिंता से, उनकी मजबूरी से, उनकी सोच से। इसमें उनका, आपका या किसी का भी कोई दोष नहीं है, दोष है तो इस सोच का, इस बदलाव का जिसने उनका जीवन ही बदल दिया, उन्हें पता ही नहीं चला कि हुआ क्या। मैं आपको कुछ ऐसी बातें बताता हूँ जो आप एक बार सोचना जरूर हो सकता है। ये बातें आपसे पहले भी किसी ने कही हो या आपने कभी पढ़ी या सुनी हो पर इन बातों को आप एक बार पढ़ना जरूर और हो सके तो अपनी जिन्दगी में अमल भी करना। बातें अटपटी हो सकती हैं और बचकानी भी। पर कहते हैं न कि मनुष्य का स्वभाव ही ऐसा होता है, अगर एक डॉक्टर सलाह देता है। तो लोग उसे बड़ी गम्भीरता से लेते हैं और वहीं बात आपका अपना कोई भी तो उसे हम इतनी गम्भीरता से नहीं लेते। इसमें कुछ गलत नहीं है यही मनुष्य का स्वभाव होता है। पर एक बुद्धिमान व्यक्ति हर बात को परखता है और फिर आगे बढ़ता है।



आत्रेय ज्ञान
सर्वेक्षक

1. एक इन्सान के लिए हर एक दिन एक नई जिन्दगी होता है। आज एक नई जिन्दगी है।
2. आज मुझे कोई चिन्ता नहीं करनी और न ही किसी चीज का अफसोस करना है। जो कल बीत गया, सो बीत गया और जो कल बीतेगा, अच्छा बीतेगा।
3. चिन्ताएँ हमारी सोचने की क्षमता को समाप्त करती हैं। जब हम किसी चिन्ता को मानसिक तौर पर अपना लेते हैं तो वो हमें कमजोर कर देती है। इसे दूर करने से पहले इसे अपनाओ और फिर इसके परिणामों को सोचो और लिखो और फिर एक-एक कर इसे दूर करो।
4. खुद को स्वस्थ करो अगर आप इस भय और चिन्ता से मुक्त होना चाहते हैं।
5. चिन्ता में जियो और उसके दुष्परिणाम देखो या फिर स्वस्थ रहो और सुख भोगो।

6. एक बार ईश्वर भी हमारे पापों को माफ कर सकता है पर हमारा शरीर और मानसिक तंत्र नहीं।
7. सोचो कि अगर हम चिन्ता करते रहे तो इससे भी बुरा हो सकता है, पर हम चिन्ता न करके इससे बुरा नहीं होने देंगे।
8. अपने आपको समय दो, उसे ऐसे व्यस्त करो कि आपको चिन्ता करने का समय ही न मिले।
9. चिन्ता को तोड़ दो इससे पहले की वह आपको तोड़ दें।
10. हम सभी परिस्थितियों को अपना सकते हैं अगर हम उसी में सम्मिलित हो जाएँ और उसे भूल जाएँ।
11. हमारी जिन्दगी वैसी ही होती है जो हम उसे बनाने के लिए सोचते हैं।
12. कुछ भी आपको सुख नहीं दे सकता पर आपकी खुद की सोच जरूर। (आत्मविश्वास) सुख का प्रमुख घटक है।
13. मानसिक बदलाव ही सभी बदलाव का कारण है।
14. सांसारिक सत्य हम सदैव वहीं सोचते हैं जो हमारे पास नहीं है वह नहीं जो हमारे पास है।
15. किसी भी चीज को पाकर उसका सुख नहीं बल्कि सुखी-सुखी होकर उसे पाने का प्रयास करो।
16. अपनी दुआओं को गिनो, अपनी तकलीफों को नहीं।
17. इन्सान जिन्दगी को समझने के लिए नहीं, उसे जीने के लिए आया है।
18. प्रार्थना, आपके जीवन की शक्ति का स्रोत है, वही आपको जीवन जीने की इच्छा देती है।
19. अपनी समस्याएँ जब हम किसी को नहीं बता पाते तो फिर हम सदैव ईश्वर को बताते हैं। कहते हैं ईश्वर आपको राह दिखा सकता है पर उस राह पर आपको अपनी सोच से ही चलना होगा।
20. अपने पूरे दिन के सफर में कुछ समय अपने आप को दें और देखें कि आज आपने क्या पाया और क्या पा सकते थे।
21. काम से तो कोई भी बड़ा बन सकता है पर अनुशासन से काम इन्सान को अपने जीवन में आगे बढ़ाता है।

ऐसी और भी कई बातें हैं जिनसे हम इस महामारी काल को भुलाकर फिर से एक स्वस्थ शुरुआत कर सकते हैं। बुरा समय कभी नहीं जाता बल्कि हमें उस बुरे समय में अपनी को अच्छा बनाना है। समय तो चलता ही रहेगा बदलाव तो हमें लाना है। आज इस विकट स्थिति में टीकाकरण अति आवश्यक है। भले ही यह आपको ज्यादा सुरक्षित न रख पाये पर जो विश्वास ये आपको देगा वो विश्वास वो सोच आपको कहीं ज्यादा सुरक्षित रखेगी। आप अपने शरीर और अपनी मानसिक सोच को स्वस्थ रखिये और वो आपको स्वस्थ रखेगी। टीकाकरण अवश्य करवायें और जीवन में अनुशासन अवश्य लायें। सभी नियमों का पालन करें और मास्क (सुरक्षा कवच) सही तरीके से एवं अवश्य लगाएँ।

पांच तत्वों से सीखें खुश रहना

पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और अंतरिक्ष। प्रकृति में सब कुछ इन्हीं पांच तत्वों से बना है, यहां तक कि आपका शरीर भी। पर शायद ही आप जानते हो कि इन तत्वों का ज्ञान होना और उससे जुड़ना हमारे जीवन में खुशी और अच्छा स्वास्थ्य भी लाता है।



अरविंद सिंह बिष्ट

सर्वेक्षक

1. पृथ्वी से सीखें नम्रता

पृथ्वी इस बात का प्रतीक है कि परिस्थित चाहे जैसे भी हो, जमीन पर टिके रहें। यह दरअसल विनम्रता का प्रतीक है, जो हमें सबके साथ समान व्यवहार करना सिखाता है। जब हम भीतर से असुरक्षित और कमजोर महसूस करते हैं, तभी हम वास्तव में अपनी सीमाओं को छिपाकर दूसरों पर हावी होने की कोशिश करते हैं। लेकिन विनम्र होकर आप अपनी स्वयं की शक्ति को सक्रिय करते हैं और अन्य लोगों को आपको चोट पहुंचाने की शक्ति भी नहीं देते हैं। पृथ्वी की तरह, आप अनजाने में अपने जीवन में मूल्य जोड़ने के साथ-साथ दूसरों को भी समृद्ध करते हैं।

2. अतीत को जाने देना सिखाती है वायु

आपकी सांस आपको उस हवा की याद दिलाती है, जिसे आप अंदर ले रहे हैं और वह हवा, जो आपके शरीर को छोड़ रही है। कल्पना कीजिए कि अगर हम अपने शरीर से हवा को बाहर नहीं निकाल पा रहे हैं। क्या हम बिना ऑक्सीजन के जीवन की कल्पना कर सकते हैं? वायु हमें अतीत को जाने देना और वर्तमान में पूरी तरह से मौजूद रहना सिखाती है। यदि हम अपने अतीत या नकारात्मक अनुभवों से चिपके रहते हैं, और जो हुआ उसके बारे में सोचते रहते हैं, तो हम अपनी उर्जा और सफलता को अवरुद्ध कर देंगे। लेकिन हमें सतर्क रहना चाहिए और वर्तमान क्षण में रहकर अपने जीवन के बेहतर संभालना चाहिए।

3. अंतरिक्ष की असीमता

आकाश, हमें लोगों और संभावनाओं के लिए अपना दिल खोलना सिखाता है। आकाश की विशालता हमें सिखाती है कि हमें अपने दृष्टिकोण में समावेशी और अपनी सोच में व्यापक विचार रखना चाहिए। हमें यह महसूस करके दूसरों की मदद करने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए कि हम सभी आत्मा से जुड़े हुए हैं। हमें भी यह महसूस करना चाहिए कि हम अपने मन और विश्वासों के अलावा किसी और या किसी सीमा से प्रतिबंधित नहीं हैं। हम जो भी चाहते हैं, कर सकते हैं। हमारी कल्पना, जिसे हम अनुभव करना चाहते हैं, उसकी कोई सीमा नहीं है।

4. अग्नि का सकारात्मक पहलू

अग्नि हमें जीवन और अपने आसपास की हर चीज के लिए उत्साहित होना सिखाती है। यह हमें जीवन में उत्साही और सकारात्मक रह कर अपनी आंतरिक आत्मा को जीवित रखना सिखाती है। अग्नि को बहुत पवित्र माना जाता है, जो हमें भी भीतर से पवित्र बनने के लिए प्रेरित करता है, जिससे हम जहां भी जाएं वहां सकारात्मकता लाएं। अपने भीतर की नकारात्मक भावनाओं के अंधकार को दूर करें व मन को सभी नकारात्मकता से मुक्त करें।

5. जल प्रामाणिकता सिखाता है

जल हमें पारदर्शी और प्रामाणिक होना सिखाता है। यह हमें याद दिलाता है कि बस जीवन के साथ प्रवाह में रहें ताकि हम स्पष्टता के साथ सोच सकें और प्रामाणिकता के साथ कार्य कर सकें। जब हम बाहरी परिस्थितियों को हमें बदलने या कमजोर करने की अनुमति नहीं देंगे, तो हम खुद को सच्चाई से व्यक्त करने में सक्षम होंगे। जब हम स्वयं के साथ सहज होते हैं और अपनी प्रकृति व आत्मा से जुड़े होते हैं, तो हम अपनी आत्मा द्वारा निर्देशित होने में सक्षम होते हैं। यह जरूरी है कि हम अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए जरूरी चुनाव करें। (हो'ओरोनोपोनो क्षमाशीलता पर आधारित एक प्राचीन जीवन दर्शन है)

प्रकृति का पैगाम

चाहे बहे हवा मतवाली
चाहे बहे हवा लू वाली
फूल हमेशा मुस्काता
पत्तों की गोदी में रहकर

नीचे टपक धूल में मिल कर
फूल हमेशा मुस्काता
इसलिए व सबको भाता
फूल हमेशा मुस्काता।

फूल हमेशा मुस्काता
कांटो की नोकों को सहकर
फूल हमेशा मुस्काता
ऊपर रह डाली पर खिलकर
फूल हमेशा मुस्काता



अनुप्रिया
डिजीटाईजर

चिन्तन

1. रोग अपनी देह में पैदा होकर भी हानि पहुंचाता है.... ॥
और औषधि वन में पैदा होकर भी हमारा लाभ ही करती है..... ॥
हित चाहने वाला पराया भी अपना है..... ॥
और अहित करने वाला अपना भी पराया है.... ॥
2. जिंदगी में किसी का साथ ही काफी है, कंधे पर किसी का हाथ ही काफी है
दूर हो या पास, क्या फर्क पड़ता है, अनमोल रिश्तों का तो बस एहसास है
3. दिल हमेशा वहीं लौटना चाहता है, जहां
दुबारा जाना सम्भव ही नहीं, जैसे बचपन,
मासूमियत, पुराना घर पुराने दोस्त.....
क्योंकि उम्र चाहे जितनी भी हो, सुना है
दिल पर कभी झुर्रियां नहीं पड़ती ॥
4. संतुष्ट जीवन सफल जीवन से सदैव श्रेष्ठ होता है, क्योंकि सफलता
सदैव दूसरों के द्वारा आंकलित होती है।
जबकि संतुष्टि स्वयं के मन और मस्तिष्क द्वारा
5. जिन्दगी में दो व्यक्ति जीवन को नई दिशा दे जाते हैं....
एक वो जो मौका देते हैं, दूसरे वो जो धोखा देते हैं.....
6. नमक जैसा बनाइये अपने व्यक्तित्व को
उपस्थिति का भले ही पता न चले पर
अनुपस्थिति का अहसास अवश्य होना चाहिये... ॥



भूपेन्द्र सिंह
सर्वेक्षण सहायक

- जिस व्यक्ति ने कभी गलती नहीं की, उसने कभी कुछ नया करने की कोशिश नहीं की— अल्बर्ट आइंस्टीन
- जिस प्रकार मैले दर्पण में सूरज का प्रतिबिंब नहीं पड़ता उसी प्रकार मलिन अंतःकरण में ईश्वर के प्रकाश का प्रतिबिंब नहीं पड़ सकता— रामकृष्ण परमहंस
- अच्छे शब्दों के प्रयोग से बुरे लोगों का दिल भी जीता जा सकता है— भगवान बुद्ध।

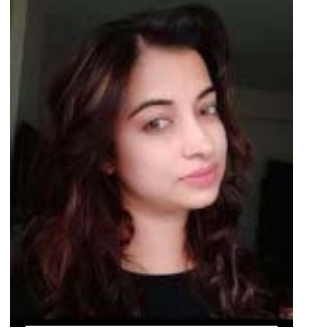
नारी ईश्वर का चमत्कार

नारी सरस्वती का रूप हो तुम,
नारी लक्ष्मी का स्वरूप हो तुम
बढ़ जाये जब अत्याचारी
नारी दुर्गा—काली का रूप हो तुम।

नारी खुशियों का संसार हो तुम
नारी प्रेम का आधार हो तुम
जो घर आँगन को रोशन करती
नारी सूरज की सुनहरी किरण हो तुम।

नारी ममता का सम्मान हो तुम
नारी संस्कारों की जान हो तुम
स्नेह, प्यार और त्याग की
नारी इकलौती पहचान हो तुम।

नारी कभी कोमल फूल गुलाब हो तुम
नारी कभी शक्ति का अवतार हो तुम
तेरे रूप अनेक
नारी ईश्वर का चमत्कार हो तुम।



पूजा तोमर
डिजीटार्डजर

तिनका कबहु न निन्दिये, जो पाँवन तर होय,
कबहु उड़ी आँखिन पड़े, तो पीर घनेरी होय

कबीरदास जी कहते हैं कभी भी पैर में आने वाले
तिनके की भी निंदा नहीं करनी चाहिए क्योंकि अगर वही तिनका आँख में
चला जाये तो बहुत पीड़ा होगी।

नई शिक्षा नीति

नई शिक्षा नीति का मुख्य उद्देश्य भारत में वर्तमान में जो शिक्षा प्रदान की जा रही है उस में क्रांतिकारी बदलाव करना है साथ ही भारत की शिक्षा को वैश्विक स्तर पर खड़ा करना है।

नई शिक्षा नीति 2020 को कैबिनेट द्वारा मंजूरी मिलने के पश्चात् लागू कर दिया गया है। इससे पहले राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में बनाई गई थी, और उसे 1992 में संशोधित किया गया था। पिछली नीति के बाद तीन दशक से अधिक समय बीत चुका है। इस अवधि के दौरान हमारे देश, समाज, अर्थव्यवस्था और दुनिया में बड़े पैमाने पर महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। इस संदर्भ में शिक्षा क्षेत्र को 21 वीं सदी की मांगों और देश की जरूरतों के प्रति खुद को तैयार करने की जरूरत है। इन सभी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु भारत ने नई शिक्षा नीति 2020 बनाई गई जिसमें गुणवत्ता, नवीनता तथा शोध प्रमुख स्तम्भ होंगे।



सतेन्द्र सिंह रावत
मा.का. श्रेणी-1

नई शिक्षा नीति के महत्वपूर्ण बिन्दु

नई शिक्षा नीति में बच्चों को लाइफ स्किल (जीवन कौशल) से जोड़ने का प्रयास किया जाएगा। इसमें खास तौर से उच्च शिक्षा के साथ कृषि शिक्षा, कानूनी शिक्षा, चिकित्सा शिक्षा और तकनीकी शिक्षा जैसी व्यवसायिक शिक्षाओं के शामिल किया जाएगा।

अभी तक स्कूली पाठ्यक्रम 10+2 के हिसाब से चलता था, जिसे बदलकर अब 5+3+3+4 फॉर्मूले से चलाया जाएगा। इसका मतलब है कि अब स्कूली शिक्षा को 3-8, 8-11, 11-14, और 14-18 उम्र के छात्रों के लिए विभाजित किया गया है।

5+3+3+4 फॉर्मूले का अर्थ है प्राइमरी से दूसरी कक्षा तक एक हिस्सा, फिर तीसरी से पांचवी तक दूसरा हिस्सा, छठी से आठवी तक तीसरा हिस्सा और नौवी से बारहवी तक आखिरी हिस्सा। इस हिस्सों को फाउंडेशन स्टेज, प्रिप्रेटरी स्टेज, मिडिल स्टेज और सेकंडरी स्टेज में बांटा गया है।

अब से आर्ट, म्यूजिक, क्राफ्ट, स्पोर्ट्स, योग जैसे विषय प्रमुख पाठ्यक्रम का हिस्सा होंगे। इन्हे पाठ्येत्तर गतिविधियों (एकस्ट्रा करिकुलर एक्टिविटीज) से हटाया जाएगा।

नई शिक्षा नीति के तहत विद्यार्थी को छठी कक्षा से व्यवसायिक प्रशिक्षण, इंटर्नशिप को भी आरंभ कर दिया जाएगा।

पांचवी कक्षा तक छात्र अपनी क्षेत्रीय भाषा या मातृ भाषा में पढ़ाई कर सकता है।

पहले जैसे विज्ञान, कला और कामर्स के स्ट्रीम हुआ करते थे उसके तहत छात्रों को एक निश्चित विषय की पढ़ाई करनी होती थी लेकिन अब यह व्यवस्था को खत्म किया जाएगा।

उदाहरण से समझते हैं:- यदि कोई छात्र फिजिक्स (भौतिक विज्ञान) का चयन करता है तो वह चाहे तो अकाउंट या आर्ट्स के भी विषय की भी पढ़ाई नई शिक्षा नीति के तहत कर सकता है। छात्रों को छठी कक्षा से ही कम्प्यूटर और एप्लीकेशन के बारे में जानकारी दी जाएगी साथ ही उन्हें कोडिंग भी सिखाई जाएगी। सभी स्कूलों को डिजिटल किया जाएगा।

सभी तरह के कंटेंट का क्षेत्रीय भाषा में अनुवाद किया जाएगा।

नई शिक्षा नीति 2020 के तहत वर्चुअल लैब भी विकसित किए जाएंगे।

भारत के नई शिक्षा नीति के लाभ

भारत में इस नई शिक्षा नीति को लागू करने का उद्देश्य भारत के छात्रों को सक्षम बनाना है।

नई शिक्षा नीति 2020 को लागू करने के लिए GDP का 6% हिस्सा केन्द्र सरकार के द्वारा खर्च किया जाएगा।

पढ़ाई में संस्कृत और भारत की जो प्राचीन भाषा है उनको अहम भूमिका दी जाएगी संस्कृत को IIT के क्षेत्र में भी आगे ले जाया जाएगा साथ ही जो छात्र चाहे संस्कृत भाषा में ही विषयों की पढ़ाई भी कर सकता है।

बोर्ड परीक्षा को अब आसान करते हुए, दो चरणों में कर दिया जाएगा पढ़ाई में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का प्रयोग किया जाएगा।

उच्च शिक्षा स्तर पर एम.फिल.डिग्री को खत्म किया जा रहा है। नई शिक्षा नीति के तहत एकस्ट्रा करिकुलर एक्टिविटीज को मुख्य स्लेब्स में रखा जाएगा।

इस नीति के तहत विद्यार्थियों को तीन भाषा सिखाई जाएगी, जो कि राज्य अपने स्तर पर निर्धारित करेगा। नई शिक्षा नीति के आ जाने से बच्चों को कौशलपूर्ण बनाने पर ज्यादा ध्यान दिया जाएगा, साथ ही उन्हें पढ़ाई भी विशेष रूप से कराई जाएगी।

इस नीति के आने से विद्यार्थी के उपर से पढ़ाई का बोझ कम होगा और उन्हें सीखने के क्षेत्र में काफी उन्नति प्रदान होगी। यानि अब विद्यार्थी रट्टा मारने की जगह कौशलपूर्ण और योग्य बनेंगे।

नई शिक्षा नीति के तहत वोकेशनल स्टडीज पर भी फोकस दिया जाएगा। अभी वोकेशनल स्टडीज करने वालों की संख्या 5% से भी कम है। नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत कक्षा 6 से कक्षा 8 तक के छात्रों को वोकेशनल स्टडीज सिखाने पर फोकस होगा।

नई शिक्षा नीति के तहत माध्यमिक विद्यालय के छात्रों को विशेष छूट देते हुए अपनी पसंदीदा भाषा सीखने का भी अवसर दिया जाएगा। जिसमें फ्रेंच, जर्मन, स्पेनिश, चाइनीज़, जैपनीज़ इत्यादि भाषाओं को शामिल किया जाएगा।

इन सभी प्रयासों से भारत की शिक्षा नीति वैश्विक तौर पर उभर कर आएगी साथ ही भारत का जो इतिहास था वह फिर दोहराया जा सकेगा।

**बिगडी बात बने नही, लाख करो किन कोय।
रहिमन फाटे दूध को, मथे न माखन होय।।**

अर्थ:- रहीम दास जी कहते हैं कि मनुष्य को बुद्धिमानी से व्यवहार करना चाहिए। क्योंकि अगर किसी कारण कुछ गलत हो जाता है तो इसे सही करना मुश्किल होता है क्योंकि एक बार दूध खराब हो जाए तो कितना भी कोशिश कर लो उससे ना तो मक्खन बनता है न ही दूध।

उत्तराखण्ड के पण्डित बन्धु

19 वीं शताब्दी के सातवें दशक तथा नौवें दशक के मध्य भारतीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा संचालित सर्वेक्षण अभियानों में जो भौगोलिक सूचनायें एकत्रित की गईं, उनका क्षेत्र उत्तराखण्ड के जोहार क्षेत्र, जनपद पिथौरागढ़ की मुनस्यारी तहसील की प्रतिभागों को जाता है। इन प्रतिभागों में नैन सिंह, किशन सिंह, मानी सिंह एवं कल्याण सिंह को जाना जाता है जिन्होंने अदम्य साहस, कौशल, धैर्य तथा असीम कष्ट सहकर व सहिष्णुता का परिचय देकर भारतीय सर्वेक्षण के इतिहास में स्वर्णयुग का सूत्रपात किया है। यह सूचनायें इतनी सटीक थीं कि बाद के सर्वेक्षण में मात्र उनकी पुष्टि की गई। नैन सिंह जी को मूल रूप से शिक्षक होने तथा मौलिक सर्वेक्षण करने के कारण मौलिक पंडित तथा चारों सर्वेक्षकों को पंडित बन्धु कहा जाता है। इनमें पंडित नैन सिंह एवं किशन सिंह के योगदान की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।



रमेश चंद्रा
डिजिटार्जजर

ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा जब पूरे भारतीय महाद्वीप तथा भारत के पड़ोसी देशों (मध्य एशिया, तिब्बत व अफगानिस्तान) का चुम्बकीय सर्वेक्षण जर्मनी के इलागर्ट वाइन बन्धुओं (एडोल्फ, रॉबर्ट एवं हरमन) के द्वारा 1854 से 1858 के मध्य कराया गया। इन्होंने कुमाऊं, लद्दाख, तुर्किस्तान एवं तिब्बत के विषय में जो भी जानकारियां प्राप्त की उनमें पण्डित बन्धुओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इन्हें पहले दुभाषियों के रूप में रखा गया था। नैन सिंह जी की तिब्बती भाषा की जानकारी तथा सर्वेक्षण में विशेष रुचि ने इलागर्टवाइन बन्धुओं को बहुत प्रभावित किया। नैन सिंह जी ने वर्ष 1866 में एक व्यापारी के वेश में नेपाल सीमा से ल्हासा तक गुप्त सर्वेक्षण किया तथा वापसी के समय सागपो (ब्रह्मपुत्र) नदी के 600 मील नदी पथ का भी सर्वेक्षण पूर्ण किया। यह 1200 मील की यात्रा उन्होंने बड़े ही परिश्रम व सावधानीपूर्वक नपे-तुले कदमों से चलकर पूरी की। उन्होंने 1867 में पश्चिमी तिब्बती क्षेत्र में गरतोक के पूर्व में स्थित विख्यात थोक-जालुंग सोने की खानों का भ्रमण किया। उन्होंने सिन्धु नदी की ऊपरी दो शाखाओं के नक्शे पूरे करने के लिए अंकन सूचनायें संकलित की और सतलज नदी के उद्गम स्थलों के आस-पास लगभग 17000 वर्गमील क्षेत्रफल का सर्वेक्षण भी पूरा किया।

जुलाई 1873 को लेह (लद्दाख) से प्रारम्भ कर ल्हासा होते हुए मार्च 1875 में गुवाहाटी (असोम) कलकत्ता में समाप्त हुई। यात्रा की अवधि में नैन सिंह जी ने 1319 मील (2122.72 KM) पैदल चलकर गुप्त सर्वेक्षण किया।

276 अक्षांश अंकन सेक्सटेंट से लिए गए अंकन से बह्मपुत्र नदी के उत्तर में स्थित एक बड़ी हिमाच्छादित पर्वत श्रृंखला की खोज की। बह्मपुत्र नदी के विषय में 50 मील दूर की बिल्कुल नयी सूचनायें भी दुनिया को दी। वहीं किशन सिंह जी ने 1871 में तिब्बती शहर शिगात्से के उत्तर में यात्रा करते हुए तेंग्री-नोर झील, जो ल्हासा के उत्तर में 70 मील (112.65 KM) की दूरी पर स्थित है तक की यात्रा व मार्ग सर्वेक्षण किया।

वापस लौटते समय उन्होंने केंधालिक-गुमा-पोलुर-कोरिया नदी का स्रोत-पेंगकाक झील-ताड़ से (लद्दाख) यात्रा मार्ग का सर्वेक्षण किया।

किशन सिंह (सर्वेक्षक) ने 1878 में दार्जिलिंग से अपनी ऐतिहासिक, रोमांचकारी व सबसे प्रसिद्ध यात्रा प्रारम्भ की वे ल्हासा और ल्हासा के उत्तर में गंगोलिया की दिशा में निकले। मार्ग में लुटेरों द्वारा आक्रमण किए जाने, लूटे जाने के बाद भी कार्य में लगे रहे। अतः गोवी रेगिस्तान के पश्चिमी किनारे पर स्थित तुनहवांग चीनी राज्य में कांसू पहुंचे। इन्होंने इस यात्रा में 2800 मीट दूरी पैदल यात्रा ऐसे मार्ग से की जो पूर्णतयः असर्वेक्षित था। वैज्ञानिक सर्वेक्षण की यह सर्वश्रेष्ठ यात्रा थी। जितना अंग्रेज अधिकारियों को इन पंडितों के धैर्य, कठिन परिश्रम और साहस ने प्रभावित किया उससे कहीं अधिक इनके द्वारा अत्यन्त विषय परिस्थितियों में लिए गए उत्कृष्ट श्रेणी के अंकनों ने किया। रॉयल ज्योग्राफिकल सोसाइटी के समक्ष

पढ़ी गई यात्रा रिपोर्टों में इन सर्वेक्षकों के द्वारा किए गए अंकनों के गुणात्मक पहलुओं पर बार-बार ध्यान दिलाया गया है।

नैन सिंह जी के द्वारा लिए गए अंकनों में यह भी बताया गया कि किन विशिष्ट परिस्थितियों में सेक्सटैंट को विभिन्न रूपों से इस्तेमाल करके उन्होंने पहाड़ों की चोटियों के सटीक अंकन प्राप्त किए गए।

बह्मपुत्र नदी के 600 मील लम्बे प्रवाह पथ पर नैन सिंह जी के द्वारा प्राप्त की गई सभी वैज्ञानिक जानकारियों का सूक्ष्म विश्लेषण भी किया गया है।

मौंटगोमरी इनकी प्रशंसा में लिखते हैं।

“पंडित एक बहुत सटीक सर्वेक्षक है, जो कदमों से दूरी नाप सकता है और इसी आधार पर दूरी का अंदाज लगा सकता है।”

किशन सिंह जी ने जो सूचनायें एकत्रित की और गणना करके निष्कर्ष, ग्रेट ट्रिगनोमेट्रिकल सर्वे को दिए उनके सटीकपन पर जे.एम.एल. बेकर को आश्चर्य से यह कहना पड़ा कि ‘यह गणनायें एक महान सर्वेक्षक के अद्वितीय कार्यकाल का चरमोत्कर्ष हैं।’

इन अन्वेषण कार्यों को अन्वेषकों के परतंत्र नागरिक होने के उपरांत भी, समुचित सम्मान मिला। नैन सिंह को उनके 1865-66 की काठमाण्डू-ल्हासा-मानसरोवर सर्वेक्षण कार्य हेतु रॉयल ज्योग्राफिकल सोसाइटी लन्दन द्वारा सोने की घड़ी से सम्मानित किया गया।

नैन सिंह को 1977 में रॉयल ज्योग्राफिकल सोसाइटी का पेट्रनस स्वर्ण भारतीय मूल के किसी भी नागरिक को दिया जाने वाला पहला व एकमात्र सर्वोच्च अंलकरण है।

उत्तराखण्ड मूल के महान सर्वेक्षक पराधीन भारत में भी अपने वैज्ञानिक योगदान प्राप्त सम्मान द्वारा सदैव अमर रहेंगे।

इंतजार करने वालों को सिर्फ उतना मिलता है,
जितना कोशिश करने वाले छोड़ देते हैं।— अब्दुल कलाम

सूरज की तरह चमकना है तो सूरज की तरह जलना भी पड़ेगा।
जब हमारे दस्तखत आटोग्राफ में बदल जाये तो ये सफलता की निशानी है।— अब्दुल कलाम

आप अपना भविष्य नहीं बदल सकते पर अपनी आदतें बदल सकते हैं। यकीन मानिए कि आपकी
आदतें आपका भविष्य बदल देंगी। — अब्दुल कलाम

राजा भोज की कहानी

राजा भोज एक बहुत बड़े दानवीर थे। उनकी एक खास बात थी कि जब वो दान देने के लिए हाथ आगे बढ़ाते तो अपनी नजरें नीचे झुका लेते थे।

ये बात सभी को अजीब सी लगती थी कि ये राजा कैसा दानवीर है। ये दान भी देते हैं और इन्हें शर्म भी आती है।

ये बात जब तुलसीदास तक पहुंची तो उन्होंने राजा को चार पंक्तियां लिख भेजी जिसमें लिखा था—

ऐसी देनी देनजु
कित सीखे हो सेन।
ज्यों ज्यों कर ऊंचौ करौ
त्यों त्यों नीचे नैन।।

इसका मतलब था कि राजा तुम ऐसा दान देना कहां से सीखे हो? जैसे-जैसे तुम्हारे हाथ ऊपर उठते हैं वैसे-वैसे तुम्हारी नजरें तुम्हारे नैन नीचे क्यों झुक जाते हैं?

राजा ने इसके बदले जो जवाब दिया वो जवाब इतना गजब का था कि जिसने भी सुना वो राजा का कायल हो गया।

इतना प्यारा जवाब आज तक किसी ने किसी को नहीं दिया।
राजा ने जवाब लिखा—

देनहार कोई और है
भेजत जो दिन रैन।
लोग भरम हम पर करैं
तासौं नीचे नैन।।

मतलब देने वाला तो कोई और है वो ईश्वर है वो परमात्मा है वो दिन रात भेज रहा है। परन्तु लोग ये समझते हैं मैं दे रहा हूं राजा दे रहा है। ये सोचकर मुझे शर्म आ जाती है और मेरी आंखें नीचे झुक जाती हैं वो ही करता है और वो ही करवाता है, क्यों बन्दे तू इतराता है, एक सांस भी नहीं तेरे वश की, वो ही सुलाता और वो ही जगाता है.....

स्वास्थ्य सबसे बड़ा उपहार है, संतोष सबसे बड़ा धन और विश्वास सबसे अच्छा सम्बंध—

भगवान बुद्ध

मेहनत करने से दरिद्रता नहीं रहती, धर्म करने से पाप नहीं रहता, मौन रहने से कलह नहीं होती—

चाणक्य



कृ० मनीषा राणा
(पुत्री भूपेन्द्र सिंह)

पुस्तक ज्ञान ही नहीं मनुष्य की सच्ची मित्र है

संस्कृत की एक सूक्ति है— “विद्या ददाति विनयम्” अर्थात् विद्या को पढ़ने-लिखने से, ज्ञान प्राप्त करने से व्यक्ति विनयशील बनता है। उसके सोचने-समझने के सामर्थ्य का विस्तार होता है। विद्या और ज्ञान पुस्तकों से मिलता है। पुस्तकें ज्ञान की वाहक हैं, ये समूचे ज्ञान को अपने में समाहित रखती हैं। एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को ज्ञान पहुंचाती हैं। एक युगकाल और समय विशेष को जीवंत बनाए रखती हैं। पौराणिक वाङ्मय उस काल के ज्ञान को आज के पाठक तक लाया है। ये ज्ञान ही नहीं, परम्पराओं, पर्व, त्यौहारों, मान्यताओं, आचार-व्यवहारों को भी प्रस्तुत करती हैं। पुस्तकें या ग्रन्थ न होते तो क्या अपने ऋषि-मुनियों और मनुष्यों के ज्ञान से हम परिचित हो पाते, नहीं न।



विजय कुमार सिंह
(एम0टी0एस0)

विज्ञान की तरक्की के साथ पुस्तकों के प्रकाशन में भी अभूतपूर्व उन्नति हुई है। कई-कई रंगों में संजीव चित्रोवाली पुस्तकें कितनी नयनभिराम हैं। आज ज्ञान का प्रसार करना ज्यादा आसान और सहज-सुलभ हो गया है। नए से नए विषयों पर पुस्तकें सामने आ रही हैं। पुराने से भी नई-नई जानकारीयां निकाली जा रही हैं। पुस्तकें मनुष्य की सच्ची मित्र हैं। पुस्तकों में अथाह ज्ञान भरा पड़ा है। परंतु उनको पढ़ना जरूरी है। उन पर मनन करना और उनको आत्मसात् करना भी जरूरी है। उनको बिना पढ़े ज्ञान हमारे पास नहीं आ सकता। कहा भी गया है:— “पुस्तकों में रखी हुई विद्या और दूसरों का दिया गया धन कभी समय पर काम नहीं आते। अतः सदैव अच्छी-अच्छी पुस्तकें पढ़नी चाहिए। उनका पालन करना चाहिए”।

प्रकृति का कालचक्र नियम देखिए

बचपन समय है, शक्ति है,
लेकिन पैसा नहीं है।

युवावस्था शक्ति है, पैसा है,
लेकिन समय नहीं है।

बुढ़ापा पैसा है, समय है,
लेकिन शक्ति नहीं है।

प्रकृति का कोई जवाब नहीं इसलिए प्रतिदिन हर्ष और खुशी उल्लास में जीवन बिताएं।

कोरोना काल में महाकुंभ



अरुण कुमार सैनी
अधिकारी सर्वेक्षक

इस वर्ष भी एक दशक के बाद कुंभ मेले का आयोजन एक बार फिर महामारी के दौर में हुआ। इससे पहले हरिद्वार में महाकुंभ 2010 में आयोजित हुआ था। इस बार कुंभ का आयोजन 11 वर्ष बाद हुआ। वैसे कुम्भ 12 वर्ष बाद आता है तथा 6 वर्ष बाद कुम्भिनी आती है। इस बार एक वर्ष पहले ही कुंभ मेले का आयोजन हुआ।

दुनिया के सबसे बड़े धार्मिक आयोजन में पहले भी महामारियाँ फैली है। सन् 1918-19 में स्पेनिश फ्लू के कारण दुनिया भर में करीब 5 करोड़ से 10 करोड़ लोग की मौत हुई थी जीवन समाप्त हो गया था इस बार फिर हरिद्वार में कुंभ मेला हेल्थ इमरजेंसी के समय में सम्पन्न हुआ। कोरोना महामारी के बावजूद रोजाना करीब 10 लाख लोग मेले में शामिल हुए। इस बार मेला केवल माह ही चला, जिसमें लगभग 10-12 करोड़ लोग सम्मिलित हुए। 19 वीं सदी और 20 वीं सदी के कुछ शुरुआती वर्षों में फैली हैजा और प्लेग जैसी बीमारियों के दौरान भी कुंभ मेले का आयोजन हुआ था।

इस बार कुंभ मेले में प्रशासन भी काफी सतर्क रहा तथा Covid-19 दिशानिर्देशों का पालन भी कराया गया। कुंभ में आने के लिए लोगों को 72 घंटे तक की RTPCR रिपोर्ट दिखाना अनिवार्य था तथा सामाजिक दूरी के साथ लोगों को मास्क लगाना अनिवार्य था। इस बार हरिद्वार में घाटों पर स्वचलित: Hand Sanitizer मशीनें भी काफी मात्रा में लगी हुईं दिखीं तथा जगह-जगह पर महिला एवं पुरुष पुलिस कर्मी भी तैनात रहे। जो लोग Covid-19 दिशानिर्देशों का पालन करते हुए नहीं दिखे, उन लोगों पर सख्ती बरतते हुए भी दीपक रावत, मेलाअधिकारी के निर्देशों पर भारी मात्रा में चालान भी काटे गये। प्रशासन ने कुंभ को कोरोना काल में सफल बनाने के लिए दिन-रात काम किया। तथा महाकुंभ 2021 को सफलतापूर्वक सम्पन्न कराया गया। महाकुंभ में देश के कोने-कोने से बड़ी संख्या में सभी अखाड़ों के साधुसंतों ने हरिद्वार में डेरा जमा लिया। कोरोना महामारी को देखते हुए इस बार प्रशासन ने साधुसंतों की भी बड़े पैमाने पर टेस्टिंग की गयी। टेस्टिंग करने पर अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद् के अध्यक्ष महंत नरेन्द्र गिरि तथा काफी और साधु संक्रमित पाए गये।

कोरोना से बचाने के लिए विशेष प्रबन्ध किये गये हैं। लोगों के स्नान के लिए 16 घाट बनाए गए हैं।

सोमवती अमावस्या के मौके पर कुंभ में स्नान के लिए लगभग 35 लाख लोग पहुँचे। जबकि पिछले कुंभ में यह संख्या 1.4 करोड़ थी।

इस बार के कुंभ को सम्पन्न कराने में प्रशासन को बहुत सारी भारी चुनौतियों का सामना करना पड़ा। व्यवस्थाओं को दुरुस्त रखने के लिए स्नान के लिए एक बार में केवल 50 लोगों का छोड़ा जाता था। उनके वपिस आने के बाद ही अगले 50 लोगों का जत्था स्नान के लिए छोड़ा जाता था। अन्ततः कुंभ मेला सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

हरिद्वार के विषय में पुराणों में अनेक आख्यान प्राप्त होते हैं। पुराणों में हरिद्वार को मायानगरी, गंगाद्वार, कपिला, कुशाव्रत आदि नामों से भी सम्बोधित किया गया है। पद्म पुराण में हरिद्वार का पौराणिक महत्व के सम्बन्ध में कहा गया है कि, विष्णुपत्नी माँ भागीरथी गंगा जब स्वर्ग से भगवान श्री विष्णु के चरण-कमल से निकल कर हरिद्वार पहुँची, तब पतित पावनी माँ गंगा का यह तीर्थ-स्थल भी देवताओं के लिए परम पवित्र तीर्थ-स्थल हो गया—

“हरिद्वारे यदा याता विष्णुपयोदकी तदा।
तदेव तीर्थं प्रवरं देवानामपि दुर्लभम् ॥”

“कुं पृथिवीम् उम्भते लध्वीकियते पापप्रक्षलनेन येन?”

(अर्थात्— जो पृथ्वी पर स्थित पाप को धुलकर हल्का कर दे, वह कुम्भ है।)

यात्रा संस्मरण तुंगनाथ तथा देवरिया ताल

मेरी यह यात्रा गत वर्ष 2020 के अक्टूबर माह की है जब मुझे मेरे मित्रों के साथ जाने का अवसर मिला। क्योंकि इस वर्ष कोरोना पूरी दुनिया में फैल गया था तथा कुछ महीनों के लिए सरकार ने सावधानियों के साथ प्रतिबंधों में कुछ ढिलाई दी तथा इस अवसर का लाभ लेते हुए हमने यह निर्णय लिया की तुंगनाथ के दर्शन के लिए चला जाए तथा प्लान कर

एक दिन प्रातः 5:00 बजे देहरादून से निकल पड़े, देहरादून से तुंगनाथ की दूरी 246 किलोमीटर है, तुंगनाथ पंच केदारों में से एक मंदिर है अन्य मंदिरों के नाम हैं केदारनाथ, मदमहेश्वर, कल्पेश्वर, रूद्रनाथ तथा तुंगनाथ इन में से केदारनाथ के दर्शन में पहले कर चुका हूँ तथा तुंगनाथ का प्लान इस बार बना। यह इसलिए भी बना क्योंकि तुंगनाथ में दर्शन योग्य अन्य और जगह भी हैं जैसे देवरिया ताल एवं चोपता तथा मित्रों के साथ यह जगह का आनन्द दोगुना हो जाता है। ऋषिकेश होते हुए राष्ट्रीय राजमार्ग 58 के द्वारा हमारा सफर शुहुआ मन में काफी उत्साह था काफी समय बाद घर में रहने के कारण जो एक अलग सी बैचेनी हो रही थी वो कुछ क्षीण हुई। यह इसलिए भी था क्योंकि मेरा स्वभाव घुमक्कड़ प्रकृति का है। तथा घर पर रहना मेरे स्वभाव में नहीं है। प्रकृति को नजदीक से देखने का मजा ही कुछ और है तथा जो शांति हमें प्रकृति के नजदीक रह कर प्राप्त होती है शायद ही कहीं और हो। प्रातः काल का सफर तथा रोमांच को हम जी रहे थे तथा एक जीवंतता सी आ रही थी। शहर से बाहर निकल कर प्राणों का एहसास हो रहा था जो शहर में हम कहीं छोड़ देते हैं। पहाड़ों का सफर काफी लंबा लगता है क्योंकि वाहनों की गति को अधिक बढ़ाया नहीं जा सकता है तथा समय काफी लगता है। एक जगह से दूसरी जगह जाने में क्योंकि हम निजि वाहन में थे तथा वाहन चलाने का कार्य मुझे करना पड़ा क्योंकि बाकी किसी साथी को वाहन च



विजय सिंह भंडारी
कम्प्यूटर टाईपिस्ट



लाना नहीं आता था तथा इतनी दूरी तय करने के लिए हमेशा दो व्यक्तियों का वाहन चलाना अनिवार्य हो जाता है ताकि एक व्यक्ति के थक जाने पर अन्य वाहन चलाये तथा सफर आराम से सुरक्षित तय हो जाए। खैर जैसी मेरी किस्मत परंतु यह मार्ग अति रमणीय है तथा आपको सफर में चलने का आनन्द अवश्य आएगा। क्योंकि ऋषिकेश से आपको गंगा के दर्शन होने शुरु होते हैं तथा पूरे मार्ग में यह निरंतर आपको दिखते रहते हैं। जिस समय हम गये थे उस समय चार-धाम मार्ग का कार्य भी जोरो पर चल रहा था तथा मार्ग में जगह-जगह पर भारी मशीनों द्वारा चट्टानों को तोड़ा जा रहा था, यदि यह मशीनें ना होती तो इस कार्य को करने कई वर्ष तथा मानव समय इस कार्य में व्यर्थ होता। यह विज्ञान का सकारात्मक योगदान है जो आज मनुष्य का कार्य सरल करता जा रहा है, ताकि मार्ग का चौड़ीकरण किया जा सके भले ही हमें कुछ असुविधा

हुई हो परंतु जब यह मार्ग पूर्णतः बन जाएगा तो मार्ग काफी सरल तथा दूरी कम समय में तय करना आसान हो जाएगा। यह सब कार्य देखते-देखते तथा रुकते-रुकते हम देवप्रयाग पहुँचे जहाँ हमने थोड़ा अपने आप को आराम दिया तथा कुछ नाश्ता कर हम देवप्रयाग के दर्शन कर आगे सफर को रवाना हुए। वैसे तो वहाँ कुछ समय रुकने का मन था। यहाँ अलकनंदा तथा मंदाकनी का संगम देखते ही बनता है। तथा यहाँ पर रघुनाथ का मंदिर भी है जो श्री राम का उत्तराखण्ड में एकमात्र मंदिर है। तथा उनकी चरण पादुका भी देखने योग्य है। जो कि संगम के पास एक शिला में पैरों की आकृति बन कर अंकित है। वहाँ से आगे हम श्रीनगर



को निकले जो कि 30 मिनट की दूरी पर है। तथा जैसा कि नाम से ही जाहिर है कि श्री-नगरी यहाँ पर श्री यंत्र टापू स्थित है जो कि

प्राकृतिक तौर पर बना है। यहाँ पर आबादी पहाड़ों के लिहाज से ज्यादा है, यह चारधाम मार्ग पर पड़ता है तथा यह नगर कभी गढ़वाल के राजाओं की राजधानी रही है। पौड़ी टिहरी तथा रुद्रप्रयाग का रास्ता यहाँ से जाता है। अब यहाँ पर रेलवे स्टेशन भी बन रहा है जो चौरास में स्थित है व अलकनंदा के पार है। यहाँ पर हम कुछ सामान खरीद कर आगे रुद्रप्रयाग मार्ग पर चल दिये। यह मार्ग काफी चौड़ा कर दिया गया है तथा पहले की अपेक्षा सुगम भी है परंतु कहीं-कहीं पर चट्टाने काफी कमजोर हैं तथा बार बार मार्ग पर मलबा तथा पत्थर आ जाते हैं जो की जान माल को क्षति पहुँचा सकते हैं। यहां से हम जैसे जैसे आगे बढ़े जैसे ही हम रुद्रप्रयाग पहुँचे तो इस बार बाईपास बनने से अब रुद्रप्रयाग जाने की आवश्यकता नहीं रही इस बाईपास से रुद्रप्रयाग में लगने वाला जाम अब खत्म हो चुका है। जिस यात्री को बद्रीनाथा जाना है केवल वही यात्री इस मार्ग से जायेगा। हमें तो तुंगनाथ केदारनाथ मार्ग के लिए बाईपास से ही जाना था। हम जैसे ही आगे को निकले तो मार्ग में जगह-जगह काम चल रहा था तथा मंदाकनी नदी के किनारे-किनारे हम वहाँ से पहुँचे। बड़ा ही मनोरम दृश्य था तथा काफी आनन्द के साथ सफर का पता नहीं चला। हम कब कुंड पहुँच गये वहाँ से एक मार्ग गुप्तकाशी केदारनाथ को जाता है तथा दूसरा मार्ग ऊखीमठ से होते हुए चोपता तुंगनाथ होते हुए मंडल को जाता है तथा वहाँ आगे चमोली बद्रीनाथ मार्ग पर गोपेश्वर को मिल जाता है। इसी मार्ग पर हमने आगे का सफर शुक्रिया तथा हम 3 बजे तक हम इस मार्ग पर सारी गाँव पहुँचे जहाँ से देवरिया ताल का पैदल मार्ग जाता है, क्योंकि यहाँ पहुँचते हुए हमारा काफी समय लग गया था तो हमने अगले दिन को ही ताल के लिए चढ़ाई करने का निर्णय लिया तथा सारी गाँव के होम स्टे में रुक कर वहाँ के स्थानीय भोजन का लुत्फ ऊठाया। हमने प्रातः 8 बजे गाँव से देवरिया ताल के लिए प्रस्थान किया। गाँव से 3 किमी की चढ़ाई शुक्रिया तथा पगडंडी मार्ग से होते हुए हमें काफी मनोरम दृश्य दिखाई दिये जो आपको मंत्रमुग्ध कर देते हैं तथा यह सोचने पर मजबूर कर देते हैं कि शहर की भाग दौड़ का अर्थ क्या है तथा क्या हमारे पास इतना भी समय नहीं रहा

की प्रकृति के दिये हुए ये नजारे हम देख सके। आखिर जीवन में हम फिर जी ही कहाँ रहे है। यहाँ आकर लगा की जीवन में कुछ समय खुद को भी देना आवश्यक है। खैर छोड़िये इन सब बातों को। जैसे ही हम देवरिया ताल पहुँचे वहाँ का दृश्य बड़ा ही मनोरम था तथा वहाँ से पहुँचते एक भव्य तथा व्यापक दृश्य दिखा जहाँ से पूरी पर्वत श्रृंखला तथा उनमे से खास कर चौखंबा पर्वत दृष्टीगोचर हुआ जिसकी परछाई देवरिया ताल पर एक मनोरम छायाचित्र बनाती है। यह सुंदर दृश्य देख लगा मानो हम स्वर्ग में हैं। तथा बादल बीच-बीच में आकर इसकी सुंदरता को और बढ़ा रहे थे। यहाँ पर हमारा कैम्पिंग करने का विचार था, परंतु वन पंचायत के लोगो द्वारा उसकी अनुमति नहीं मिली, वैसे यह सही भी है क्योंकि ऐसी जगह में कैम्पिंग करना तथा यहाँ कि प्राकृतिक सुंदरता को भी इन सबसे काफी नुकसान तो होता ही है। यहाँ पर हमने करीब 2 घंटा बिता कर तथा

यहाँ की वादियों की सुंदरता को अपनी यादो तथा कैमरे में सहेज कर हम वापस सारी गाँव को निकल गये। तथा यहाँ पर आने के बाद भूख काफी लग गई थी तथा रास्ते में गाँव की एक छोटी सी दुकान में हमने मैगी खाई जो की वहाँ आसानी से मिल गई थी। सारी गाँव हम 3 बजे तक पहुँच गए थे तथा अब हमने अपना सामान गाडी में रख कर चोपता को निकलने का



निर्णय लिया। सारी से चोपता की दूरी 28 किमी० है तथा मार्ग भी काफी संकरा है। चोपता के बुग्याल पहाड़ी घास के मैदान विश्व प्रसिद्ध है। यदि आप शहर के वासी हैं तो यहाँ की सुंदरता आपको मोहित कर दे तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है। परंतु यहाँ पर्यटन सिर्फ कुछ सालो में ही बढ़ा है इससे पहले इस स्थान में पर्यटक कुछ अधिक नहीं आते थे तथा कोरोना के चलते तो पर्यटन लगभग नहीं के बराबर था। यहाँ पर आपको टेंटो में ही रुकना पड़ेगा क्योंकि यहाँ पर स्थाई निर्माण पर रोक लगाई गई है तथा निजी कैम्प की भी अनुमति नहीं है तथा यहाँ पर बिजली भी नहीं आने दी गयी है इसलिए बिजली के लिए लोग सोलर पावर पर निर्भर है। परंतु हम तो घूमते हुए बनिया कुंड नामक स्थान पर ही रुके जो की चोपता से 5 किमी० पहले है क्योंकि यहाँ पर सुविधा अपेक्षाकृत काफी अच्छी थी तथा यहाँ से बुग्यालो का दृश्य देखते ही बनता है। यहाँ के दृश्यो को देखते हुए कब संध्या हो गई पता ही नहीं चला। तथा जहाँ हम टी-शर्ट पहने हुए थे अब हमे जैकेट की आवश्यकता लग रही थी। हम रात्रिभोज कर जल्दी सो गये क्योंकि प्रातः हमे तुंगनाथ मंदिर के लिए प्रस्थान करना था। प्रातः 5 बजे मैं सबसे पहले उठा तथा सब को उठाया जो काफी मुश्किल काम था, मेरे लिए सब को जल्दी ले जाना मुश्किल था। परंतु मैंने ऐसा कर ही दिया तथा तैयार होकर तुंगनाथ मंदिर के दर्शन हेतु हम लोग अब निकल गए। सुबह-सुबह कोहरा काफी हो रहा था तथा गाड़ी चलाने के लिए काफी मुश्किल हो रही थी। परंतु जैसे तैसे हम चोपता को पहुँचे जहाँ से तुंगनाथ मंदिर का 3 किमी० का पैदल चढ़ाई का मार्ग है जो की घास के बुग्यालों से होता हुआ जाता है। तुंगनाथ मंदिर तक यह मार्ग पक्का है जो कि स्थानीय प्रशासन द्वारा 3 वर्ष पहले ही बनाया गया है। इससे पहले यह मार्ग कच्चा था इस इस मार्ग में हमे काफी आनन्द आया। एक तो सुबह का समय और यह घासो के बुग्याल तथा सूर्य की मध्यम किरण जब पर्वतों पर पडती है तो जो दृश्य बनता है यह शब्दो में लिख पाना काफी कठिन है। धीरे-धीरे जैसे ही हम चढ़ाई की ओर जा रहे थे तो हिमालय की पर्वत श्रृंखला और स्पष्ट होती जा रही थी तथा बुग्यालो के दृश्य मानो किसी स्वर्ग

सी आकृति को प्रस्तुत करे रहे थे। हमे चढ़ाई चढ़ने में करीब 1:30 घंटे का समय लगा परंतु इन दृश्यों में समय तथा चढ़ाई का हमे पता भी नहीं लगा परंतु हमारी आयु अभी कम भी है, इसलिए भी शायद हम आसानी से चढ़ाई चढ़ गये परंतु जिन व्यक्तियों को सांस संबंधी समस्या हो तो उनहे कुछ समस्या हो सकती है, तथा सामान्य लोगों को थोड़ी पैदल यात्रा की तैयारी कर कर ही आना चाहिए। जैसे ही हम तुंगनाथ मंदिर प्रांगण मे पहुँचे तो हमने पहले वहाँ से चंद्रशिला जाने का निर्णय लिया। मंदिर से थोड़ी चढ़ाई पर चंद्रशिला नामक स्थान है, यहाँ पर पगडंडी मार्ग है तथा कच्चा भी। यदि आपके जूते की पकड़ अच्छी नहीं है तो यहाँ जाना थोड़ा खतरनाक हो सकता है, यह समुंद्र तल से 3690 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है तथा जैसा की नाम से ही विदित है कि चंद्र जैसी शिला यह चंद्र की आकृति बनाती है तथा यहाँ गंगा धाम नामक एक मंदिर भी है, यहाँ सूर्योदय देखने का हमारा ध्येय था परंतु हमे वहाँ पहुँचने में काफी समय लग गया था तथा वह दृश्य हम नहीं देख पाये। क्योंकि यह स्थान काफी ऊँचाई पर स्थित है इसलिए यहाँ से सारी पर्वत श्रृंखला का दृश्य दिखता है जैसे नंदादेवी, त्रिशूल पर्वत, केदार पर्वत, भृगूपंत तथा चौखंबा आदि । यहाँ करीब 1 घंटा रुक कर हम वापिस तुंगनाथ मंदिर को चल दिये। मंदिर में हमने प्रशाद चढ़ा कर हमने यहाँ पर स्थित दुकान में नाश्ता किया तथा फिर हम वापिस चोपता के लिए चल पडे। नीचे उतरने में हमे कम समय लगा। तथा करीब 1 बजे तक हम चोपता पहुँच गये थे इस सफर की यादों को अपने कैमरे कैद कर हम यहाँ से हमने सीधा देहरादून के लिए निकलना सही समझा तथा समय का पता ही नहीं चला की कब हम यहाँ पहुँचे और कितने जल्दी हम अब वापिस जा रहे है। देहरादून हम रात को करीब 11 बजे पहुँच गये तथा यह सफर भी हमारी अच्छी यादों के साथ समाप्त हुआ।

राजा भोज ने कवि कालीदास से दस सर्वश्रेष्ठ सवाल किए..

- | | |
|---------------------------------------------------|-------------------------------|
| 1- दुनिया में भगवान की सर्वश्रेष्ठ रचना क्या है ? | "मां" |
| 2 - सर्वश्रेष्ठ फूल कौन सा है ? | "कपास का फूल" |
| 3 - सर्वश्रेष्ठ सुगंध कौनसी है ? | वर्षा से भीगी मिट्टी की सुगंध |
| 4 - सर्वश्रेष्ठ मिठास कौनसी ? | "वाणी की" |
| 5 - सर्वश्रेष्ठ दूध ? | "मां का" |
| 6 - सबसे से काला क्या है ? | "कलंक" |
| 7 - सबसे भारी क्या है? | "पाप" |
| 8 - सबसे सस्ता क्या है ? | "सलाह" |
| 9 - सबसे महंगा क्या है ? | "सहयोग" |
| 10 - सबसे कडवा क्या है? | "सत्य" |

कलयुग का आरम्भ

पौराणिक मान्यता के अनुसार भारतीय संस्कृति को चार युगों में बांटा गया है—

1. सतयुग की आयु 17 लाख 28 हजार वर्ष
2. त्रेतायुग की आयु 12 लाख 96 हजार वर्ष
3. द्वापर की आयु 8 लाख 64 हजार वर्ष
4. कलयुग की आयु 4 लाख 64 हजार वर्ष बताई गई है।



भूपेन्द्र सिंह
सर्वेक्षण सहायक

कलयुग का आरम्भ (प्रारम्भ) कब हुआ इस सम्बन्ध में मतभेद हैं।

1. कलयुग का आरम्भ युधिष्ठिर के राज्यभिषेक के बाद कलिकाल का आरम्भ हुआ था वैसे कलयुग की शुरुआत गुजरात के मालका तीर्थ से हुई।
2. राजा परीक्षित से जुड़ी है कलयुग के आरम्भ संबंधी घटना कहते हैं कि कलयुग उनके मुकुट में छुपा हुआ था। उनके बाहर निकलकर राजा परीक्षित से जो वार्तालाप की उसका पुराणों में उल्लेख मिलता है।
3. आर्य भट्ट के अनुसार महाभारत के युद्ध 3136 ईसा पूर्व को हुआ था। महाभारत युद्ध के 35 वर्ष पश्चात् भगवान श्री कृष्ण ने देह छोड़ दी थी तभी से कलयुग का आरम्भ माना जाता है।
4. भागवत् पुराण के अनुसार श्री कृष्ण के देह छोड़ने के बाद 3102 ईसा पूर्व कलिकाल का आरम्भ हुआ था।
5. कलियुग संवत् के विषय में सबसे प्राचीन संकेत आर्यभट्ट द्वारा दिया गया है। उन्होंने कहा है कि जब वे 23 वर्ष के थे तब कलियुग के 3600 वर्ष व्यतीत हो चुके थे अर्थात् वे 476 ई0 में उत्पन्न हुए।
6. पाश्चात्यकालीन ज्योतिः शास्त्रीय ग्रन्थों के अनुसार कलियुग संवत् के 3719 वर्षों के उपरान्त शक संवत् का आरम्भ हुआ।

अधिकतर विद्वानों का मत है कि कलयुग का आरम्भ 3102 ईसा पूर्व हुआ था इस मान से कलयुग का काल 4,36,000/— साल लम्बा चलेगा। अभी कलयुग का प्रथम चरण ही चल रहा है जब पांच गृह मंगल, बुध, शुक्र, बृहस्पति और शनि मेष राशि पर 0 डिग्री पर हो गये थे। इसका मतलब 3102+2021=5123 वर्ष कलयुग के बीत चुके हैं और 4,26,881/— वर्ष अभी बाकी है।

धर्म की हानि चारों युगों में धर्म की हानि निम्न प्रकार से हुई—

सतयुग: सतयुग में मनुष्य की लम्बाई 32 फीट अर्थात् 21 हाथ बताई गई है। इस युग में पाप की मात्रा 0 प्रतिशत होती है। पुण्य की मात्रा 100 प्रतिशत होती है।

त्रेतायुगः—त्रेतायुग में मनुष्य की लम्बाई 21 फीट अर्थात् 14 हाथ थी पाप की मात्रा 25 प्रतिशत और पुण्य की मात्रा 75 प्रतिशत थी।

द्वापरयुगः—द्वापरयुग में मनुष्य की लम्बाई 11 फीट अर्थात् 7 हाथ थी पाप की मात्रा 50 प्रतिशत और पुण्य की मात्रा 50 प्रतिशत थी।

कलयुगः—कलयुग में मनुष्य की लम्बाई 5 फीट 5 इंच अर्थात् साढ़े तीन हाथ बताई गई। इस युग में धर्म का सिर्फ एक चौथाई अंश ही रह जाता है पाप की मात्रा 75 प्रतिशत पुण्य की मात्रा 25 प्रतिशत ही रह जायेगी।

महाभारत का युद्ध समाप्त हो चुका था। युधिष्ठिर ने अपने भाईयों के साथ मिलकर कई वर्षों तक हस्तिनापुर का राजपाट संभाला।

अंत में जब युधिष्ठिर अपने भाईयों और पत्नी द्रौपदी संग वन जाने लगे तो उन्होंने हस्तिनापुर का राजपाट अर्जुन के पौत्र और अभिमन्यू के पुत्र परीक्षित को सौंप दिया। परीक्षित भी अपने पिता और पितामाह की भांति महान योद्धा थे।

राजा परीक्षित शिकार खेलने वन में गये तभी उनकी नजर कलयुग पर पड़ी। राजा ने अपने तरकश से तीर निकाल लिया और बोले दुष्ट कौन है तू, मेरे राज्य में क्यों आया है। तब कलयुग ने कहा महाराज मैं कलयुग हूँ। मुझे अपने राज्य में आश्रय दीजिये। अब द्वापर का अन्त हो चुका है। महाराज परीक्षित बोले तुम मेरे राज्य में नहीं रह सकते। इसलिए शीघ्र अतिशीघ्र तुम यहां से चले जाओ अन्यथा मारे जाओगे। कलयुग बोला महाराज सम्पूर्ण पृथ्वी में तो आपका राज है। यहां तक की सूर्य चन्द्रमा भी आपके बाणों से दूर नहीं। अब आप ही बताइये मैं कहा जाऊं परीक्षित बोले तुम जाकर काम, क्रोध, मद और असत्य में निवास करो। कलयुग बोला आपने अपनी इच्छा से रहने के लिए मुझे एक स्थान दिया है अब आप मेरी इच्छा से मुझे एक स्थान दीजिए।

महाराज परीक्षित बोले ठीक है मांगो क्या चाहिये ? कलयुग बोला महाराज आप मुझे सोने में स्थान देने की कृपा करें। अर्थात् मैं सोने में निवास करना चाहता हूँ। महाराज परीक्षित ने कलयुग की बात मानकर उसे स्वर्ण में स्थान दे दिया। और कहा "हे कलयुग तुम अधर्म के मार्ग पर चलकर कमाये गए धन पर ही वास कर सकते हो"

तब से जितने भी गलत काम होते हैं, उस सब में कलयुग का वास होता है, इसलिये कहा जाता है कि गलत तरीके से धन अर्जित नहीं करना चाहिए।

क्योंकि उसमें कलयुग का वास होता है और वह धन आपको किसी भी प्रकार से फलीभूत नहीं होगा।

कामः— जिसमें वासना भरी हो और जो स्त्रियों को बुरी नजर से देखता हो। वहां पर भी कलयुग का वास होता है।

मदः— जहां पर मादक पदार्थों का सेवन किया जायें। जैसे शराब, वहां पर भी कलयुग होता है।

असत्यः— जब मनुष्य झूठ पर झूठ बोलता है तो पाप की श्रेणी में आता है। और वहां पर भी कलयुग का वास होता है।

मेरे द्वारा विभिन्न माध्यमों से जुटाई गई कलयुग की कहानी

कलयुग कहां वास करता है? जब से कलयुग की शुरुआत हुई तबसे मनुष्य दिनप्रतिदिन पाप करता जा रहा है क्योंकि कलयुग के प्रभाग से लोगों की मति भ्रष्ट हो गई है (कलयुग मनुष्य मस्तिष्क पर वास करता है) सदैव धर्म के मार्ग पर चलें। गलत काम करने से बचें।

रहिमन निज मन की व्यथा, मन में रखो गोय।
सुनि इठलैहैं लोग सब, बाटि न लैहै कोय।।

अर्थ: हमे अपने मन के दुख को अपने मन में ही रखना चाहिए। क्योंकि दुनिया में कोई भी आपके दुख को बाँटने वाला नहीं है। इस संसार में बस लोग दूसरों के दुख को जान कर उसका मजाक ही उड़ाना जानते हैं।

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोरो चटकाय।
टूटे पे फिर ना जुरे, जुरे गाँठ परी जाय।।

अर्थ: रहीम दास जी कहते हैं कि प्रेम का रिश्ता नाजुक होता है, इसे झटका देकर तोड़ना उचित नहीं होता है, यदि प्रेम का धागा एक बार टूट जाए तो फिर इसे मिलाना कठिन होता है और यदि यह मिल भी जाए तो टूटे हुए धागों के बीच में गाँठ पड़ जाती है।

हिन्दी भाषा महान

मेरी हिन्दी भाषा महान, जिससे कोई नहीं अनजान।
गद्य-पद्य का संग्रह इसमें, व्याकरण है अविराम।।

मेरी हिन्दी भाषा महान
कवि कबीर, सूरदास टैगोर रहीम और रसखान।
सबने अपनी कलम से इसका, खूब किया रसपान।।
मेरी हिन्दी भाषा महान

आजादी के आन्दोलन में जिसमें, खूब किया योगदान।
धर्म निरपेक्ष संविधान निर्माणी, सारी दुनिया करे बखान।।
मेरी हिन्दी भाषा महान

आज विश्व के कोने-कोने से गूँज रही ये आवाज।
हिन्दी को तुम अर्पण कर लो, संस्कृति की है ये खान।।
मेरी हिन्दी भाषा महान

सूत्रधार है ये एकता की, हिन्दी देश की है पहचान।
आजादी की स्वर्ण जयन्ती पर, इसको करो प्रणाम।।
मेरी हिन्दी भाषा महान

हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई मिलकर उठाते है कसम आज।
हिन्द देश की राष्ट्र भाषा का, आओ मिलकर करें विकास।।
मेरी हिन्दी भाषा महान।



अन्नू सिंह
डिजिटार्जिजर

महान मस्तिष्क उद्देश्य से भरे होते हैं। अन्य लोगो के पास केवल इच्छाएं होती हैं।

—वाशिंगटन इरविंग

आप जैसे विचार करेंगे, वैसे आप हो जाएंगे, अगर अपने आप को निर्बल मानेंगे तो आप निर्बल हो जायेंगे और यदि अपने आपको समर्थ मानेंगे तो आप समर्थ बन जायेंगे।

—स्वामी विवेकानंद

जब तक इस देश का कामकाज अपनी भाषा में नहीं चलेगा तब तक यह नहीं कह सकते कि देश में स्वराज्य है।

— मोरारजी देसाई

देहरादून—मेरी नजर से

देवभूमि उत्तराखण्ड की राजधानी देहरादून में एक सफर मेरी नजर से कीजिए।

देहरादून, आप तीन रास्तों (माध्यमों) से आ सकते हैं—

1. हवाई मार्ग (Jolly Grant Airport) यह देहरादून शहर से 25 कि०मी० दूरी पर है, और इस दूरी को आप निजी वाहन और टैक्सी से बहुत आसान तरीके से तय कर सकते हैं।
2. रेलवे मार्ग (लख्खीबाग रेलवे स्टेशन)— यह देहरादून में सभी स्थानों को जोड़ता है। आप यहां से देहरादून में किसी भी स्थान के लिए ऑटो, टैक्सी कर सकते हैं, साथ ही यहां से आपको मसूरी के लिए बस सर्विस भी आसानी से मिल जाएगी। यहां पर आप स्कूटी, मोटर साइकिल किराए पर लेकर देहरादून को बड़ी आसानी और सुविधापूर्वक भी घूम सकते हैं।
3. बस द्वारा (ISBT देहरादून)—यह देहरादून रेलवे स्टेशन से 6 कि०मी० की दूरी पर है। आप यहां से निजी वाहन एवं ऑटो और निजी बसों द्वारा अपनी यात्रा कर सकते हैं।



आत्रेय ज्ञान
सर्वेक्षक

और अगर आप अपने निजी वाहन से आते हैं तो आपको सफर करना बेहद सुविधाजनक होगा, क्योंकि यहां पर घूमने के लिए या तो आपको गाड़ी बुक करनी पड़ेगी या बार—बार ऑटो भी बदलना पड़ेगा जो कि काफी मुश्किलें देता है क्योंकि आपको अपनी जेब का भी ख्याल रखना है।

खैर देहरादून पहुंचते, सबसे पहले आपको अपने रुकने और ठहरने की व्यवस्था करनी है। इसके लिए आप इंटरनेट माध्यम से होटल की बुकिंग पहले से ही करा सकते हैं और होटल शहर के मध्य में हो तो ज्यादा अच्छा है ताकि आप सभी जगह आसानी से घूम सकें।

अगर आप ने होटल की बुकिंग नहीं की है तो आप प्रिंस चौक (रेलवे स्टेशन से 1 कि०मी० की दूरी पर) पर आसानी से रुक सकते हैं वहां आपको आपकी जेब अनुसार और सुविधा अनुसार सभी प्रकार के होटल और धर्मशालाएं मिल जाएगी।

ठहरने की व्यवस्था तो हो गयी और अब घूमने जाने से पहले खाने की व्यवस्था देखना पहले ज्यादा जरूरी है। तो फिर इसके लिए आप होटल में खा सकते हैं, इंटरनेट माध्यम (फोन नं०, swiggy, zomato. etc.) से मंगवाकर या फिर किसी अच्छे रेस्टोरेन्ट में भी खा सकते हैं और ये सब आपको आपकी रुकने की जगह के सुविधानुसार मिल जाएगा।

कुछ रेस्टोरेन्ट मैं आपको बताता हूं जो मैंने बहुत पसन्द किए—

1. दून दरबार (पल्टन बाजार एवं घण्टाघर के पास)

2. दावत खाना (पल्टन बाजार एवं घण्टाघर के पास)
3. आनन्दम (दिलाराम बाजार)
4. कालसंग
5. तिरुपति

और भी बहुत से बेहतर और लजीज खाने के स्थान हैं जहां आप जा सकते हैं।

इस सफर को आगे बढ़ाते हैं और अब घूमने की तैयारी करते हैं। देहरादून में आप कहां-कहां घूमेंगे, मैं वो आपको बताऊंगा और कैसे घूमेंगे वो आपको तय करना है क्या ? तो वो मैं आपको पहले ही बता चुका हूं।

चलिये पहले मैं आपको उन जगहों के नाम बता देता हूं जहां हम घूमने वाले हैं फिर एक-एक करके उनके बारे में जानेंगे।

1. सहस्त्रधारा (पूरा एक दिन अवश्य दें)
2. रोबर्स गुफा
3. टपकेश्वर मन्दिर
4. मालसी पार्क (चिड़ियाघर)
5. पल्टन बाजार
6. बुद्धा मंदिर
7. राजपुर रोड़
8. एफ0आर0आई0
9. और अन्त में सबकी जान-पहाड़ों की शान मसूरी

(एक से दो दिन अवश्य दें)



मसूरी के सफर में हम सिर्फ मसूरी ही नहीं बल्कि मसूरी के रास्ते में पड़ने वाले उन सभी जगहों को घूमेंगे जो मसूरी के सफर को और भी रोचक बनाते हैं।

1. सहस्त्रधारा- देहरादून से दूरी-16 कि०मी० (झरना एवं गुफाएं) **प्रसिद्धि:** पिकनिक, मौज मस्ती एवं ग्रीष्म ऋतु में बेहद लोकप्रिय झरना जिसमें लोग कॉफी समय तक नहाते हैं और आनन्द लेते है। यहां खाने-पीने एवं सामान खरीदने के लिए दुकानें भी हैं।
2. रोबर्स गुफा-पिकनिक, हाइकिंग और पानी में खेलने की लोकप्रिय जगह है। यहां पानी गुफा जैसे पहाड़ से बहती है जो कि गर्मी के मौसम में बेहद लोकप्रिय है। यहां खाने-पीने की भी उचित

व्यवस्था हैं। यहां पर आपको प्रवेश के लिए कुछ शुल्क भी देना पड़ेगा जो समय-समय पर बदलता रहता है। (मात्र: 60 रुपये प्रति व्यक्ति)

3. टपकेश्वर मंदिर— यह भगवान शिव शंकर का एक प्राचीन प्रसिद्ध मंदिर है। देहरादून से 7 कि०मी० दूरी पर स्थित है। कहा जाता है कि यहां शिवलिंग पर दूध की धारा टपकती थी जो कलियुग में जल के रूप में परिवर्तित हो गई।
4. मालसी डियर पार्क— देहरादून से 10 कि०मी० दूर स्थित यह पार्क प्रमुख वन्यजीव प्रेमियों का आकर्षण है। यहां आप छोटे-छोटे हिरण, तथा मोर, सांभर और प्राकृतिक वातावरण में पक्षियों की विस्तृत विविधता भी देख सकते हैं। यहां खाने-पीने की भी उचित व्यवस्था है। (प्रवेश शुल्क)
5. बुद्धा मंदिर—बुद्धा मंदिर एक बौद्ध मोनेस्ट्री है। यहां स्तूप की ऊंचाई 185 वर्गफुट और चौड़ाई 100 फुट है। यह दुनिया का सबसे बड़ा स्तूप है और यह बौद्ध कला व स्थापत्य कला का शानदार नमूना है।
6. पल्टन बाजार—यह खरीदारी करने के लिए देहरादून की सबसे पसंदीदा जगह के रूप में जाना जाता है। यहां पहाड़ी कल्चर और संस्कृति को प्रदर्शित करने वाली चीजें खरीदारी के लिए लगाई जाती हैं। इस बाजार में जरूरत का हर समान किफायती दामों पर मिलता है।
7. एफ०आर०आई०— यह एक शिक्षा परिषद् एवं भारतीय वानिकी शोध संस्थान है। मुख्य भवन का वास्तुशिल्प अत्यन्त लोकप्रिय एवं आकर्षण का केन्द्र है। यह संग्रहालय, वैज्ञानिक जानकारी के अतिरिक्त, पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र भी है।
8. राजपुर रोड— देहरादून की प्रसिद्ध रोड जहां आपको अपनी पसंद की हर चीज (खाना-पीना, कपड़े, घरेलू सामान इत्यादि) मिल जायेगी। यहां सस्ते से सस्ता और महंगे से महंगा सुंदर सामान मिल जायेगा। शाम का अत्यन्त लोकप्रिय एवं काफी भीड़-भाड़ वाला रहता है। यहाँ जाए तो देहरादून की चका-चौंध आपको जरूर मिलेगी जो आपको काफी पसन्द आएगी।

मसूरी

1. भट्टा फॉल
2. मसूरी लेक
3. लाइब्रेरी चौक, मसूरी
4. मॉल रोड, मसूरी
5. कम्पनी गॉर्डन
6. कैम्पटी फॉल
7. जॉर्ज एवरेस्ट (पूरा एक दिन दें)

(एक से दो दिन अवश्य दें)



भट्टा फॉल

1. भट्टा फॉल— यह मसूरी से 7 कि०मी० की दूरी पर मसूरी देहरादून रोड पर स्थित एक बेहद ही सुन्दर झरना है। इस झरने तक जाने के लिए आप 3 कि०मी० की पैदल दूरी, निजी वाहन अथवा रोप-वे सुविधा द्वारा (प्रवेश शुल्क) भी तय कर सकते हैं। यह एक आदर्श पिकनिक स्पॉट है जहां आपको पानी में खेले जाने वाली गतिविधियां एवं नहाने के लिए कई ताजे पानी के तालाब भी मिल जाएंगे। यहां की सुन्दरता एवं प्राकृतिक दृश्य कैमरे में कैद करने वाले होते हैं।
2. मसूरी लेक— मसूरी लेक एक सुंदर पिकनिक स्पॉट है। यहां आप आकर झील में नौका विहार का आनन्द उठा सकते हैं। यह मसूरी-देहरादून रोड में स्थित है। यहां आपको खाने-पीने और सामान खरीदने के लिए कई दुकानें भी हैं। साथ में कई तरह के गेम्स एवं हान्टेड हाउस भी हैं जो बच्चों को बेहद पसन्द आते हैं। (प्रवेश शुल्क) (बेहतर समय: मई से अक्टूबर)
3. लाइब्रेरी चौक, मसूरी— मसूरी पहुंचते ही आप इस चौक को पाएंगे। आप यहां कैमरे में कैद करने वाली बेहद खूबसूरत एवं प्राकृतिक तसवीरें ले सकते हैं।
4. मॉल रोड, मसूरी— यह रोड बेहद ही खूबसूरत दृश्यों एवं दून घाटी के प्राकृतिक नजारों के लिए अत्यन्त लोकप्रिय है। यहां सभी जगह बैठने की उचित व्यवस्था है जहां से आप इन नजारों का आनन्द ले सकते हैं। यहां पर आपको पहाड़ी कल्चर एवं सुन्दर हथकरगी वाले वस्त्र खरीदने को मिल जायेंगे और भी कई आकर्षक दुकानें जिनमें आप लकड़ी से बने सामान भी ले सकते हैं। खाने-पीने के लिए यहां कई अच्छे रेस्टोरेन्ट भी हैं और साथ में आपको रोड किनारे कई तरह के स्वादिष्ट खाने की चीजें भी मिल जाएगी। आप यहां काफी समय तक वक्त बिता सकते हैं।
5. कम्पनी गॉर्डन— यह मसूरी का सबसे पुराना गार्डन है जिसे कम्पनी बाग के नाम से भी जाना जाता है। यह मसूरी से 3 कि०मी० दूरी पर स्थित है। यहां आप किसी भी मौसम में जा सकते हैं। चारों तरफ हरियाली और फूलों से सजी यह जगह है, साथ में कई सारी एडवेंचर एक्टिविटी की सुविधा भी उपलब्ध है। कृत्रिम झरना, वैक्स म्यूजियम भी हैं, 3D सिनेमा, हान्टेड हाउस भी हैं। खाने-पीने के लिए रेस्टोरेन्ट के साथ सामान खरीदने की भी व्यवस्था है। (प्रवेश शुल्क)
6. कैम्प्टी फॉल— बेहद ही शानदार और मनमोहक जलप्रपात जो मसूरी से 15 कि०मी० की दूरी पर स्थित है। यह प्रपात लगभग 50 फीट की ऊंचाई से गिरता है। इस प्रपात का निचला झरना बहुत ही लोकप्रिय है और बड़ी भीड़ को आकर्षित करता है। जबकि ऊपरी अपेक्षाकृत शांत है। यहां रोप-वे की (शुल्क) सुविधा भी उपलब्ध है। यहां पर कई एक्टिविटी भी होती हैं और साथ ही आप आस-पास के वातावरण को अपने कैमरे में कैद कर सकते हैं। खाने-पीने एवं सभी प्रकार की



सुविधाएं उपलब्ध हैं। यहां आप खरीदारी भी कर सकते हैं। (मानसून छोड़ जाने का बेहतर समय मई से अक्टूबर)

7. जॉर्ज ऐवरेस्ट—यह एक चोटी है जिसका नाम सर जार्ज के नाम पर रखा गया। यह मसूरी से 6 कि०मी० दूरी पर स्थित एक ऊंची चोटी है जिसे लोग चढ़कर वहां के नजारों का आनन्द लेते हैं। यह निचले स्तर से लगभग 500 मी० ऊंची है जो लगभग 30 मिनट का समय लेती है। सूर्य उदय एवं सूर्यास्त के समय का नजारा बेहद मनमोहक एवं कैद करने वाला होता है। यहां का अनुभव जीवन पर्यन्त याद रहता है। यहां से आपको हिमालय की चोटी भी नजर आ जाती है। इतनी ऊंचाई से नजारा अत्यन्त लोकप्रिय है। निचले स्तर पर खाने-पीने की व्यवस्था भी है। यह स्थान बच्चों के लिए नहीं है क्योंकि यहां चढ़ाई है जो काफी मुश्किल और थकान वाली है इसलिए बच्चे न ही जाएं तो बेहतर है।

इतना सब घूमने के बाद आप बेहतर महसूस करेंगे और अपने सफर को जीवनभर याद रखेंगे। आपका यह सफर बार-बार आपको यहां खींचेगा। जब आप यहां से जायेंगे तो कई बेहद सुन्दर एवं लोकप्रिय दृश्य और समय अपने साथ लेकर जायेंगे।

स्वर्ग में सब कुछ है लेकिन मौत नहीं है,
गीता में सब कुछ है लेकिन झूठ नहीं है,
दुनिया में सब कुछ है लेकिन किसी को सुकून नहीं है,
और
आज के इंसान में सब कुछ है लेकिन सब्र नहीं है।

अगर मेरे पास एक रुपया है एवं आपके पास भी एक रुपया है और हम एक दूसरे से बदल ले तो दोनों के पास एक एक रुपया ही रहेगा।

किंतु
अगर मेरे पास एक अच्छा विचार है एवं आपके पास एक अच्छा विचार है और दोनों आपस में बदल ले तो दोनों के पास दो दो विचार होंगे

है न!!

तो अच्छे विचारों का आदान प्रदान जारी रखिये...
और
अपनी मानसिक पूंजी बढ़ाते रहिये।

कौन हो तुम

तुम ख्वाब हो, तुम हकीकत हो ?
क्या नाम दूँ तुम को.....
छायी रहती है.....
जब तुम्हारी यादों की बदली दिल पर,
सोते जागते प्रतिपल.....
तो तुम ख्वाब भी नहीं हो.....

छिप जाता है बादलों में चाँद जैसे
झलक एक दिखलाकर
ठीक वैसे ही तुम भी

तकती है निगाहें तुम्हारी राह
पाने को एक दीद,
पर तुम दूर गगन के मेरे चाँद हो.....
तो तुम हकीकत भी नहीं.....

क्या नाम दूँ ?
तुम मेरी चाहत की सीमा हो.....
या प्यार की टंडी बयार,
जिसके स्पर्श मात्र से,
शीतल होता है मन

कितने ही ख्वाब को हकीकत बनाने को.....
तो तुम न ख्वाब हो न हकीकत,
तुम सूरज की पहली किरण,
तुम पूनम के चाँद भी

तुम कोयल की कूक हो, तुम ऋतु बसंत भी
तुम घुमड़ते तोयद हो, तुम मयूर नृत्य भी
तुम हृदय में बसी मूर्ति हो,
और हृदय की धड़कन भी तुम.....

क्या नाम दूँ ?
तुम मेरी चाहत की सीमा नहीं,
तुम तो मेरी चाहत की, प्रेम की
किताब हो जिसमें

मेरी प्यार की न जाने कितनी परिभाषा अंकित है
तो क्या..... तुम मेरे प्यार की परिभाषा हो क्या नाम दूँ ?



अशोक सिंह
पति सीमा सिंह

महिला सशक्तीकरण



आरती रोहिला
एम०टी०एस०

“यत्र नार्यस्ते पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता” अर्थात् जहाँ नारियो की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं। मनु की ये पंक्तियाँ नारी के महत्व को दर्शाती हैं। भारत की प्राचीन सभ्यता और संस्कृति में नारी को उच्च स्थान दिया गया है। परन्तु पुरुष प्रधान संस्कृति के चलते नारी के स्थान का अवमूलन हुआ जिससे वह अपने प्रतिष्ठित स्थान से गिरकर पुरुष प्रधान समाज के भेदभाव पूर्ण दृष्टिकोण का शिकार हो गई और वर्तमान में अपने सशक्तीकरण के लिए प्रयासरत है।

महिला सशक्तीकरण से अभिप्राय महिलाओं की परिस्थिति और उनके अधिकारों में वृद्धि करने से है। वैश्विक स्तर पर महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए वोट देने का अधिकार न्यूजीलैंड द्वारा 1843 में दिया गया। वर्तमान में नारी पुरुष प्रधान वर्चस्व वाली सत्ता को चुनौती देते हुए प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषों के साथ कन्धे-से-कन्धा मिलाते हुए प्रयासरत है। कवि जय शंकर जी की ये पंक्तियाँ अब प्रकट होने लगी हैं।

“ नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नभ पग तल में, पीयूष स्त्रोत-सी बहा करो, जीवन के सुंदर समतल में”

देवो की विजय, दानवो की हारों का होता। युद्ध रहा, संघर्ष सदा, उर अंतर में जीवित रह नित्य विरुद्ध रहा। आसूँ से भीगे आंचल पर मन का सबकुछ रखना होगा, तुमको अपनी स्मितरेखा से यह संधि पत्र लिखना होगा।।

महिला सशक्तीकरण की दिशा में 8 मार्च को महिला दिवस के रूप में मनाया जाता है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 15(1) के अंतर्गत लिंग के आधार पर भेदभाव को प्रतिबंधित करने के साथ-साथ 72वें संविधान संशोधन द्वारा स्थानीय निकासों में एक तिहाई सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित हैं। महिलाओं की स्थिति को मजबूत करने के लिए घरेलू हिंसा अधिनियम 2005 लागू किया गया है। आज भारत सरकार द्वारा महिला सशक्तीकरण के लिए बहुत सी योजनाएँ चलायी गईं, जैसे प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना, बेटा बचाओ बेटा पढ़ाओ, सुरक्षित मातृत्व आश्वासन सुमन योजना, सुकन्या योजना आदि। सदियों से ही भारतीय समाज में नारी की अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उसी के बलबूते पर भारतीय समाज खड़ा है। नारी ने भिन्न-भिन्न रूपों में अत्याधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। चाहे वह सीता हो, झँसी की रानी हो, इन्दिरा गाँधी हो या सरोजनी नायडू हो। आज महिलाएँ अनेक रूप में पुरुषों को पीछे छोड़ते हुए आगे बढ़ रही हैं। जिनमें वैज्ञानिक कार्यक्रम, खेल-कूद आदि क्षेत्र प्रमुख हैं। इस प्रकार नारी पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर सफलता की सीढियों की ओर अग्रसर हैं।

“अपने होंसले से नारी भर रही ऊँची उड़ान, न कोई शिकायत न ही कोई थकान।।”

दो पतवारवाली नाव

यह देश दो पतवार वाली नाव है।
एक तरफ शहर तो दूसरी और गाँव है।
कहीं पे धूप कहीं पे छाँव है।
नित्य रोज यहाँ लगते नये दाँव है।।

सनातन धर्म यहाँ हिमालय ताज है।

राजभाषा हिन्दी पर सबको बड़ा नाज है।
इंग्लिश की यहाँ पर हर जगह छाप है।
जिन्दे को भी बोल रहा डैड अपना बाप है।
वाह रे देश के नौनिहाल मम तेरी मात है।
रह गया भेद एक मात्रा का साफ है।
तभी तो बीबी को कहता मेमसाब है।
तुमने अपने पुरखों से क्या सीखी यही सौगात है।
हैलो हाय गुड मॉर्निंग भूल गया सुप्रभात है।
सरकारी मुलाजिमों के बड़े ख्याल है।
हिन्दी बढ़ाने हेतु कान्वेंट में पढ़ा रहे अपने लाल है।
सरकारी महकमों का और भी बुरा हाल है।
हिन्दी के नाम पर कछुआ चाल है।
हिन्दी की स्वर्ण जयंती पर है बड़ा मलाल है।
पचास साल बाद भी हम अंग्रेजी के दलाल है।
हर हिन्दुस्तानी को मेरा यह फरमान है
हिन्दी पूरी दुनिया की भाषा हो यही बस अरमान है
यह देश दो पतवार वाली नाव है
एक तरफ शहर तो दूसरी और गाँव है।



अन्नू सिंह
डिजिटल आर्टिस्ट

रहिमन विपदा हू भली, जो थोरे दिन होय।
हित अनहित या जगत में, जान परत सब कोय।।

अर्थ:- रहीम दास जी कहते हैं कि यदि विपत्ति कुछ समय के लिए हो तो वह भी ठीक ही है, क्योंकि विपत्ति के समय में ही सबके विषय में जाना जा सकता है कि संसार में कौन हमारा हितैषी है और कौन नहीं है।

मुझे सब्र है

किसी महफिल की शान न सही,
किसी की तन्हाई का साथी हूँ ,
मुझे सब्र है ।

किसी रईस की जागीर न सही,
किसी गरीब की दौलत हूँ ,
मुझे सब्र है ।

किसी के चेहरे की मुस्कान न सही,
किसी के आँसुओं का बाँध हूँ ,
मुझे सब्र है ।

किसी की दुआओं में शामिल न सही,
बद्दुआओं से दूर हूँ ,
मुझे सब्र है ।

किसी के फैसलों में हकदार न सही,
अपने फैसलों का मालिक हूँ ,
मुझे सब्र है ।

किसी तूफान को रोकने की ताकत न सही मुझमे,
अपने शिकारे का कप्तान हूँ ,
मुझे सब्र है ।



रोनिका सिंह फोगाट
एम०टी०एस०

वृक्ष कबहूँ नहीं फल भखें, नदी न संचै नीर ।
परमारथ के कारने, साधुन धरा सरीर ।।

अर्थ:— वृक्ष कभी अपने फल नहीं खाते, नदी कभी अपने लिए जल संचित नहीं करती, उसी प्रकार सज्जन पुरुष परोपकार के लिए देह धारण करते हैं ।

रूठे सुजन मनाइए, जो रूठे सौ बार ।
रहिमन फिरि— फिरि पोइए, टूटे मुक्ता हार ।।

अर्थ:— रहीमदास कहते हैं कि यदि आपका प्रिय सौ बार भी रूठे, तो भी रूठे हुए प्रिय को मनाना चाहिए । क्योंकि यदि मोतियों की माला टूट जाए तो उन मोतियों को बार-बार धागे में पिरो लेना चाहिए क्योंकि मोतियों की माला हमेशा सभी के मन को भाती है ।

भारत का संविधान कुछ जानकरियाँ

1. संविधान सभा की प्रथम बैठक हुई – 9 दिसम्बर 1946
2. भारत गणतंत्र बना – 26 जनवरी 1950
3. संविधान सभा ने राष्ट्रगान को स्वीकार किया – 24 जनवरी 1950
4. सम्पत्ति के अधिकार को किस संविधान संशोधन के द्वारा हटा दिया गया – 44 वें
5. किस अनुच्छेद के द्वारा 6-14 वर्ष के बच्चों को शिक्षा का अधिकार है—अनुच्छेद 21 'A'
6. अनुच्छेद 40 राज्य को निर्देश देता है कि वह – ग्राम पंचायतों का संगठन करे।
7. संविधान में मौलिक कर्तव्य को जिस समिति की अनुशंसा के आधार पर शामिल किया गया – स्वर्ण सिंह समिति
8. निर्विरोध चुने जाने वाले राष्ट्रपति थे – नीलम संजीव रेड्डी
9. लोकसभा की अधिकतम सदस्य संख्या है— 552
10. राज्यसभा के अधिकतम संख्या है – 250
11. संघ राज्य क्षेत्रों का प्रशासन चलाता है – राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त प्रशासक
12. पहले भारतीय गवर्नर जनरल थे – चक्रवर्ती राजगोपालाचारी
13. जिस राज्य में विधानसभा सदस्यों की संख्या अधिकतम है—उत्तर प्रदेश
14. संविधान के जिस अनुच्छेद के द्वारा राष्ट्रपति को उच्चतम न्यायालय से परामर्श का अधिकार है – अनुच्छेद 143
15. भारत में अब तक राष्ट्रीय आपात की घोषणा की जा चुकी है – 3 बार
- 16- राष्ट्रपति जिस अनुच्छेद के अन्तर्गत राष्ट्रीय आपात की घोषणा करता है— अनुच्छेद 352
17. राष्ट्रपति शासन जिस अनुच्छेद के अंतर्गत है – अनुच्छेद 356
18. राष्ट्रपति शासन की अधिकतम अवधि है – 6 माह से 3 वर्ष तक अधिकतम बढ़ाया जा सकता।
19. किस वित्तीय आपात जिस अनुच्छेद के आधार पर की जा सकती है – अनुच्छेद 360
20. वर्तमान में भारतीय उच्च न्यायालयों की संख्या है—25



अरुण कुमार तेश्वर
वरिष्ठ रिप्रोग्राफर

वे रहीम नर धन्य हैं, पर उपकारी अंग।
बांटन वारे को लगे, ज्यों मेंहदी को रंग।।

अर्थ:— रहीम दास जी कहते हैं धन्य है ये लोग जिनका जीवन सदा परोपकार के लिए बीतता है, जिस प्रकार मेंहदी बांटने वाले के अंग पर भी मेंहदी का रंग लग जाता है, उसी प्रकार परोपकारी का शरीर भी सुशोभित रहता है।

अस्तित्वहीन नहीं मैं

ज्यों-ज्यों नभ मे उड़ना चाहे मन
पक्षियों समान हो प्रमुदित विचरण
ऊँचे गगन से जग अवलोकन
क्यों संभव नहीं हो पाता है
सिसकी-सिसकी आह हमारी
क्यों कोई नहीं सुन पाता है



सीमा सिंह
वरिष्ठ रिप्रोग्राफ़र

प्रगतिपथ पर श्रम से जब भी
आगे कदम बढ़ाते हम
खुशियों से जी लेंगे हम भी
ठान हृदय में जाते हैं
नभ को छू ले आगे बढ़ ले
पर उससे पहले पंख हमारे
क्यों कोई नोच ले जाता है
सिसकी-सिसकी आह हमारी
क्यों कोई नहीं सुन पाता है

कभी-कभी तो मन ये पूछे
क्यों आगे बढ़ने की ठानी हो
नियति होती यदि गगन तुम्हारा
नारी जन्म क्या पाती तुम
पर हृदय नहीं एक सुनता है
फिर-फिर जतन करे उड़ना है
अपने नित-नित जतन की खातिर
पुनः संघर्ष थपेड़े खाता है
सिसकी-सिसकी आह हमारी
क्यों कोई नहीं सुन पाता है

जग समझाता नियति समझो
अपनी हृदें न भूलो तुम
अपने ही आंगन में फुदको बस
नभ की कभी न ठानो तुम
आसमान है नहीं तुम्हारा
इस पर बस अधिकार हमारा
प्रतिबंधो की डोर में बंधकर
फिर हृदय जड़ हो जाता है
सिसकी-सिसकी आह हमारी
क्यों कोई नहीं सुन पाता है

विद्रोही मन विद्रोह से अपने
फिर तन को भी झुलसाता है
आहत होता मन, तो आहत है तन
अरमानों का संबल गिर ही जाता है

क्या नियति हमारी चारदीवारी
मृगमारिचिका है नभ का सपना
हृदय भेदता गहराई मे
फिर प्रश्न कोंध ये जाता है
सिसकी-सिसकी आह हमारी
क्यों कोई नहीं सुन पाता है
या सिसकी-सिसकी आह हमारी
न कोई भी सुनना चाहता है

पर हृदय से मैने ठाना है
की हार कभी ना मानूंगी
अथक परिश्रम कर अपने
अस्तित्व पर मान कराऊंगी
एक दिन वो दिन भी आयेगा
मन भेदभाव न पायेगा
तब सिसकी-सिसकी आह हमारी
कोई नही सुन पायेगा

न तो कष्टों को निमंत्रण दो और न उनसे भागो जो आता है उसे झेलो। किसी चीज से प्रभावित न होना ही मुक्ति है।

किसी भी देश की स्वाधीनता स्थिर रखने के लिए उस देश की अपनी भाषा का होना परम आवश्यक है।

— महात्मा गाँधी।

क्रोध से भ्रम पैदा होता है, भ्रम से बुद्धि व्यग्र होती है तब तर्क नष्ट हो जाता है।

जब तर्क नष्ट हो जाता है तब व्यक्ति का पतन हो जाता है।

— श्रीमद भगवत गीता

मेरा गाँव

मेरे गाँव का नाम भटगाँव है, जो हरियाणा के सोनीपत जिले में स्थित है मेरा गाँव बड़ा ही सुंदर और मनोहारी है तथा गाँव में हरे भरे पेड़ों व बड़े खेतों से घिरा है वहाँ चारों ओर हरियाली नजर आती है जो आँखों को बहुत सुहाती है। गाँव में एक नदी भी है जिसके किनारे बहुत से सुगंधित फूलों के पेड़ भी मौजूद हैं नदी के पानी से हमारे गाँव के खेतों की सिंचाई होती है जिससे गाँव के खेतों में हरियाली रहती है और हमारे किसान भी उससे खुश रहते हैं। हमारे गाँव में सभी सड़के पक्की हैं जिससे कि गाँव के लोगों को कहीं आने जाने में कठिनता का सामना नहीं करना पड़ता। बच्चों के खेलने के लिए मैदान भी है। जिससे बच्चों का शरीरिक विकास अच्छी तरह से होता है। गाँव में बिजली व पानी की अच्छी सुविधा है जिससे सारे काम अच्छे से होते हैं। हमारे गाँव में बच्चों के पढ़ने के लिए सरकारी स्कूलों की भी सुविधा है जिससे बच्चों को बाहर के गाँव में पढ़ने के लिए नहीं जाना पड़ता गाँव में पंच और सरपंच दोनों के सहयोग से पंचायत अच्छी है जिससे गाँव में समय-समय पर जो भी जरूरत होती है समय से अच्छे से पूरी हो जाती है। मेरा गाँव बहुत ही खुशहाल गाँव है जहाँ पर सारे लोग एक दूसरे से मिल कर रहते हैं व सब में परस्पर भाईचारा बना रहता है यहाँ लोग एक दूसरे की मदद करते हैं और एक दूसरे को आगे बढ़ने का मौका भी देते हैं। मेरे गाँव के लोग भोले भाले व ईमानदार हैं। छोटा सा गाँव होने के बावजूद भी मेरे गाँव में सभी प्रकार की सुख सुविधा होने से सभी लोग खुशहाल जीवन जीते हैं। मेरा गाँव मुझे बहुत भाता है।



जसवीर सिंह
एम०टी०एस०

वो भी क्या दिन थे

मम्मी की गोद और पापा के कंधे
ना पैसे की सोच और ना ही जीवन की फिक्र ।
ना कल की चिंता और ना ही भविष्य के सपने ।
लेकिन अब कल की है फिक्र और अधूरे हैं सपने ।
पीछे मुड़ कर देखा तो बहुत दूर थे वो अपने,
मंजिलों को ढूँढते कहाँ खो गये हम,
क्या सच में इतने बड़े हो गये हम ।

स्वतंत्रता दिवस

स्वतंत्रता सेनानियों को, उन वीर बलिदानियों को
भारत स्वतंत्र कराने हेतु, जो प्राण तजे थे उन स्वाभिमानीयों को
अपने निष्ठल हृदय से, श्रद्धा सुमन हम अर्पित करते हैं
आओ इस स्वतंत्रता दिवस पर, कुछ याद हम उनको करते हैं।

जिन माताओं ने, अपने देश की खातिर
अपने लालों को कुर्बान किया
और धन्य हैं वो बहनें,
जिन्होंने अपने राखी को बलिदान किया
वो जांबाज इसी विश्वास के साथ
शत्रुओं से जूझ गये।

अपने देश की आजादी को, माता पिता, भाई बहन
पत्नी बच्चे सब भूल गये
उन स्वाभिमानीयों को, उन कालजयी प्राणों को,
अपने निष्ठल हृदय से श्रद्धा सुमन हम अर्पित करते हैं
आओ इस स्वतंत्रता दिवस पर, कुछ याद हम उनको करते हैं।

आज इस स्वतंत्र भारत में, पंछी बन हम विचरण करते हैं
भारतवासी होने का मान हम प्रतिश्रण भरते हैं
अपने अधिकारों की खातिर तत्पर सदा ही रहते हैं
पर अपने कर्तव्यों का, क्या पालन प्रतिपल करते हैं
जिन वीरों ने कर्तव्यों के कारण, प्राणों का बलिदान दिया।

अपने निष्ठल हृदय से श्रद्धा सुमन हम अर्पित करते हैं
आओ इस स्वतंत्रता दिवस पर याद हम उनको करते हैं।

छब्बीस ग्यारह के आतंकवाद में,
जो प्राण थे अपने हार गये।

उस भयावह आतंकवाद से, कितने चूल्हे थे खाक हुए
आतंकवाद से लड़ने हेतु प्रण हम प्रतिपल करते हैं
उन निर्दोष भाई बहनों का, मनन हम मन से करते हैं
अपने निष्ठल हृदय से श्रद्धा सुमन हम अर्पित करते हैं
आओ इस स्वतंत्रता दिवस पर याद हम उनको करते हैं।



सीमा सिंह
वरिष्ठ रिप्रोग्राफर

अनुभव कहता है

खामोशियाँ ही बेहतर हैं,
शब्दों से लोग रूठते बहुत हैं

जिंदगी गुजर गयी....
सबको खुश करने में ..
जो खुश हुए वो अपने नहीं थे,
जो अपने थे वो कभी खुश नहीं हुए...
कितना भी समेट लो..
हाथों से फिसलता ज़रूर है..
ये वक्त है साहब..
बदलता ज़रूर है..

इंसान की अच्छाई पर,
सब खामोश रहते हैं...
चर्चा अगर उसकी बुराई पर हो,
तो गूँगे भी बोल पड़ते हैं.

धैर्य

धैर्य जीवन में बहुत काम आता है,
बड़ी से बड़ी सफलता हमें दिलाता है,
हमें वह कभी उदास ना करता है,
जीवन में हमें आगे बढ़ाता है।

धैर्य रखना जिसने भी सीख लिया है,
जीवन में उसने बड़ा मंत्र सीख लिया है,
हर पल जीवन में खुशियाँ है,
धैर्य से ही जीवन में खुशियाँ है।

धैर्य जिसने भी रखा है,
उसका जीवन दुखों से दूर रखा है,
धैर्य जीवन में बहुत काम आता है,
बड़ी से बड़ी सफलता हमें दिलाता है।

धैर्य हमारे जीवन में काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है,
यदि हम जीवन में धैर्य रखते हैं तो बहुत कुछ प्राप्त कर सकते हैं,
यहाँ तक की बड़ी से बड़ी सफलता भी धैर्य रखकर प्राप्त कर सकते हैं।
बहुत सारे लोगों ने यह साबित किया है कि,
धैर्य रखकर हम अपने सारे सपनों को भी पूरा कर सकते हैं।



अरुण कुमार सैनी
अधिकारी सर्वेक्षक



रोनिका सिंह फोगाट
एम०टी०एस०

एक प्रेरक पत्र

घनश्यामदास जी बिड़ला (GD Birla) का अपने पुत्र बसंत कुमार जी बिड़ला (BK Birla) के नाम में लिखित एक अत्यंत प्रेरक पत्र जो हर एक को जरूर पढ़ना चाहिए -

चि. बसंत.....

यह जो लिखता हूँ उसे बड़े होकर और बूढ़े होकर भी पढ़ना, अपने अनुभव की बात कहता हूँ।

संसार में मनुष्य जन्म दुर्लभ है और मनुष्य जन्म पाकर जिसने शरीर का दुरुपयोग किया, वह पशु है। तुम्हारे पास धन है, तन्दुरुस्ती है, अच्छे साधन हैं, उनको सेवा के लिए उपयोग किया, तब तो साधन सफल है अन्यथा वे शैतान के औजार हैं। तुम इन बातों को ध्यान में रखना।



अरुण कुमार सैनी
अधिकारी सर्वेक्षक

धन का मौज-शौक में कभी उपयोग न करना, ऐसा नहीं की धन सदा रहेगा ही, इसलिए जितने दिन पास में है उसका उपयोग सेवा के लिए करो, अपने ऊपर कम से कम खर्च करो, बाकी जनकल्याण और दुखियों का दुख दूर करने में व्यय करो। धन शक्ति है, इस शक्ति के नशे में किसी के साथ अन्याय हो जाना संभव है, इसका ध्यान रखो की अपने धन के उपयोग से किसी पर अन्याय ना हो।

अपनी संतान के लिए भी यही उपदेश छोड़कर जाओ। यदि बच्चे मौज-शौक, ऐश-आराम वाले होंगे तो पाप करेंगे और हमारे व्यापार को चौपट करेंगे।

ऐसे नालायकों को धन कभी न देना, उनके हाथ में जाये उससे पहले ही जनकल्याण के किसी काम में लगा देना या गरीबों में बाँट देना। तुम उसे अपने मन के अंधेपन से संतान के मोह में स्वार्थ के लिए उपयोग नहीं कर सकते।

हम भाइयों ने अपार मेहनत से व्यापार को बढ़ाया है तो यह समझकर कि वे लोग धन का सदुपयोग करेंगे।

भगवान को कभी न भूलना,

वह अच्छी बुद्धि देता है,

इन्द्रियों पर काबू रखना, वरना यह तुम्हें डुबो देगी।

नित्य नियम से व्यायाम-योग करना। स्वास्थ्य ही सबसे बड़ी सम्पदा है। स्वास्थ्य से कार्य में कुशलता आती है, कुशलता से कार्यसिद्धि और कार्यसिद्धि से समृद्धि आती है।

सुख-समृद्धि के लिए स्वास्थ्य ही पहली शर्त है। मैंने देखा है की स्वास्थ्य सम्पदा से रहित होनेपर करोड़ों-अरबों के स्वामी भी कैसे दीन-हीन बनकर रह जाते हैं। स्वास्थ्य के अभाव में सुख-साधनों का कोई मूल्य नहीं। इस सम्पदा की रक्षा हर उपाय से करना। भोजन को दवा समझकर खाना। स्वाद के वश होकर खाते मत रहना। जीने के लिए खाना हैं, न कि खाने के लिए जीना।

घनश्यामदास बिड़ला

नोट :

श्री घनश्यामदास जी बिरला का अपने बेटे के नाम लिखा हुवा पत्र इतिहास के सर्वश्रेष्ठ पत्रों में से एक माना जाता है। विश्व में जो दो सबसे सुप्रसिद्ध और आदर्श पत्र माने गए है उनमें एक है 'अब्राहम लिंकन का शिक्षक के नाम पत्र' और दूसरा है 'घनश्यामदास बिरला का पुत्र के नाम पत्र।

(अग्रेषित सन्देश)

मोबाइल (Mobile)

आज हम जिस मोबाइल का प्रयोग करते हैं उसका अविष्कार मार्टिन कपूर ने 3 अप्रैल 1973 किया था। वह अमेरिका में रहते थे उन्होंने Electrical Engineering में ME की डिग्री की थी मार्टिन कपूर उस समय मोटोरोला कंपनी के एक शोधकर्ता कार्यकारी थे, मार्टिन ने इस मोबाइल से पहला कॉल अपने प्रतिद्वंद्वी बैल लेबोरेटरी के इंजीनियर Dr. Joel S. Engel को किया था।



आशीष राणा
(पुत्र भूपेन्द्र सिंह)

मार्टिन द्वारा बनाये गये फोन का नाम Motorola Dyna Tac रखा गया था दुनिया का यह छोटा मोटा पहला फोन नहीं था बल्कि इसका आकार एक ईट जितना बड़ा था। मोटोरोला के इस मोबाइल फोन की, लम्बाई 9 इंच (लगभग 22.9 सेंटीमीटर) और इसका वजन 1.1 किलोग्राम का यह फोन सेलुलर नेटवर्क की तकनीक पर काम करता था। इस मोबाइल को फुल चार्ज करने के बाद 30 मिनट तक बात हो सकती थी, जबकि इसे फुल चार्ज होने में 10 घंटे का समय लगता था। इस फोन की कीमत अत्याधिक थी। इस फोन में कुछ कमियां भी थी जिन्हें दूर करने में लगभग एक दशक का समय लग गया। इस बीच सेलुलर नेटवर्क को भी सशक्त बनाया गया तत्पश्चात् सन् 1983 में इसे बाजार में लोगों के लिए उपलब्ध कराया गया। इस मोबाइल का नाम Dyna Tac 8000 X रखा गया था इस मोबाइल की कीमत 3995 डॉलर (आज के समय में लगभग 2.80 लाख रुपये) इस फोन में 30 लोगों के कॉन्टेक्ट भी स्टोर करने का option उपलब्ध था।

भारत में मोबाइल (अपने देश) सन् 1983 में लॉन्च किया गया था परन्तु यह फोन अमेरिका के बाजार में उपलब्ध था अपने देश में पहली मोबाइल सर्विस सन् 1995 में शुहूर्ई थी उस समय हमारे देश के केन्द्रीय संचार मंत्री श्री सुखराम ने 31 जुलाई 1995 को वेस्ट बंगाल के मुख्यमंत्री श्री ज्योति बासु से मोबाइल पर बात की थी। भारत में यह पहला मोबाइल कॉल दिल्ली के संचार भवन से कलकत्ता की राइटर्स बिल्डिंग पर कनेक्ट था अपने देश में इस मोबाइल सर्विस को उपलब्ध कराया गया था।

दुनिया में आज लगभग 5.19 बिलियन (लगभग 15 करोड़) लोग मोबाइल का प्रयोग करते हैं। अपने देश में 1.21 बिलियन लोग (लगभग 121 करोड़ लोग) मोबाइल फोन का प्रयोग करते हैं।

बाजार में उपलब्ध फोन: आज के समय में बाजार में मुख्यतया तीन प्रकार के मोबाइल फोन चलन में हैं,

1. **सेलफोन**— शुरुआती दौर में आये इस फोन से कॉल करना टैक्स्ट मैसेज भेजना या मोबाइल नं0 सेव करना यही काम हो सकते थे। कम फीचर की वजह से इस फोन की कीमत बाजार में कम थी, नई तकनीक के आ जाने से इसकी डिमांड घट गई।

2. **फीचर फोन**— इस फोन से कॉल करना, मैसेज करने के अलावा फोटो खींचना वीडियो बनाना, गाने सुनना, इंटरनेट चलना व मल्टीमीडिया के अन्य फंक्शन उपलब्ध रहते हैं, ये फोन स्मार्ट फोन की अपेक्षा सस्ते होते हैं।
3. **स्मार्ट फोन**— सभी सुविधाओं से परिपूर्ण फोन स्मार्ट फोन कहलाते हैं, इसमें एंडवांस ऑपरेटिंग सिस्टम होता है जो मुख्यता चार प्रकार के होते हैं, जैसे एंड्रॉइड, एप्पल IOS, ब्लैकबेरी और विंडो आधारित मोबाइल फोन स्मार्ट फोन। टच स्क्रीन सुविधा प्रदान करते हैं और इसमें 4G इंटरनेट, Wifi कनेक्टिविटी, HD कैमरा, GPs और ऐसे कई एंडवांस फीचर हैं।

मोबाइल फोन के नुकसान— मोबाइल फोन की लत आज युवाओं, बुजुर्गों, विद्यार्थियों में इतनी अधिक पड़ गई है कि वे बिना मोबाइल के रह ही नहीं सकता व्यक्ति के जीवन में शान्ति का बड़ा महत्व है परन्तु मोबाइल फोन ने सब चौपट कर दिया, सड़क हादसों के कारण आजकल 90 प्रतिशत केस वाहन चलाते वक्त फोन का इस्तेमाल होना बताया जाता है।

मोबाइल का असर व्यक्तियों के स्वास्थ्य पर भी पड़ रहा है जिसके कारण बच्चों में रक्त कैंसर, नींद न आना, प्रतिरक्षा प्रणाली की क्षमता में कमी, मस्तिष्क ट्यूमर, बांझपन और गर्भपात जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं—

पब्जी, तथा लूडो जैसे गेम ऑनलाइन हो रहे हैं जिससे व्यक्ति की नींद और समय की बरबादी हो रही है। इंटरनेट पर आजकल अश्लीलता का प्रचलन शीर्ष पर हो रहा है जिसका सबसे अधिक नकारात्मक प्रभाव युवा पीढ़ी पर पड़ रहा है।

यदि आज के समय में महाभारत के युधिष्ठिर और यक्ष का संवाद होता जिसमें यक्ष युधिष्ठिर से पूछते हैं कि जीवनभर मनुष्य का साथ कौन निभाता है, युधिष्ठिर यही उत्तर देते—मोबाइल। मोबाइल ही हमेशा मनुष्य के पास रहकर उसका साथ निभाता है।

मोबाइल फोन का प्रयोग हमें समझ बूझ और संयम से करके इसका सकारात्मक लाभ उठाना चाहिये इसका गुलाम नही बनना चाहिए।

कबीर हमारा कोई नहीं हम काहू के नाहिन।
पारै पहंचे नाव ज्यों मिलिके बिछुरी जाहिन।।

अर्थ:— इस जगत में न कोई हमारा अपना है और ना ही हम किसी के। जैसे नाव के नदी पार पहुंचने पर उसमें मिलकर बैठे हुए सब यात्री बिछुड़ जाते हैं वैसे ही हम सब मिलकर बिछुड़ने वाले हैं। सब सांसारिक सम्बंध यही छूट जाने वाले हैं।

मन मैला तन ऊजला बगुला कपटी अंग।
तासो तो कौआ भला तन मन एक ही रंग।।

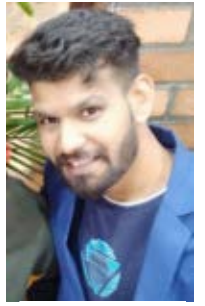
अर्थ:— बगुले का शरीर तो उज्ज्वल पर मन काला—कपट से भरा है। उससे तो कौआ भला है जिसका तन मन एक जैसा है और वह किसी को छलता भी नहीं है।

जीवन के अनमोल विचार



गोविंद
एम०टी०एस०

- हकीकत जिन्दगी की, ठीक से जान जाओगे, खुशी में रो पड़ोगे और गमों में मुस्कराओगे।
- खुद से बहस करोगे तो सारे सवालों के जवाब मिल जाएंगे। अगर दूसरों से करोगे तो, और नये सवाल खड़े हो जाएंगे।
- परिस्थितियां, जब विपरीत होती हैं तब व्यक्ति का, प्रभाव और पैसा नहीं स्वभाव और सम्बन्ध, काम आते हैं।
- गुस्सा अकेला आता है मगर हमसे सारी अच्छाई ले जाता है। सब्र भी अकेला आता है, मगर हमें सारी अच्छाई दे जाता है।
- रात भर गहरी नींद आना इतना आसान नहीं, उसके लिए दिन भर ईमानदारी से जीना पड़ता है।
- जो बाहर की सुनता है, वो बिखर जाता है, जो भीतर की सुनता है, वो संवर जाता है।
- जिंदगी निकल जाती है ढूँढने में कि, ढूँढना क्या है? अंत में तलाश सिमट जाती है इस सुकून में कि जो मिला, वो भी कहां साथ लेकर जाना है।
- कुछ बोलने और तोड़ने में केवल एक पल लगता है जबकि बनाने और मनाने में पूरा जीवन लग जाता है।
- प्रेम सदा माफी, मांगना पंसद करता है और, अंहकार सदा, माफी सुनना पंसद करता है।
- मुसीबत में अगर, मदद मांगो तो सोचकर मांगना, क्योंकि मुसीबत, थोड़ी देर की होती है, और एहसान जिंदगी भर का
- जब तक हम लोगों के लिए, कुछ करते हैं, वो कुछ नहीं कहते है, पर ऐसा न हो तो कहेंगे कि, आप बदल गए हैं।
- आपसे लोगों की अपेक्षाओं का कोई अंत नहीं है, जहां आप चूके वहीं पर लोग बुराई निकाल लेते हैं और पिछली सारी अच्छाइयों को भूल जाते हैं इसलिए अपने कर्म करते चलो, लोग आपसे कभी संतुष्ट नहीं हो पाएंगे।
- इंसानों की इस दुनिया में, बस यही तो एक रोना है, जज्बात अपने हों तो ही जज्बात है, दूजों के हो तो खिलौना हैं।
- जमाने की नजर में, थोड़ा अकड़ कर चलना सीख लो मोम जैसा दिल लेकर फिरोगे, तो लोग जलाते ही रहेंगे।
- इंसान इंसान को धोखा नहीं देता, बल्कि वो उम्मीदें धोखा दे जाती है जो वो दूसरों से रखता है।



सावन कुमार
डिजीटाईजर



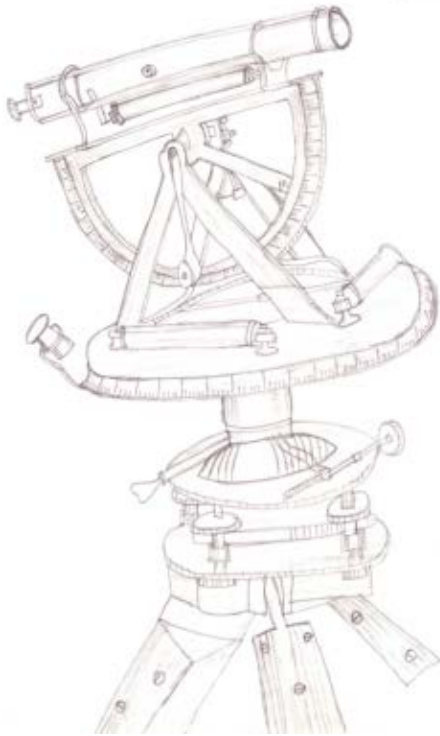
निर्मल कुमार सेनी
पुत्र अरुण कुमार सेनी

Change In Technology

Past Vs. Present



मुकेश कुमार
डिजीटाईजर



देखी-देखी कही ना ही जाओ लैट वैक्सीन हों। कोरोना का ठैल मीट।



गौरव
डिजीटाईजर

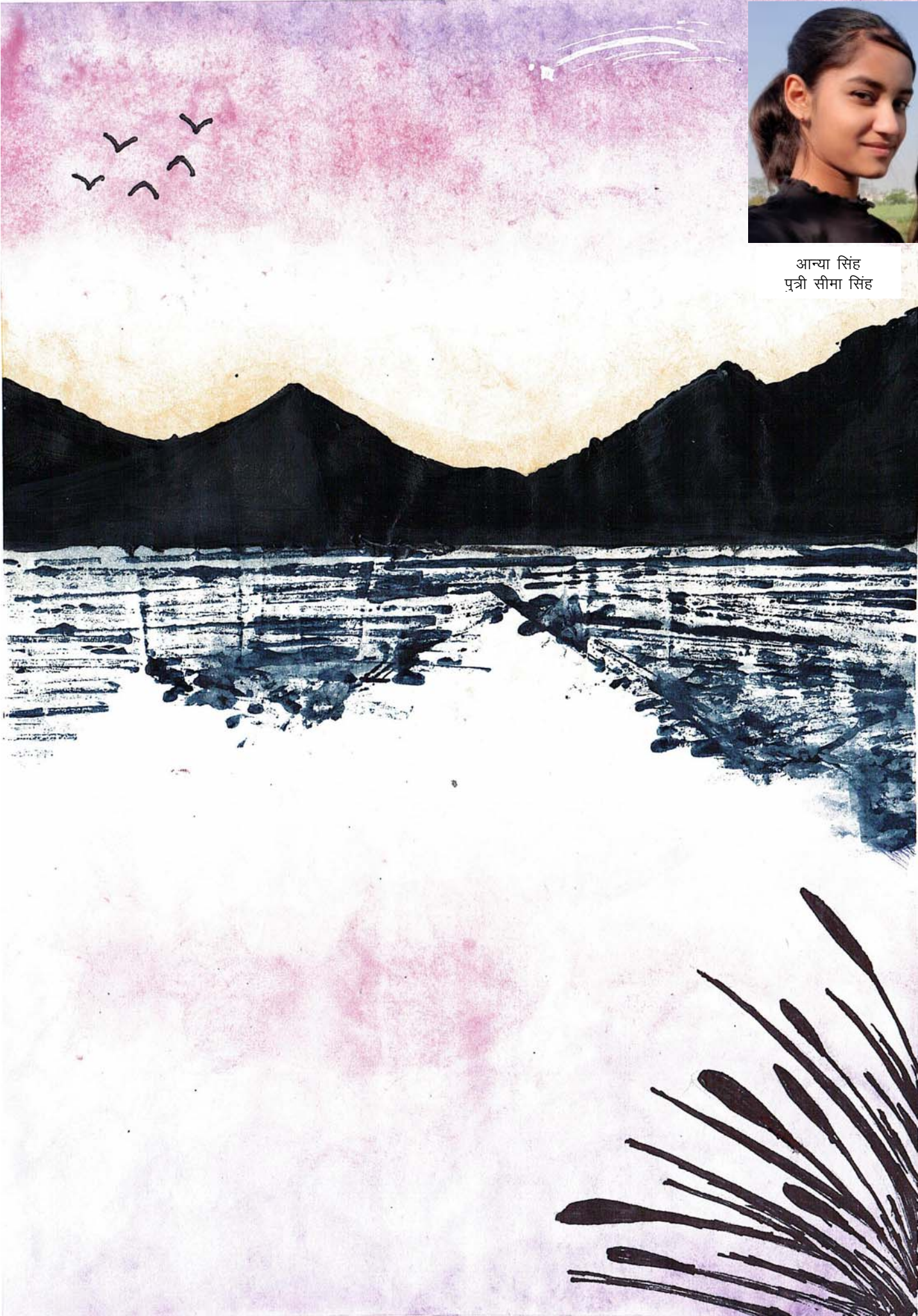


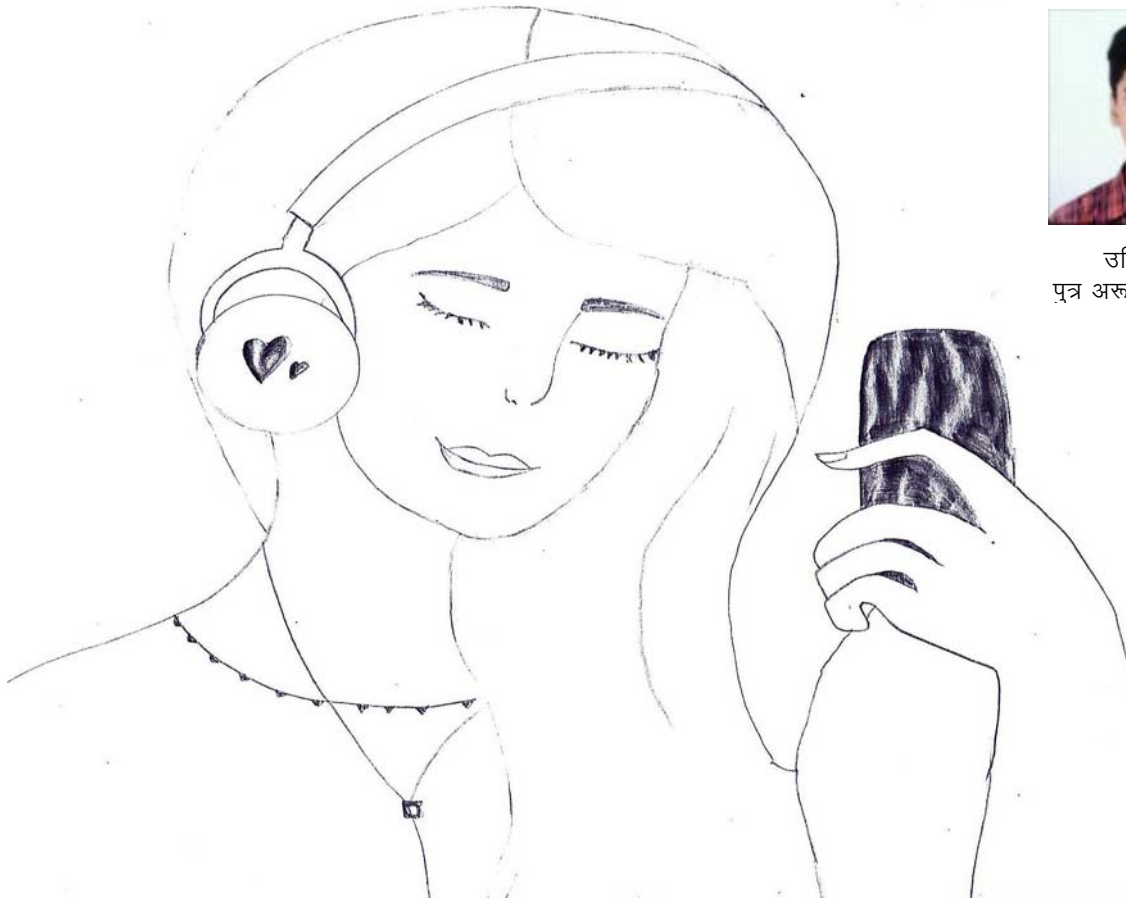
दो गज की दूरी मास्क हों। जरूरी!!

NAME = GAURAV
DIGITISE

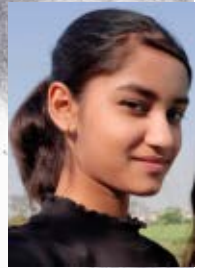


आन्या सिंह
पुत्री सीमा सिंह





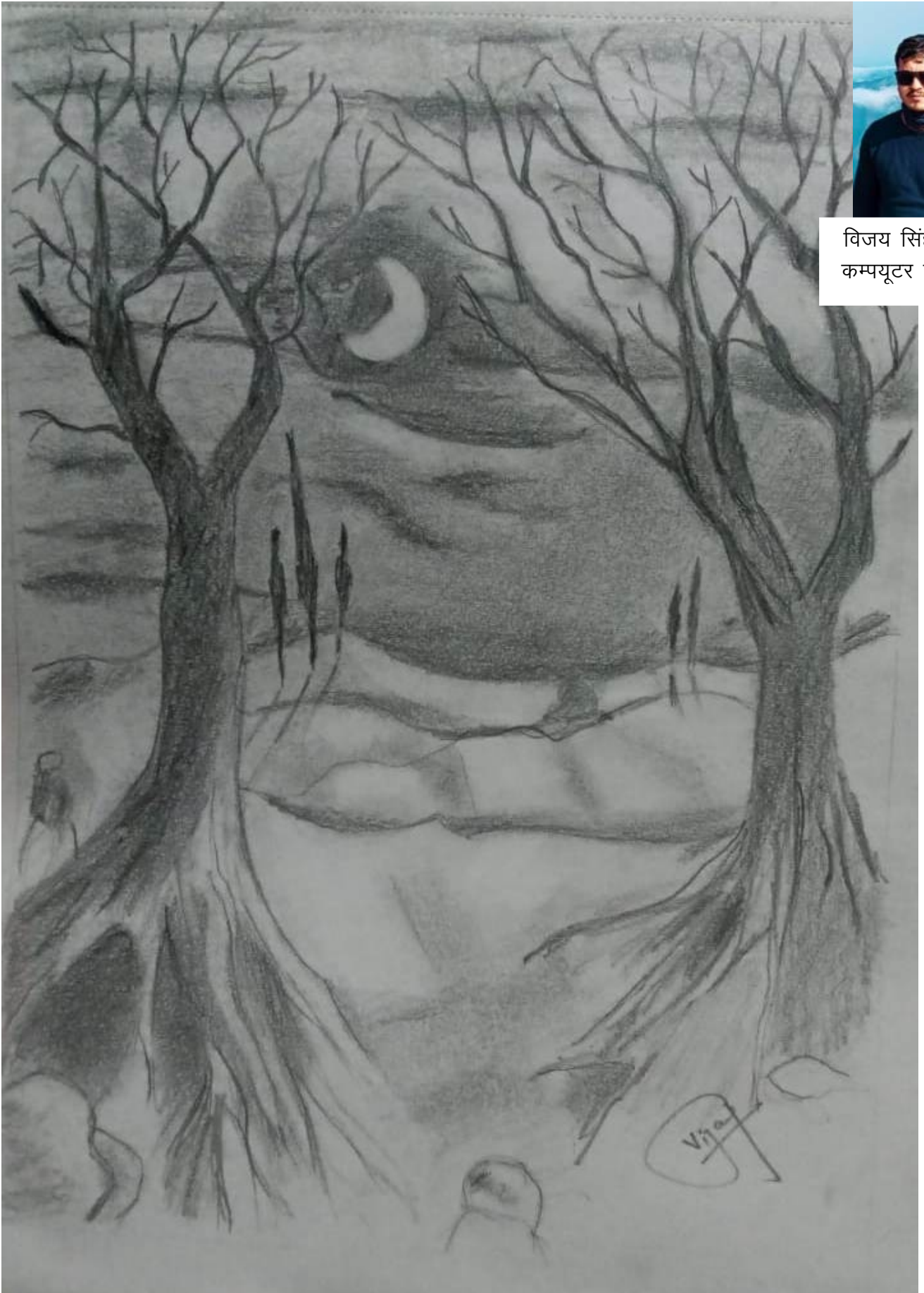
उदित सेनी
पुत्र अरुण कुमार सेनी



आन्या सिंह
पुत्री सीमा सिंह



विजय सिंह भंडारी
कम्प्यूटर टाईपिस्ट



राष्ट्रीय भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र परिसर में गणतंत्र दिवस समारोह



राष्ट्रीय भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र परिसर में स्वतंत्रता दिवस समारोह



राष्ट्रीय भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र परिसर में स्वतंत्रता दिवस समारोह



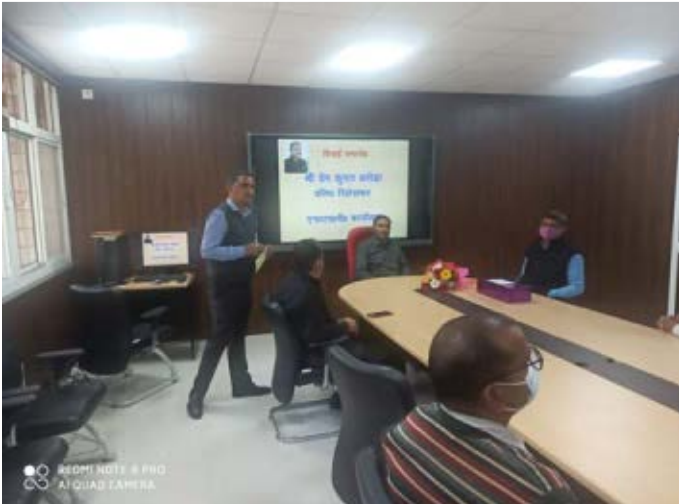
राष्ट्रीय भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र में वर्ष 2020-2021 में आयोजित विदाई समारोह



विदाई समारोह (माह फरवरी) श्री प्रेम कुमार अरोड़ा, वरिष्ठ रिप्रोग्राफर



विदाई समारोह (माह फरवरी) श्री प्रेम कुमार अरोड़ा, वरिष्ठ रिप्रोग्राफर



विदाई समारोह (माह फरवरी) श्री प्रेम कुमार अरोड़ा, वरिष्ठ रिप्रोग्राफर



विदाई समारोह (माह अगस्त) श्री राकेश कुमार तनेजा, सर्वेक्षण सहायक



विदाई समारोह (माह अगस्त) श्री राकेश कुमार तनेजा, सर्वेक्षण सहायक



विदाई समारोह (माह अगस्त) श्री राकेश कुमार तनेजा, सर्वेक्षण सहायक

विंटर लाइन मसूरी



विंटर लाइन के बारे में मसूरी दून वैली से 6000 फिट ऊपर है। दून का तापमान जल्दी-जल्दी बदलता रहता है शाम के समय नमी, धूल, कोहरा सब एक साथ एक लाइन में आकाश में नजर आते हैं और साथ में ढलता सूरज विंटर लाइन को जन्म देता है ढलते हुए सूरज के सामने यह दृश्य बनता है। दुनिया में विंटर लाइन का नजारा सिर्फ दो जगह से ही देखा जा सकता है। एक स्विट्जरलैंड और दूसरा मसूरी में। अक्टूबर महीने के दूसरे सप्ताह से लेकर नवंबर आखिर तक मसूरी मालरोड तथा धानोल्टी के मार्ग से भी यह नजारा दिखता है। सूर्यदेव के छिपने के बाद आसमान में ऋषिकेश से लेकर पांवटा साहिब तक एक पीली लाइन बन जाती है। यही विंटर लाइन है।

मौसम विज्ञानियों का मानना है कि ठंड के मौसम में यानी विंटर सीजन में वायुमंडल में नमी आ जाती है और मैदानी क्षेत्रों की धूल एक सीमित ऊँचाई के बाद रुक जाती है। इससे एक समानांतर रेखा विंटर लाइन के तौर पर उभर जाती है।



कलसी अथवा 'कालसी' उत्तराखण्ड के ज़िला देहरादून की तहसील चकरौता में स्थित है। यह स्थान ऐतिहासिक दृष्टिकोण से बहुत ही महत्वपूर्ण है। यहाँ पर भारतीय इतिहास में प्रसिद्ध मौर्य सम्राट **अशोक** के चतुर्दश शिलालेख एक चट्टान पर अंकित हैं। सम्भवतः यह स्थान **अशोक** के साम्राज्य की उत्तरी सीमा पर स्थित था सम्राट अशोक के प्रशासन के बारे में जानकारी इस शिला का अपना ही महत्व है। इस शिला पर लिखे लेखों की भाषा प्राकृत और लिपी ब्राह्मी है। अनूठी प्रकृति के बीच स्थित यह शिला लेख सम्राट अशोक के आंतरिक प्रशासन के विषय में बताती है। इसके साथ ही यह शिला सम्राट के दृष्टिकोण, प्रजा के साथ नैतिक, आध्यात्मिक एवं पिता जैसे संबंधों, अहिंसा के लिए उनकी प्रतिबद्धता और युद्ध में सम्राट के त्याग के बारे में बताती है। इन कार्यों के लिए अशोक ने निषेधात्मक और प्रयोगात्मक नीतियां बनाई थी, यह भी इसी लेख से पता चलता है। अशोक की इन निषेधात्मक नीतियों में सांसारिक मनोविनोद, पशुबलि, अनावश्यक कार्यों में लिप्त होना, खुद का बखान करना तथा प्रयोगात्मक नीतियों में आत्म संयम, मन की शुद्धता, माता पिता की सेवा, ब्राह्मणों और सन्यासियों की सेवा व दान तथा धार्मिक विषयों पर आपसी सामंजस्य का उद्बोधन है। धर्म घोष द्वारा विजय का उल्लेख है इस शिलालेख पर इन नीतियों को लागू करने के लिए सम्राट ने पशुओं को अनावश्यक मारने पर प्रतिबंध, जानवरों और इंसानों के लिए स्वास्थ्य सुविधा, युद्ध घोष के स्थान पर धर्म घोष द्वारा विजय का उल्लेख किया गया है।